

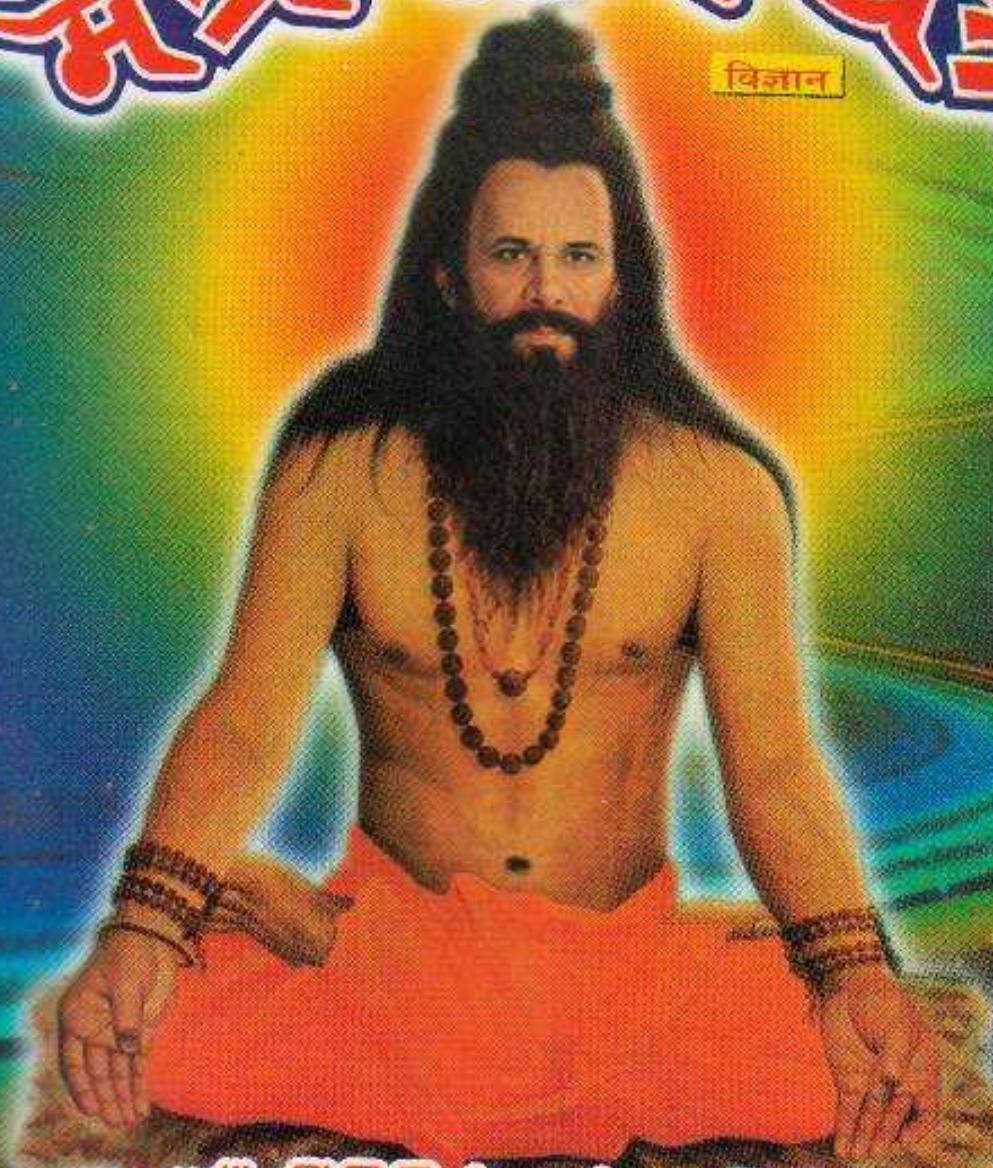
सिद्धाश्रम-संब्यास सिद्धि विशेषांक

नवम्बर - 2002

मूल्य : 18/-

श्री-तंत्र-संयोग

विज्ञान



॥३३ श्री नितिविलेखवरवंदाय श्री ॐ ॥

सिद्धाश्रम सिद्धि : पूर्णत्व प्राप्ति
सद्गुरु - शिष्य संबंध

अञ्जपूर्णा सिद्धि रत्नोत्र
भाज्यसिद्धि संभव



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

आपो भद्रोः कृतवो यन्तु विश्वतः
नानक जीवन की तरतीभुक्ती उपति, प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से सम्बन्धित नानक प्रेषण।

श्री गुरु गुरुकार्ण

॥ ३० परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्या नमः ॥



साधना

संन्यास साधना	29
काल भैरव साधना	33
नववाह साधना	39
धनदा चतिप्रिया साधना	46
भैस्त्रणा तंत्र साधना	72



विशेष

शाकत तत्त्वाभियेक दीक्षा 68

5

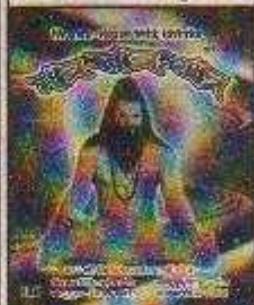
44

स्तम्भ

नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
बराहामहीर	63
साधक साक्षी है	64
जीवन सरिता	66
इस मास विल्ली में	80
एक वृष्टि में	86



दर्श 22 अंक 11
नवमंग्रह 2002 पृष्ठ 68



सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्डलैंड, पीलापुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, टेली फैक्स: 011-7196700
भै-तंत्र-यत्न विज्ञान, श्री श्रीमाली भार्गव ईंटोट कौलोनी, जैसपुर-342001 (राज.) फोन: 0291-432328, टेलीफैक्स: 0291-432073
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org



विवेचन

गुरु शिष्य संबंध 23

संन्यास कर्म सिक्खान्त 55

प्रकाशक एवं स्वामित्व
श्री कैलाश बन्द श्रीमाली
द्वारा
नीर झार्ट ग्रिट्स
C/178, नारायणा इंडिस्ट्रियल
परिया केस 5, नई दिल्ली
से मुद्रित तथा
मन-तन्त्र-यत्न विज्ञान
हाईकोर्ट कौलोनी, जैसपुर से
प्रकाशित।

स्तोत्र

अन्नपूर्णा कवच

76



सम्पर्क

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 195/-

नियम

प्रतिक्रिया में प्रकाशित रथी रथनाओं पर अधिकार प्राप्ति करने के लिए सुखराज यंत्र विज्ञान परिकल्पना में प्रकाशित लेखों से लेखकों का सम्मत होना आवश्यक नहीं है। तबके कुरार्क करने काने परिक्रिया में प्रकाशित पुरी सम्पूर्ण हो गया समझौता। किसी नाम, नाम या फटना का विस्तीर्ण से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई इटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझौता। परिकल्पना के लेखक पुस्तक समूह-भाग लेने हैं तब उनके पते के कारे में कुछ भी अन्य जानकारी बोना सम्भव नहीं होगा। परिकल्पना में प्रकाशित विस्तीर्ण भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तरक्की नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्बन्धकालीन प्रतिक्रिया होने। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही साम्य होगा। परिकल्पना में प्रकाशित किसी भी समझौते को समझकर पा याटक कही से भी छाप कर सकते हैं। परिकल्पना का अपने विषयसामग्री पर ही ऐसी सामग्री परिकल्पना का योग्यता। सामग्री के मूल्य पर तरफ या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। परिकल्पना का वाचिक कुरार्क वर्तमान में ७८५/- है, पर यदि किसी विषय पर अपरिवर्त्य करने के लिए परिकल्पना को विस्तारित या बढ़ा करना पड़े, तो वित्तने वी अक अपक्रिया प्राप्ति हो जाएगी। उसी में वाचिक सम्बन्धता अवश्य नहीं हो, तीन वर्ष या एवं अधिक समरपता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। परिकल्पना में प्रकाशित किसी भी सामग्री में समझौता-असफलता, वानि-लाव की विस्तोकारी सामग्री की स्वयं ही होगी तथा सामग्री कोई भी दूसी उपायसना, जप या माल प्रयोग करने जैसी विकारी, सामाजिक एवं कलानुसीरी विस्तोकारी विपरीत हो। परिकल्पना में प्रकाशित लेखों के लेखक योग्यों या सम्बन्धित लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का अवधारण परिकल्पना के विस्तोकारीयों की तरफ रोकेंगा। पाटकों की नाम पर इस अक में परिकल्पना के प्रियजने लेखों का भी न्यून का लिया सम्बन्धित किया गया है, जिससे कि नवीन पाटक लाभ उठा सके। सामग्री या लेखक अपने प्रामाणिक अनुमयों के अधार पर जो बता, तब या बन (भले ही वे शास्त्रीय व्याक्ति के इतर लो) बताते हैं वे ही बताते हैं तब इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवश्यक युक्त या अन्दर जो भी भेदी प्रकाशित होते हैं इस सम्बन्ध में सारी विस्तोकारी भेदी बेजाने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि सामग्री उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सके, यह तो थीमी और सतत परिवर्त्य है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करे। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या परिकल्पना परिकार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की विस्तोकारी बहन नहीं करेगे।

प्रार्थना

ध्यायेत्सदा सद्गुरुं श्रुतिशास्त्रपारं
वैदान्तवैधमनवं परमार्थं रूपम् ।
संसार सागर समुदारणाय पोतं,
दैतन्यमप्रतिरथं निखिलं नमामि ॥

संसार सागर से पार उत्तरने के लिए नौका सहश, वेद तथा शास्त्रों से परे, उपनिषदों के लक्ष्य स्वरूप, परम पावन, लोकहितार्थं मनव शरीर धारण किये हुए चेतन्य तथा परम अनेय इदय में उनका ध्यान करता हुआ, गुरुदेव निरिखिलेश्वरानन्द जी के श्री चरणों में उदात्त तम विनष्ट भावों से मैं नमन करता हूँ।

★ मनोविकारों से बचें★

एक सन्त थे। उनके पास प्रतिदिन एक व्यक्ति आया करता और ईश्वर के दर्शन करने के उपाय पूछता। सन्त हमेशा यह कहकर ठाल देते थे कि समय आने वो बताऊँ। एक बार चौर के बहुत आग्रह करने पर वे बोले-“सामने पहाड़ की जो ऊँची चोटी है वहाँ तक तुम सिर पर छ पत्थर लेकर चढ़ो। तब मैं तुम्हें ईश्वर प्राप्ति का मर्ज बताऊँगा।”

व्यक्ति मान गया। सन्त ने उसे अपने पीछे चलने का संकेत किया। सिर पर पत्थर लेकर चढ़ता व्यक्ति थक चुका था। उसने कहा-“भगवन! अब नहीं चला जाता मैं यक चुका हूँ।” सन्त ने कहा ‘ठोक है। एक पत्थर फेंक दो।’ यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक चौर के सिर से छहों पत्थर न फिकवा दिए गए। तब जाकर चौर अपर चोटी तक पहुँचने में सफल हो पाया।

चोटी पर पहुँचकर सन्त ने उसे समझाया “माझ!” जिस प्रकार तुम सिर पर भारी पत्थर लेकर चढ़ने में असफल रहे उसी प्रकार जीवन में मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्स्यर जैसे मनोविकारों का बोझ ढोकर ईश्वर दर्शन नहीं कर पाता। ईश्वर दर्शन हेतु इन सभी मनोविकारों का बोझ उत्तरना आनिवार्य है।” इसी प्रकार से कार्य करने से ईश्वर प्राप्ति होती है।



मैं बोता हूँ कैराय घेतना



वैराज्य और सम्बास कोई बाहर की बस्तु नहीं है यह तो भीतर से उत्पन्न करने की एक महान किया है जिसे गुरु समझाकर शिष्य को उच्चंगति प्रदान करते हैं। सम्बास के सबंध में सद्गुरुदेव के वाणी में ये सरस सारगमित अमृत बचन-

जान च देह भावतं शियं वे-

अथोदप्तवा देह नर सरणा-

मानसे नाहं भवतां श्रियं वे-

वह भूतहरि का अनोखा है, भूतहरि के इलोक युक्त इसनिये प्रथम की उन्होंने जीवन के तीनों अंगों को जो गर कर जाया है, वे तीन अंग हैं-एक शब्द सम्मान, राज्य वैभव, धन, वश, प्रतिष्ठा और जब अब जयकारा उन सब का भूतहरि ने प्राप्त किया। भूतहरि एक राजा या और वैद्यतीर्थी राजा या पर भूमेल पर पुरे आपनीं पर उसका शासन था। और उसने जितना कुण्डलत के साथ, जितनी ब्रह्मता के साथ राज्य किया, जीति के साथ, ज्ञान और धर्म के साथ, वैसा आज तक किसी ने शायद नहीं किया, उससे पहले विक्रमादित्य ने तो किया था मगर उसके बाद कीर्ति शासक ऐसा शासन नहीं कर पाया। उसके शासन में निरंतर उत्तर होती रही, उसने उस राजा के जीवन का भी देखा। उसने उन्हें कोटि का वैश्व देवता श्रुगार देखा और श्रुगार में भी वह आकंठ ढूँढ़ा रहा।

बब वह शिकार पर जाता तो किसी भी सुंदर लड़की का देखना तो लालकर अपने रानी निवास में दाल देता। सजा था श्वसित ऐसा करम्पकना था और आपको मालूम हाना चाहिए कि भूतहरि के तीन हजार राजियां थीं, तीन हजार से भी अधिक राजियां थीं, और प्रत्यक्ष के लिए अलग-अलग महल बनवाएँ। भूतहरि ने और उन्हें बारी, सूविधाएँ बुटाई। फिर ऐसा था हुआ कि एक उपकी पत्नी थी डेमवली उसके साथ पाच महीने तक महल में ही रही, बाहर निकला ही नहीं। न राज्य में गया, न दरबार में गया, न मंदी परेशन को बुनाया न न्याय किया, न लोगों की लक्षियां लुटीं। महल से बाहर ही नहीं निकला।

वैसे जयपुर का राजा जब यह आगामी नई रानी के प्यार में इब गया और महल से बाहर निकला ही नहीं। बाहर से मीठे छाप खदानों द्वारा गया है, अन्याचार हो रहे हैं, लोगों की लक्षियां आई हैं, जप आहर आकर न्याय करें, अधिकर न्याय कीते करो? तो उसके उन्हें असा एक दृष्ट नहीं होना था जो उसके नहीं आउता। और यिहांसे उचेनो में हिम्मत थी कि वह जाकर कुछ बह सके। उसने जाकर उसको पर उसे इलोक गढ़ा-

नहीं पाया-

नहीं विकास-

पर्वी काल-

पर्वी कलि ही सों कंधयों आये कौन द्वापर-

न भरगम है, न मधु न न त्रिक्षय ये यहीं पर कहा है, मुन्य ग्रन्थ विलोक्त है। इसके तू इस कलि से बड़ा हुआ है मगर आगे

इत्यनुवाक्या होमा? तुम हस बान को सोचा।

जौर जिन नये सिंह ने मनिधी की पी बान नहीं सुनी उस विद्यारी की बात की
मुनक्कत के एक लग में आहर आवा और मध्ये राज्य कार्य को संभाला।

मृप्तिहीन ने उससे भी बद्य मना उबल निकला कि छ याहैने तक उपरे घटल थे
हले निकला न सप्ता दुलाद, चम एक महल में दूसरे महल में चना आया दृप्त
दे नीसते, नामर से यहने थस तीन महलों में धमता रहा और उस सप्तर में जो
विजय होते थे तलवार नेकर खानियों के महलों का घण देने रहते थे याकी मध्य
का बहु जाना निषेध था क्योंकि राजाओं को लग या कि वहिकाई पुरुष पहला
आगा ता शायद कोई रासी थियह जाए, उल्लिख साध मान गाए कुछ पका नहीं
इत्यलिए पक दर रहता था। निरथों में पहरा देने की धमता नहीं थी उसलिए
हिंडु ही पहरा देते थे।

तो मृप्तिहीन राज्य भोज को आगे पूर्णता के साथ नियंत्रित करने के बाद
उसे एक दिन बोह लगा और बोट थी भव्यकर लगा।

सिवशाश्वत चौराश्व पुरुष माय्य

देवो न जातापि कलो मनुष्य।

अब तो पुरुष जायेव भी उपसे ल्यादा पिरे हुए डोने लगे औं गगर यह अपोल
निवित ही किली पुरुष ने लिखा है उल्लिख विद्यों के बारे में ऐसा लिख
दिया। अगर कोई स्त्री लिखती नी बढ़ चढ़ती-

पुरुषव चरित्रं

मगर युक्ति पुरुषों ने वे सब ग्रन्थ लिख दिए हैं इत्यलिए लिखियों के विस्तर
ऐसी बात कही गई कि-

दोल पशु शुक्र पव नारी

ये सब ताङ्गन के अधिकारी।

बण! अब अगर नारी को तोकने के अधिकारी हैं तो ऐसे पुरुषों को बेने
भासने का ल्यो नहीं अधिकार है? तुनरीवास को रत्नावली ने इतना पुरुष ने किया
था, उन्होंने महलन छराब कर दी थी कि गुरुभ्ये में या वह और वह गुरुभ्या जाकर
निकलना रातचारित भासन में। और उन्होंने लिखा दिया कि ढोल को पाटेंगे तो अधिक
भासन, आण्णी और पत्नी को पाटें तो बढ़ कंठेल में रहेगी। तुनरी ऊस की यह प्रतीकिया
ही।

कशीग्रास से कहा कि-

नारी विष की बेलरी

गुरु अमृत की खान

यह नारी विष की बेल है, जहर की पुहिया है, कबोरवास ने इसी लिखा कार इत्यलिए लिखा अव्योक्त उसकी जार बग्ध थी
और वार्षे की बारी संतार की सबसे लडाकू स्विता थी। उसे उपी लडाकू पेवा हुई ही नहीं जान तक। उन्होंने इसी नहीं
यहि कबीर पासी बैठ रहा दक कहती कहती गानी पाकर धमता लडाई करेगा, कहती गानी और पील।

कशीर बार रोटी खाए, तो बढ़ कहती ही खाले, तकन न ले, गिराव ज्ञान लडाई कर नक और चाही खाए, तो कहती-भग्ध
पर, खाएगा तर न मुझे।

कर्वाइदाव तो उड़ी थी येर। इमलिए ल-ल-ल-एक पर्नि-किया ल्याल की यह मे-

ध अपोलो लो बढ़ टोकर नहीं तो उपन में पर्नि-किया व्युत की ओर उगन बैठ ये तो नहीं। वह तो या मनो की चरती

दृढ़ा न करता था, जिसके बाद रु, मरीन रहा, राजकार्य भूल गया, उस स्वीकृति ने उस दृढ़ा का प्रभाव धोखा दिया, इसना विश्वासघात किया। जिसको कोई करफ़ा नहीं है। एक लोगों द्वारा कहानी है नवर उसका सार इह है कि उसमें गुरु के पास जाकर उसे किसे मै बेख्या जाहाज़ा हूँ।

गुरु ने कहा, तुम राजा हो, मै तुम्हारी प्रिया हूँ, तुम्हारे आभ्यन्तर में सभा आश्रम है और तुम वैराग्य के रहे हो ना राजा काम कीन चलायाज़ा?

बुद्धिमत्ता ने कहा—मेरे मरने के बाबू कीन चलायाज़ा? शीरजों मध्यन के बाहू उत्तराध्यान ऊपर से जीवित ही बृक्ष लेना चाहता है कि केवल चलगा। दुब रहा है, एक चल रहा है, नड़ी चल रहा है, अनिर्वाण द्वा रहा है, नहीं है रक्षा है, मुझे इसको जीवा नहीं है, मरीं अपनी चित्तों हैं। क्योंकि मैं बटका हुआ इन्द्रियों द्वा रहा हूँ। मृजा पत्ता नहीं देता रहा कि मैं किस घटाई पर चल रहा हूँ मैं गोल्ड्यस्ट के गणा हूँ मैं बन्हों और लड़ी और तुम और धन तैमन न्यमान दरिखास के, अब ऐसा उत्तर गया हूँ कि जिसको कोई सीमा नहीं है।

ज्यों ज्यों सुरक्षीय अनंतों बहत

त्वां त्वां उत्तराध्यान जात

ज्यों ज्यों मैं दूनजा कर निकलना चाहता हूँ कि चलो ये यह अपर्याप्त निकल जैह, अब दो रह गई तब तक छँ सदस्याएं शीर आ जाती हैं। और ज्यों ज्यों सुलझ कर निकलना चाहता हूँ त्वों त्वों त्वों उत्तराध्यान ही जाता हूँ। ये तो मैं उत्तराध्यान ही रहूँ। ऐसा हो कोई क्षण जीवन में आएगा ही नहीं कि मैं गुलझ कर वैराग्य अंक्योंकि वैराग्य लेने के लिए कोई तारीख और तिथि निपारित नहीं होनी।

शीर वैराग्य का तात्पर्य यह नहीं कि गन्धारी कपड़े पहने।

वैराग्य का तात्पर्य है कि इस शरण द्वेष से दूर हो जाए। जो राग छूप ने लूँ है, जोगे वह कैरपी है। वैराग्य का अर्थ है न किसी से नेता न लिया गए बन कोई कहे तो ठोक जवाब देना नहीं तो धूप रह जाना जो कुत दीकोते हैं जीका धीरिपा। कुतों का काम भीका है वे ना दीकेजे। मड़ों तो मधर गति से जपते पड़ पर अचरस्तर होते रहता है। मुख अपने लक्ष्य का अपना रखना है क्योंकि सब सेर शाय घलेने नहीं। चल तो नहीं रक्ते रखने जगत् तो नहीं है और अपर दृग् एवं एक एक एक स्वरांश स्वरांश है तो बह दृग्मरा गोह है और इब हुए रख्यों और उस प्रवचन के बाद थे क्योंकि इससे पहले पर्याप्त हगार गुरु यड़ी बात कह चुके हैं। मैं पहला व्यक्ति नहीं हूँ। दूसरों पहले पर्याप्त हगार गुरु अपने हित्यों को यह बात कह चुके हैं कि इस संसार में कोई तुम्हारा नहीं है, तुम अकाल गोह ही जस्त हो, और तुम्हें राम राठेन हो कर के अपने खुद के रास्ते का बन कर के उस पर गोतीजील झेना चाहिए।

परंपरा उसके बाबू भो उनके चिह्न पर कोई जधाव नहीं पड़ा तो मैं समझ रखा हूँ कि मेरे बहने का धौं अधिक मेरे जीवने पर था। मैंने उन्होंने यह नहीं पढ़े। किंतु भी मेरा धूम, मेरा बहनाय बहु है कि मैं अपना बात का पूछता हूँ लग्य कहना रहा।

बुद्धिमत्ता ने कहा—उत्तराध्यान शिल्प, निर्मित आनंद के लूपार, उत्तराध्यान वालका। बहला-



नैम द्वी प्रत्योक्त लिखे। वह पां एक अलग बड़ानों है कि उन्होंने तीन सौ श्लोक लिये।
लिखे और इन श्लोकों में क्या विशेषता है।

भगवान् ने एक बहुत अच्छा श्लोक लिखा जल वैष्णव दाता में उपलब्ध
गीति ग्रन्थ की डॉ निराम उपर्युक्त कहा-

वाणीनियं सृजने वया परिवर्त्ते-

रात्रे सदा दुर्बले-

प्राति साहृ जने न्यौ उपजने-

यह एक नीति ग्रन्थ का एक श्लोक है, जो श्लोकों में एक है।

ओर शुभार श्लोक भी लिखा जिसके श्लोक हैं-

अर्क अनन्द गतवा सर्वविशेषताया-

रात्रि नरताम्-

कामा भूती श्रीय तुषणो प्रधु मनुत्ये-

अह पृष्ठविभृते-

संप्रोग कर्त्त्वात् कलाता शिविरध्युन लितां-

तर्जित कर करि तो न्योत्पन्नामिकाच-

तुमित्वप श्राव्य किल सार्वम् भद्र भाग्य-

यह शुभार श्लोक में लिखा है और इसमें अच्छा दृग्मार का कोई
श्लोक नहीं है। ऐसा श्लोक फिर लिखा ही नहीं गया, कानीकरण भी
नहीं लिखा गया। अनन्द उत्तर श्लोक की व्याख्या कर दी जाए तो उसे
सुनकर उत्तर श्लोक व्याख्या से कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाए।
लाइ निर किल जाना पड़े उग्गो। यहि उसकी व्याख्या कर दी जाए तो
उसना यह सेवम में दूबा हुआ श्लोक है, भाग में दूबा हुआ श्लोक हो भेदभाव
श्लोक है। उसी कथि ने उपी गान भूतिरी ने वैराग्य श्लोक भी लिखा।

उपी वैराग्य श्लोक में लिखा कि पुनर्व और स्वी दानों के प्राप्त मौद्र रखना
अपने परिवार के सदस्यों के प्राप्त मौद्र रखना सबसे ज्यादा मूर्खना जीव
जननाता है। हम एक नेतृत्व के मूर्ख हैं परस्परिन् भेद रखते हैं। भूतदैर न कहा मैं यह
अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ, मैंने भागा है, दखा है, अनुभव किया है, मैंने
सभी के स्वर का भी लेखा है, भैविका के स्वर का भी लेखा है और उसी उठी की कुटिला
का भी लेखा है भिसके मति मैं जान दे रहा था प्राप्त दे रहा था। मैंने उत्तर परिवार की भी देखा
है जिसके नियां दिन गान दोड़ा था। और जब मुझे तकलीफ हुई हो एक भी भैव जास मैड़वा नहीं
आया नहीं परं दुख तूर किया नहीं। मुझे सात्यना भी ही नहीं। वे अपने राम रंग में दब रहे, आगव दीन रहे और
पैरल ओं की आवाज सुनते रहे।

और मैं इस चान द्वा वैराग्य कर चुका हूँ, समझ चुका हूँ कि वैराग्य से उठी जोई जान नहीं है बद्देक।

वैराग्य सेवाबद्य।

उपर्युक्त-

संग्रह सेवाबद्य-

विज्ञ विपालापद्य-

वल विष्वापद्य-

आप्ने वादभद्य काले-

कुले चिह्नापद्य-

मौले विष्वापद्य-

खले विष्वापद्य-

कुलापता भद्र-

वैराज्य मेवा भयं।

अब चौजों में शर्य है, मैं किसी लड़कों से बाहर करने तो भय है, मैं कहे थे यदि पिपकर खा लूटी भय है। वैराज्य में कुछ देखे नहीं, परन्तु कुमा है, एक नगार है, और बैचा है।

और कर्मी धोती पहन ली तो मेरा कुछ है ही नहीं। पुली है नो अपनी जगह है, खुद खासगी, धैरणी, मोज से रहेगी मात्र लों, मैं बहुत पंडित हूं गी तो किसी भवा करवो। ने यहो बैठा है, पर्नी वलों बैठो है तो फिरोजदी किनारी लेवा हो रही है। कल्पना करिए।

मैं खुद का उदाहरण है रहा है किसी का भी उदाहरण दे सकता हूं, मगर सच्चा यह है कि हम उस नोट में फसे हैं और उसे रहें। और वैराज्य की काँड़ नारायण नड़ी जाती यह भी सत्य है। यह नड़ी है कि पश्चास साल की उम्र में वैराज्य लेना चाहिए। बल्कि जितनी व्यक्ति लिलंब से वैराज्य लेता है उतना ही वह सामय उरबाद करता है। ज्यों ही ऐस जाता है त्योंहि वैराज्य ले लेता है। अपना काम करता रहता है, घर में भी रहता है। मगर अपने आपमें वह सचेत रहता है कि जीवन का लक्ष्य यह नहीं है। वह यह जानता है कि मेरे मरने के बाद और मेरे जीवन काल में भी कोई सुझे पाव नहीं करता और मैं एक सामान्य जीवन व्यतीत करके रह जाऊंगा।

क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे सामने वाले मकान में कौन रहता है? तुम उसने भालौं से यहां रहते हो तुम्हें मालूम है उसका नाम क्या है, उसके बेटे का नाम क्या, पन्नी का नाम क्या है?

आप नहीं जानते क्योंकि उम व्यक्ति ने जिदगी में कुछ किया ही नहीं, कपड़ की एक दुकान खोली थावनी चौक में और कपड़ा बेचता रहा, एक बेटी, एक बेटा, एक मकान जिसमें आठ कमरे हैं। तीन आधमी उन आठ कमरों में कैम्प मालाएं, बाकी भाव कमरों का क्या होगा। एक इडंग रूम भालग तीन किल्पन अलग, आठ बाखरूम अलग। वह मकान उसके साथ जारगा नहीं।

अब उसका नाम क्यों याद नहीं और भूनेहि का नाम क्यों याद है? इसनिय कि यह राजा युक्त है और यूर्नाइ वैराज्य युक्त, चाव बस इतना है। वह राजा में पूरी तरह दृश्य हुआ है कि आपने बेटे के लिए अपनी पन्नी के लिए कमा रख किमें वह कर्ल, मैकान लेना वृंद, मेरा वश होगा, सम्मान होगा, मेरी प्रतिष्ठा होगी। यह लुट तो बोगा मगर जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाएगा।

राजा मोज एक उच्च कोटि का राजा था, जिसके दरबार में कालोदाम जैसे उच्च कोटि के रहने थे। और राजा मोज बहुत बड़ा कहि था, स्पष्टत आ-

उस समय उस समय संस्कृत ही चलनी थी, जैसे आजकल हिन्दी चलनी थी। उस समय संस्कृत थी। पहली ग
वार्षिक समाजी भी उसे भी संस्कृत ही आदी थी। मात्र ही उस समय की संस्कृत
वार्षिकी विद्यालय में संस्कृत में लिखे गये गान छोड़ते तो हिन्दी में लिख

उक्त विन चावि के भाव का बीच नहीं रहा, नी नहीं आए तो आप
हमरे हृत्तामन बालन था चावन। शत वी वृत्त द्वारा रहा था। धूमने पूर्ण,
उस नींद जा नहीं रही थी, उसके भाव में उल्लहन था कि मेरा जीवन क्या
है, ऐ ज्ञान औ रहा ही मेरे जीवन का अध्यात्मन क्या है, कल्प का दिन क्या है,
जो मेरो इच्छाकृति क्या रही?

कालो वम निविला विमुला च लक्ष्मी
गेर मरने के बाव मी काल मेरे नाप को खा नहीं सके, मैं ऐसा जीवन
बीता चाहता हूँ, मरने के बाय हजार लाल बाल भी काल मेरे नाप के नहीं
खा सके। मुझे तो खा जाए पर्याप्त स्वन बाव, गेरो मूल्यु तो छो पर मेरी मूल्य
नहीं है। इच्छे किए क्या करूँ?

उसने भोग कि मेरे जीवन में क्या नहीं है, धन है धड़ है, मान है, पढ़ है, प्राप्ति है,
ऐश्वर्य है, पञ्चाय है, राज्य है, असरूप धन द्वौलत है, सुंदर शरीर है खब कुछ
है। उसने ये सब बात नीन लाइन में लिखी संस्कृत में-

एवं धृते पुर्व धृते तुलयं

प्रवान वृति चंद्रमुखि तुलयं सरीव

यश कीति वदवां वेभव च पूर्तिम्

जोर दीधि लाइन वय लिखे उसका मन धूम रहा है, गटक रहा है कि श्लोक
नी चार लाइन का होता है। वह यही उल्लङ्घन में था कि मेरे यास एवं कुछ है इतना
तो किसी के पास गेरे राज्य में नहीं है। वह उसने तीन लाइनों में लिखा एक चार
चापि करने आया या उसी समय और वह वही लिखा हुआ था कि राजा नींद ले
ओर मैं जारी करके भागूँ बड़ा सोने की चोरे थीं तो वह उसको लेकर घागना
चाला था। अब चार बचन की जाग बुबह चोर ने सोचा कि अब यह नींद लेना
या स्वान बरेगा। और मैं पकड़ा गया ने मूल्यु डड़। अब चोर के निकलने का भी
कोह राष्ट्र भड़ी क्योंकि सामन राजा थोड़ा भटक रहा था। और वह उन श्लोक को
बाहर बाहर बोल रहा था, तीन लाइन बोल रहा था और अटक रहा था।

चौर थे रहा नहीं गया। गवर्त उसने चारीस बार उन नीन साइनों को लेहथाला
नी चोर से रहा नहीं गया। अगर कोई नाचने वाला होता है तो ज्योति नवने पर याप
कोइ देता है तो उसके पर यिरकने लग जाता है। वह नहीं कोई और नाच रहा होता
है लाइन बैठे बैठे उपकृति पर यिरकने लग जाने हैं।

यहि बहु शब्दा एवं गायन का रसिया लोग या समझने काला होता होता तो गैरि
बल रहा दोगा और उपकृति पर धूम द्वारा तुग हिलने लग जाएगा। तुह बनेगा नहीं
पर मालास पहुँ लाएगा कि गान थाला अच्छा है या भूख है।

वह पार भैं सरकृत जानना या उससे रहा नहीं गया। तो राम
ने वापस नीन लाइने बोली मेरे पास थम, मान, चब, प्रतिष्ठा,
प्रश्नय, पत्नी, पुत्र, वधुत्र, योन्त्र, सीदथ अब कुछ है तो चोरने
रहा नहीं जाऊ और उसने कहा

मध्योन्तरे नश्वनयोवने किंचित चालिन

कि एक दौलत निस दिन नीन आख बढ़ा जायेंगी दूर
दिन कुछ नहीं रहेगा। तुम्हारे पास। यह सब कुछ बकार
चला जाएगा और राजा भाज चीका। उसने ऊँक कि
जिसके पूछा था गया मगर यह आवाज कहाँ से आई नाइन
तो जिन्हें सही ह कि जिस दिन मेरी धून्हु हो जाएगी
उस दिन ये शनिय, य धन, ये दीलन कहाँ जाएगे। कौन
गंधारेगा? क्या उपर्योगिता हे उसकी। फिर उसने के थाद
कुछ नहीं ह उसके पास।

राजा ने ऊँक नुम चौन हो? बाहर निकलो। चोर बोल मैं
चार हूं आए सामाजन करो, तो निकल, नहीं तो आपकी खिड़की
से कूदता हूं।

भाज ने कहा नम चार हो, चोरी करने जाए तो और तुमने गलोक

ओल?

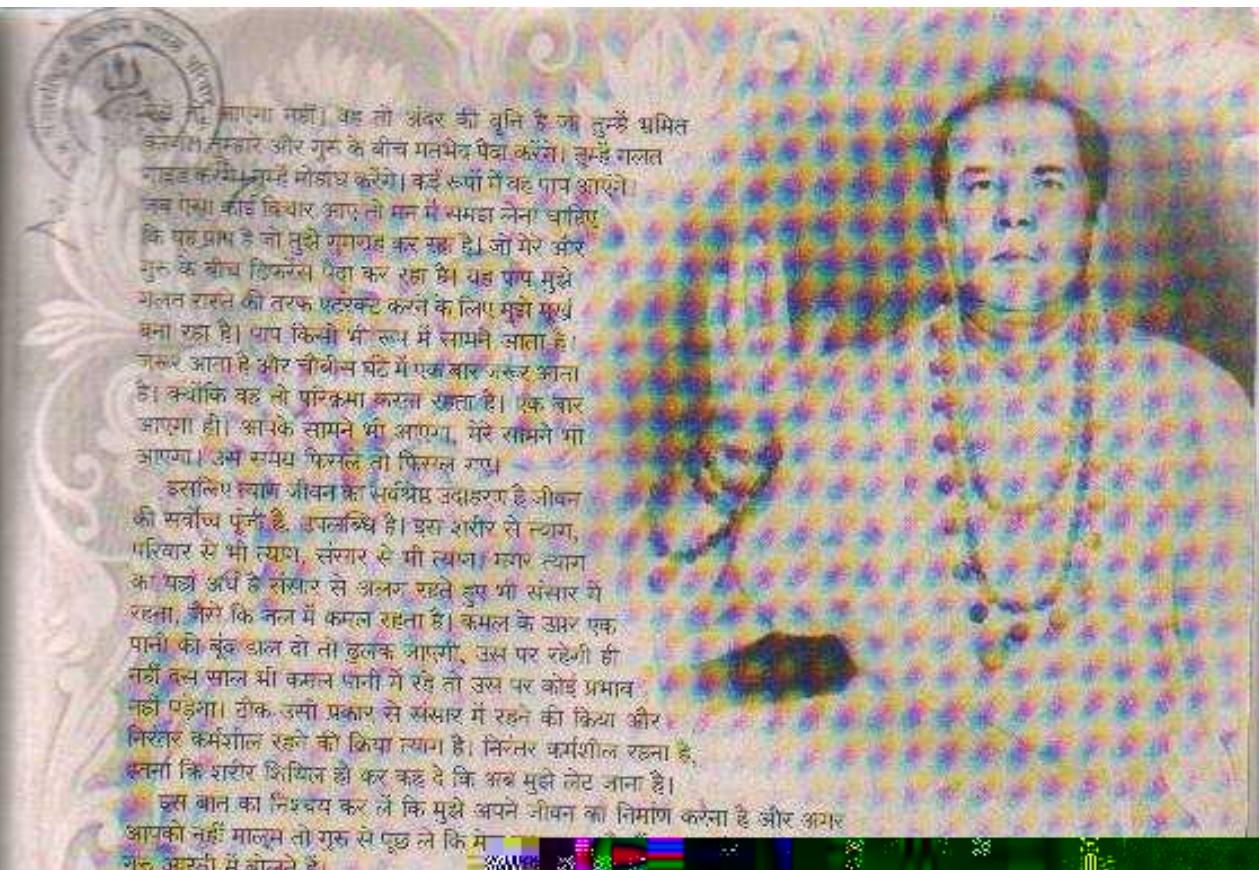
चोर ने कहा मुझसे रहा नहीं गया। आप ये बटे से परेशान हो रहे हो। तो
मैं रहा नहीं पाया और जो बात मेरे गाइद में थी वह कह दूँ। मेरी भजशूरी है कि मैं चोरी करना हूं गलत आज
मिरु आंख खुल गई। आपने ये नीन लाइने बोली उनसे मेरी आप्त खुल गई और मैंने जो एक लाइन बोली उससे आपकी आंख
खुल गई। दूसरी बोल बोल बोल बोल।

जो राजा ने उसको सम्मान दिया। यह उदाहरण में आपके सामने, भोज का और भूर्भुरि का इसलिए दिया कि नीछन का
एक क्षण तहि चीज साल की अवस्था में आ जाए, जोड़ पाच साल की अवस्था में आ जाए, प्रह्लाद को पांच साल की अवस्था
में आ जाए। राम को बोढ़ लात की अवस्था में आ जाए। और पराणप को अंस्थो साल की उम्र में भी नहीं काया। वैष्णव जो
भावना का कोहि किंचित रसगु नहीं है कि इसी समय आएँगो। वैष्णव जो भावना का अर्थ है अपने करत्त्व करते हुए राम रहित
हो जाना। आप सबल बड़ा कर्तव्य बहु दै कि उस रहने पर गतिशील होना। जिस रसने पर काल मेरे नाम की नहीं खा सका।

मैंने उदाहरण दिया कि सामने इनन बड़ा मकान है और हमें यह की बालूम नहीं कि क्या नाम है। मृजे भी नालूम नहीं। एक
बार उस घर के बहु मिलने के बाहर थीं कि मेरी साल बहुत लड़ाई झ़राइ करती है ने क्या कहा। नब भीने उसके नाम पूछा तो
जाग बताया। मैंने पूछा कि चर में कौन है तो उसने कहा मैं ह, यहाँ के और नाम है। मैंने कहा कि कमरे कितने हैं तो बोला गौं।

मैंने साब्द कि तोन बताति और नोकरता। बोला तो, कमरों को किसाथ पर जड़ा दै तो कम से कम काम तो आप लोगों के।
तभी दफ तुध्या है।

जिस दिन जावन का भूत उदाहरण शिष्य अमद्वा जाएगा उस दिन मेरे बड़ी सार्पक हो जाएंगी। उस दिन मैं समझ लूँगा कि
आपद गैं चक शोष सफलता वो योर अवसरा हैं। लम काव्य करे गायर उम उदाहरण को सामने रखने कुप करें कि मूँह उस लैवत
तक पहुँचता है और दूँदिन है नहीं उक्त उपर्युक्तों आप दुन्दिन चाप तुम्हारे बीच में आएंगे और बीच बार आएंगे और तुम्हें सही
प्रसर द्वे छोड़ाण। और पाप कई रूपों में आएंगे। पाप कोई ऐसा कि तो है नहीं जो सामन आकर खड़ा हो जाएगा कि मैं पाप हूं।



जाना नहीं। अब तो अबर को बुनि है जो तुम्हें धमित
करना। तुम्हारे और गुरु के बीच गतिपद पैदा करें। तुम्हें गलत
गद्दह करने में तुम्हें मोशाघ करेंगे। कई स्थानों में वट पाप भाएं।
जब आप कोई छिपार भाव तो मन में समझ लना चाहिए
कि यह प्रथम है जो तुम्हें गतिपद कर सकता है। जो मेरे अंदर
गुरु के बीच उत्कर्ष पैदा कर रहा है। यह पाप मुझे
गलत रास्ते की तरफ छटकट करने के लिए मुझे पहुँच
किया रखा है। याप किसी भी रूप में समझे जाता है।
जल्द आता है और चौथी बार चौथी बार जल्द आता है।
क्योंकि वह जो पांचवां बट्टे में एक बार जल्द आता है। एक बार
आणा ही। आपके सामने भी आणा, मेरे सामने भी
आणा। उस समय फिरल तो फिरल रापु।

इत्यालिपि न्याय जीवन के भवित्वाद उत्तराधिकार है जीवन
की सत्रोंच पूँछ है। इत्यालिपि है। इस इत्यार से न्याय,
निराकार से भी न्याय, संसार से भी न्याय। न्याय न्याय
के बढ़ा अधि के रास्तार से अन्य गड़े हुए या संसार में
रहता, जैसे कि नल में कमल रहता है। कमल के ऊपर एक
पानी को बूँद धान दो तो डुलक जाना, उस पर रहेजी ही
तरीं वस खान भी कमल पानी में रहता उस पर कोई प्रभाव
नहीं पड़ेगा। ठीक, उसी प्रकार से संसार में रहने की किया और
निराकार कर्मशाल रहने की किया न्याय है। निरन्तर कर्मशाल रहना है,
जनना कि शहीद दियिल हो कर कह दे कि अब मुझे लेट जाना है।

जैसे बान का निश्चय कर ले कि मुझे अपने जीवन का नियमण करना है और अपने
आपको नहीं मालूम तो गुरु से पूछ ले कि मेरे अंदर आप
जल्द आउटी में बोलते हैं।

जिनके पास थम नहीं है अबा के पूछे पर रहे हैं? जिनके पास कोई स्पष्ट है बया वें अस्त्रा रात्रियों
एक दिन में रवा रहा है?

चार खेटों से कहीं भी फिल जाएगी, सठक के बिनाए घंटे हों तो भी फिल जाएगी। जामूदूरवन जल
जाए तो वे जो जाग लेंगे हैं जो अखण्डि हैं और बहावर ठोड़ कर दरवाजे पर बरते हैं गोविन्द देव जी के
गोदर के बाहर। वह सबसे बड़ा मीठा गोविन्द, देव जी का है और इधर में कठोर लिये हुए लाला भा। उसे
मधुकरों चूनि कहने हैं कि जो शाहर आता है तो कह मसाला ढाल देना है, कोई पूरा ढाल देना है कोई
मधुजी ढाल देना है। वह यह लेने हैं और गोविन्द जी का भजन करते हैं। बह आते हैं करोगे कि
जिन जो हमेशा बकायी छा रही हैं, आप कभी बह रहे हों, यह क्या उचित है, हम अपने इलाह
यहाँ मकान बनवा देते हैं।

वे कहते हैं नम अपने धरम की ओर अग्रसर हो रहे हैं। वे जानते हैं कि
इगार नाम कराडपति द्वारा में नहीं होता। वह तो हम प्रकार के जीवन में पूरी हो जाएगा।
वह एहसास कहता है कि गेर जीवन में एक लोग है, गेर जीवन में सुख है, गेर जीवन में
पृथिवी है, मेरे पृथिवी की ओर अग्रसर हो रहा है क्योंकि गुरु ने मुझे यह शलाह दी है।

मैं तो आपको यही सलाह दे रहा हूँ शरीर इन्हींलिए है कि हम नियंत्र इन्होंने कार्य
करते रहे। मन इन्हींलिए है कि बशर जापने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहे। जीवन
इन्हींलिए है कि हम अपने जीवन को उस उचाई पर पहुंचा दें कि मनु यो स्वर्णी नहीं कर
सके।

जीवन का सार आज समझेंगे, दस साल बाकि समझेंगे, पचास साल बाकि समझेंगे,
मृत्यु के बीच मिनट पहले समझेंगे, मगर एक दिन समझेंगे जग्य। कोई बीस परसेंट लाल
ही ढाले हैं जो मुस्कुराते हुए भरते हैं, अस्त्री परसेंट लोग हीन हैं जो लड़पते हैं, बचन हीन
है, चार महोने बीमार रहते हैं और अन में मंह बंद हो जाता है, गला रुध जाता है, भाजी
मैं से आरू बहते रहते हैं और बोल नहीं पाते ऐसे मरता हुआ व्यक्ति सोचता है कि मैं
जीवन में पाप किए हैं अधर्म किया है, उसको लटा है, उससे खुचोटा है, उसको खोखा
दिया है अब मैं कुछ नहीं लग सकता। ये जो यहाँ बेटे रहे हैं वे पैदा पाले न नियंत्र होते हैं,
सेवा के लिए नहीं रुके हैं वे साच रहे हैं कि यह मरे और हम बाह छिना करें।

और वह बोलने नहीं पाते, और बेटे कहते हैं कि किन किन गे ऐसा लेना बाकी है, वह
बता दीजिए आपको सब याद है, गदा हुआ धन कहा है, हम बना दीजिए दाकर
साक्षर एरा होकरन लगाएं कि एक आर बाल दे कि धन कहा कठों जाऊ लाऊ है। वी
दायरी कठों है जिसमें वसा के बारे में लिखा है। बेटे ऐसा बाल रहे हैं आर यह गे रहे
हैं कि मैंने कछु नहीं किया। आसू उसके इन्हींलिए यह रहे हैं और बेटे भाष रहे हैं कि
इधरी याद में रो रहा है। पक्की साच रहा है कितना प्यार करता है, आसू बड़ा रहा है।

और, वो खुब इन्हींलिए ही रहा है।

मनसा वाचा कर्मणा

वेदवल वचन से सुना गुरु कहे थे
राम राम कहे उसे कुछ नहीं हो सकता। शोप मन वजन और कर्म में पृथ्वी अप्रभावित बनेगा,
महन ने रखने दूर भी नहीं कुछ नहीं हो पाएगा। उसके यह बहुत कठिन है, महल में रहने दूर,

विष्णु वहन कहने कठिन है। अपने आप को ऐसी शर्त पर अवश्यकर करना बहुत कठिन है। महल में रहते हुए विष्णु समझना बहुत कठिन है। अपने आप को ऐसी शर्त पर अवश्यकर करना बहुत कठिन है विष्णुकृष्ण

द्वारा देखा जाएगा। वो याप ब्रह्मकर आपके समने खड़ा होगा। उस समय आप सिंहर रहेंगे।

इस बहुत बड़े नहीं, निखंथ कर लेंगे कि मृगों यहाँ कहना है, इस पार या उस पार हो जाना है।

जब जल नदी में स्थीर पाहने पर बढ़ जाएंगे।

ऐसी भावना कि आवश्यकता है कि गरा क्या बिश्वेगा, चुक्कलन क्या होगा, या तो क्षाल हो जाएगा तो हो जाएगा या शूर्णता प्राप्त कर लगा। अब मानसरोदर में नाव डाल दी हो तो या

तो मानसरोदर पर हो जाएगा या उन जाउना। मारु तो एक दिन होना होता है, तो जाएगा।

जब में हानि होना तो हो जाएगा। मगर खेदनहरु सहा है तो सब रही हो पर। इसलिए

निर्भय होकर बहुता पहेंगे होंगा।

आप जो यो करें निर्भय देखर करो। कोई आपकी सिंह कहता है तो गाल बेने की जहरत नहीं है आप सभी जीव पाप है हमारा जो कि मृग इधर नालौं दी हो। कह आपका भूमित कूप है तो समझ ली त्रिप कि यह भवापाप है जो मेर सामने खड़े होते रुद्ध भूमित करने की कठिनता करता है। तो यह नहीं कह सका मेरका

नानियन है वह आपका शमित कर रहा है, और जहा आप आप में पड़े तो जीवन

है।

हम कहने हैं उस गाल को शम करते हैं उस तुकान के चक्रवात को, अब उस समय आप कितने सतक हैं, कितने साक्षात हैं आपके जीवन का क्या जल्दी है, क्या आप अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं इस पर निर्भय करता है कि आप दृढ़ रह पाएंगे या नहीं।

चढ़े आप इस रस्ते पर भीर गहर तुम्हारे साथ मे है, कोई मेरा नाम नहीं है गुर मेरी भी गुर है, मैं भी उनके बहों में बैठने का इच्छक हूँ और बैठता हूँ। पर लिए तो बहसे ज्यादा खुखुशायक सार होते हैं बहे पांच मिनट हो, बहे प्रदृढ मिनट हो।

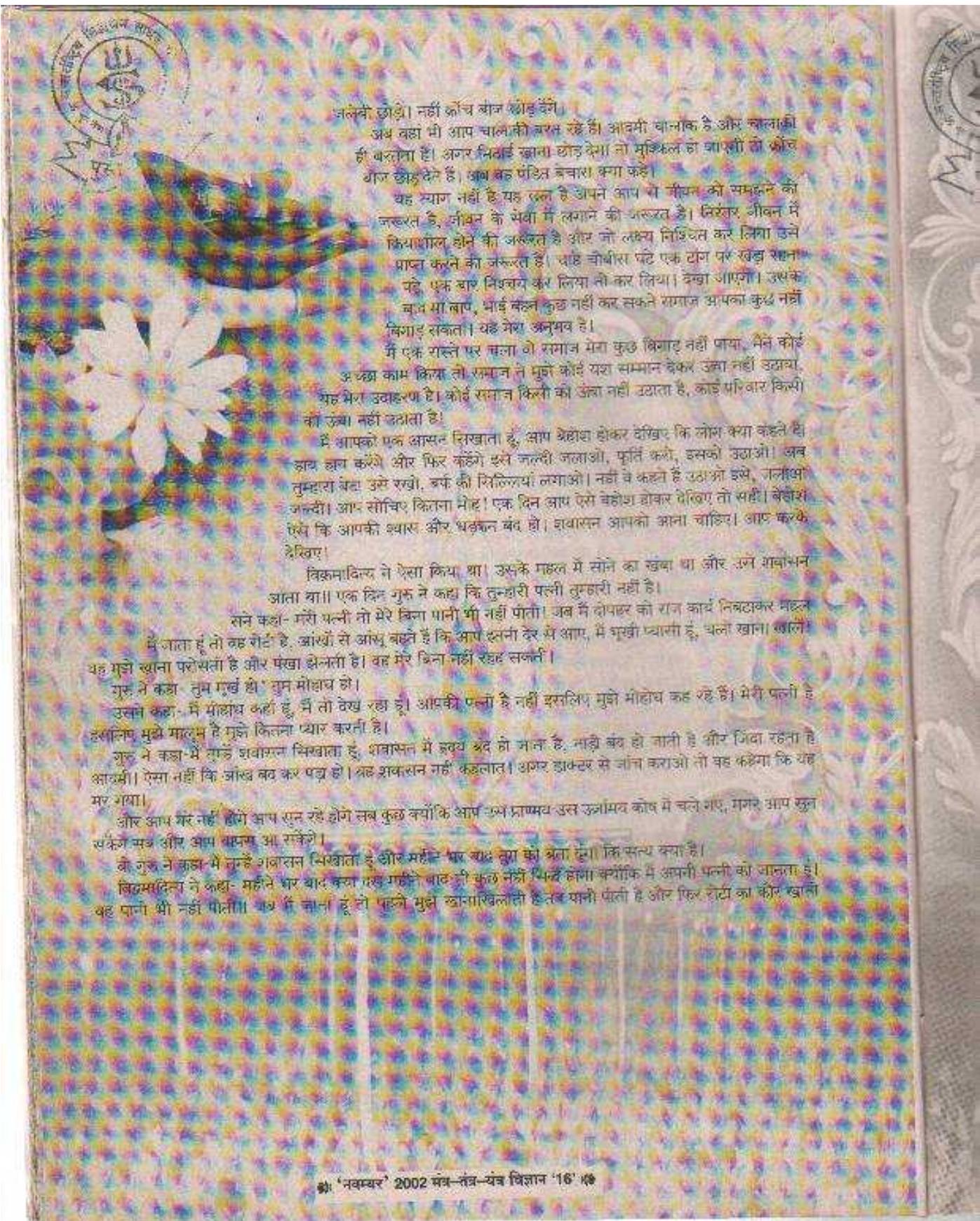
जीव की इच्छा नहीं है भेंटी, मेरी इच्छा यह है कि मैं कुछ करूँ करूँ गये देखरु, अपने जीवन के जो अनुभव हैं, जो भाषण है, जो तो अदर ही अज्ञात है, लकड़ियों के साथ जल जाएगी, उनके बैठे कागजों पर उत्सर्ज। जीवन का नक्ष्य यह है, मैं उसके लिए प्रयत्नशील हूँ, मगर एउटा नाम पुर्ज मिल नब एसा कर पाऊँगा। ऐसी स्थिति बन तब मेर जीवनका लक्ष्य यह है पापों के बह जान कागजों पर उतरे और इस पृथ्वी पर जीवित रहे गमायण जीवित है, रामचरित मानस जीवित है, पृथ्वीरि का नोति शताक

जीवित है उपनिषद जीवित है। वे जीवि मर गए पर उनके ग्रन्थ जीवित हैं और वे कषि भी जीवित हैं व्याकुं तनका नाम हमें मालूम है। इसलिए इसा हे क्योंकि उन्होंने त्याग किया हा रामगढ़ छोड़ दिया। शिवदर्घन ने छोड़ दिया तो बुद्ध कहनाए। मह और ने छोड़ दिया, रामगढ़ ने छोड़ दिया, जा मोने ने छोड़ दिया, राम ने छोड़ दिया, कृष्ण ने छोड़ दिया।

य सब यहाँ ये जात्याद छोड़ कर संग्रहीत नहीं है। जिनक पाप है वह छोड़ द्यकर है। अब किसी के पास तो समय है नहीं

जब उसके पाप के बाहर नहीं यो द्वेषों कहा रहे।

जोग कल्प है वे याप राना किनार आप तो लाइद, तो आप कहने हैं कि अद्वैतज्ञेच श्री ग ग्याना लोड़ दें। अब कोन बाल बनना है नहीं बस चम्प है आप-पाप उन्होंने है नो क्लोन बीन छोड़ा से बहुत ज्यादा नहीं। अब छोड़ा है तो बेठां छोड़ा,



नलेने छाड़ा। नहीं कोच बोज लौट दें।

अब वहा मी आप चालती बरस रहे हैं। आदमी चानाक ने अस चानाकी ही बदला है। अगर निराई खाना छाड़ देता तो मुझल हो जायी हो भीतृ गत छाह देते हैं। आप बड़े प्राइंस बच्चा कहा।

यह व्याग नहीं है यह लक्ष है आपने आप ये नियम जो समझने की जरूरत है, जीवन के भेदों में लगाने की जरूरत है। नियम जीवन में कियाजाल लाने की जरूरत है और जो लक्ष्य निश्चित कर लिया उन प्राप्ति करने की जरूरत है। यह चौर्बीस पेट एक टांग पर खड़ा रहना यह एक बार निश्चय कर लिया हो कर लिया। बड़ा जागा। उसके बाद या लाप, भाइ बड़न कुछ नहीं कर सकने गए। अपला कुछ नहीं किया। रहकता। यह मेरा अनुभव है।

मैं एक गहने पर चला हो गए। मेरा कुछ बिगाट नहीं पाया, मैंने कोई अच्छा काम किया तो गए। तो मुझे कोई यश सम्मान देकर उत्तम नहीं उठाया, यह मेरा उदाहरण है। कोई गणना कियो को उत्तम नहीं उठाता है, कोइ परिवार किसी को उत्तम नहीं उठाता है।

मैं आपको एक व्याप्त दिखाता हूँ, आप बेहोश होकर देखिए कि लोग क्या कहते हैं। जाव बाज करें और फिर कहें करे जलदी जलाओ, पूरी करो, उसको उठाओ। अब तुम्हारा बदू उसे रखो, बर्पे की शिल्पियां लगाओ। नहीं वे कहते हैं उठाओ इसे जलाओ जलाओ। आप सोचिए कितना भेट। एक दिन आप ऐसे बेहोश होकर देखिए तो यहीं। बेहोश होय कि आपकी श्वास और धड़कन बंद हो। श्वासन आपको आना चाहिए। आप करके देखिए।

विक्रमदिन ने ऐसा किया था। उसके गहने में सोने का खबा था और उन गवाहन आता था। एक दिन गुरु ने कहा कि तुन्हारी पहनी तुम्हारी नहीं है।

सोने कड़ा- मरो पन्नी तो मेरे दिना पानी भी नहीं पाता। जब मैं दोपहर को राज कार्य निवासकर महल में जाता हूँ तो वह जट है, आँखों से आँख बहते हैं कि आप इन्होंने देर में आए, मैं घर्वी आसी हूँ, चला खाना। लिला वह मुझे खाना करो सोना है प्रेर घंडा अनन्ता है। वह मेरे दिना नहीं रख सकते।

गुरु ने कड़ा तुम गुरु हो, तुम मोदीय हो। उसने कड़ा- मैं पालाघ बही हूँ, मैं तो रेख रहा हूँ। आपको पहनो है नहीं इरलिप मुझे मोहोध कह रहे हैं। मेरी पहनी है इरलिप मुझे मालम है गुरु कितना व्याप करती है।

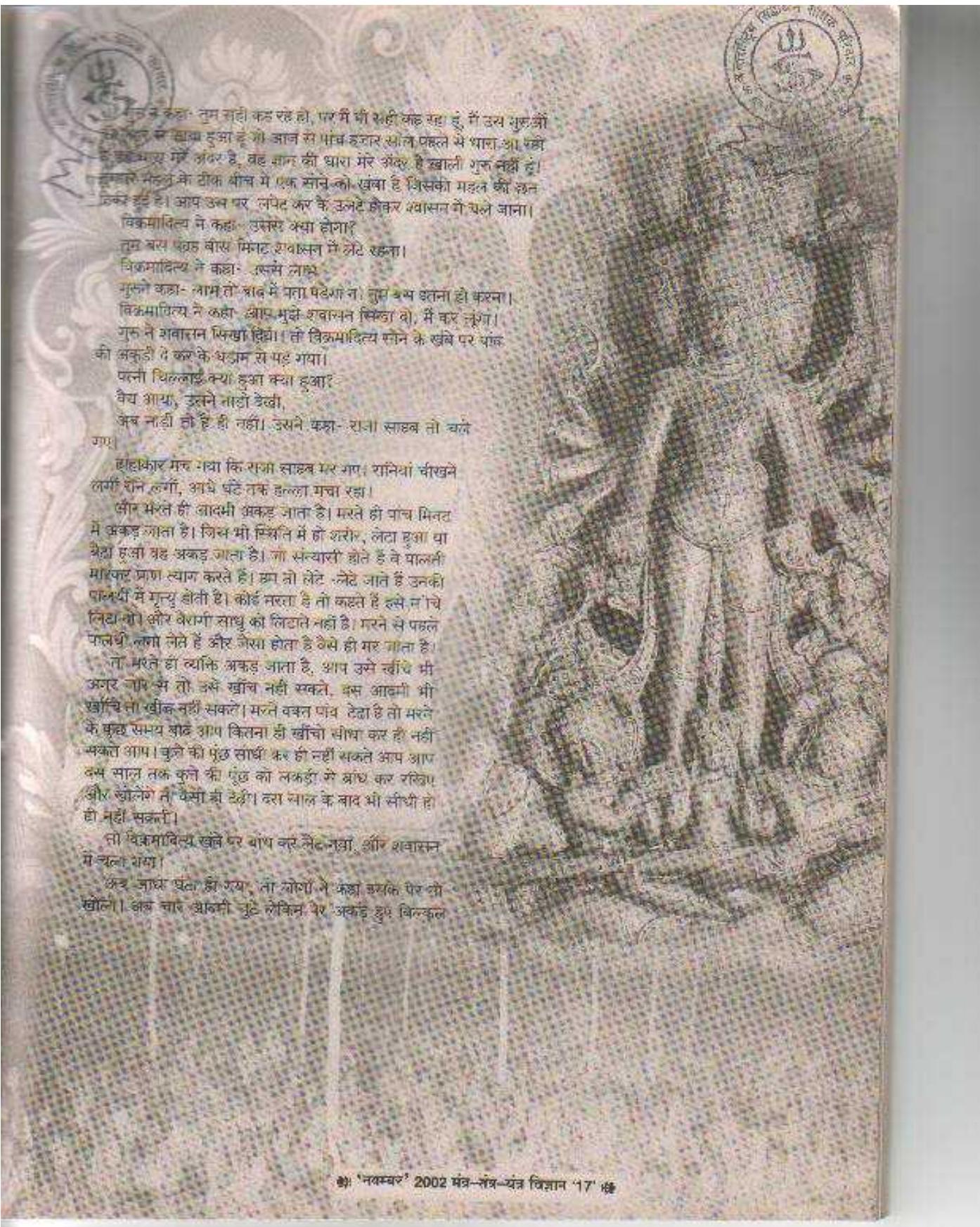
गुरु ने कड़ा- मैं याहू श्वासन विस्वाता हूँ, श्वासन में इरह श्रद हो जान छै, नहीं बंद हो जानी है और जिवा रहता है असर्व। ऐसा नहीं कि आँख बद कर पड़ दे। श्रद श्वासन गहीं कहतात। अगर डाक्टर से जीच जाऊओ तो वह कहेगा कि यह मर गया।

जार आप बर नहीं होगे आप गुन रहे होगे नब कुछ करोंकि आप उस प्राप्त्युत्तर उस उत्तरामद कोष में चले गए, गगड़े आप मुझे

एक गुरु भी आप वस्त्रमें आ सकते।

वे गुरु ने कड़ा- मैं नहीं जाना भिस्ताता हूँ और महें भर बद तो को अला हूँ। कि सन्तु दिना है।

विक्रमदिन ने कड़ा- महाने भर बार करा गए गल्ले बाट जी कुछ नन्हीं पिन्न होता। कर्योंकि मैं उपनी पहनी को जानता हूँ। वह पानी भी नहीं पाता। जब मैं जाना हूँ तो पहले भुज जानारखलाती है तब यानी पहली है और फिर रोटी को पक जाना।



जैन कहा तुम नहीं कह रहे हो, पर मैं भी यही कह रह हूँ मैं उस शुद्धियों
के लिए संतुष्ट हुआ हूँ मैं आज से भाव बदला सोने पहले ऐ थाला आ रखी
है अब यह मेरे गवर है वह जान की धारा मेरे गवर है खाली गुल जड़ी है।
जैन नहीं मैंने टीक बाल में एक साने को खावा है जिसका महल जी जून
जूकड़ है। आप उस पर लपेट कर के उनटे हैं वर श्वासन में घले जाना।

विक्रमादित्य ने कहा उससे क्या होगा?
तुम बय वह बोए मिनट रवालन में लेट रखा।
विक्रमादित्य ने कहा लूप नाड़।
मुझे बड़ा नाम तो चाह में बढ़ा पढ़ा गा न, तुम उस बताना ही करना।
विक्रमादित्य ने कहा आप मुझे श्वासन लिंगा दो, मैं वर नहीं।
गुरु ने श्वासन लिखा दिया। तो विक्रमादित्य सोन के खुबे पर धार
की अकड़ी दे कर के अनुम से पट गया।
परन्तु विल्लाइ क्या हुआ क्या हुआ?
वैय आय, उसने नाठों डेढ़ा,
अब नहीं हो है ही नहीं। उसने कश-राजा साहब जो चाहे
गए।

हाथिकर मच गया कि राजा साहब पर गए, राजियां चाहुने
लगी थीं जून लगी, आप धृत तक छल्ला गया रहा।

ओर मरने ही जाती अकड़ जाता है। मरने ही पाच मिनट
में अकड़ जाता है। जिस भी स्थिति में हो जरो, लेटा हुआ या
भेड़ा हुआ वह अकड़ जाता है। जो सन्ध्यारों होते हैं वे पालनी
मालिक ज्याए त्याग करते हैं। ड्रा जो लेटे नेटे जाते हैं उनकी
पालनी में मृत्यु होती है। कोई नहीं है तो कहते हैं हसे न जो
निटा ना। और वराणी साधु को लिटाने नहीं है। मरने से पहले
पालधी लगा जाते हैं और जैसा होता है वेष ही मर जाता है।
तो भरत द्वा व्यक्ति अकड़ जाता है, आप उसे खांचे भी
अगर जाप से तो उसे खोना नहीं सकते, वह आदमी भी
खोना नहीं सकते। मरने वकन पंच टेढ़ा है तो मरने
के बहु समय जाए आप कितना ही खोना चाहा कर ही नहीं
सकता आप। चुने की पुँछ साधी कर ही नहीं सकते आप आप
दस सान तक करते ही पुँछ को लकड़ी से बांध कर रखिए
और खोने ने फेंगा जो देखा। वह जाल के बाव भी सीधी हो
ही नहीं सकती।

तो विक्रमादित्य खेले पर बाथ लैट नहीं, और श्वासन
में चला गया।

अब जाक छेता हो रहा, तो लोगों ने कहा इसकि पर लो
छोला। लड़ जाए आदमी तुँके लेकिन तर अकड़ हुए विल्लाइ

खबर के चारों नरपति पैर खड़े ही नहीं। ही किसी ने सुझाव दिया- जल्दी करो, खबर को काट दो और ऐसे लिंकला को जन्मे कहा - नहीं नहीं, महीं खेड़ को नहीं काटो, विमान खटवाक दे क्या? मड़न गिर जाएगा और फिर आप जिर जाएंगे। शब्द में हुए आदमी को क्या फर्क पड़ता है, बनके पैर दो काढ़ दो॥ खबर को उठाए काढ़ दो ही।

वह सरीर जा एक मिनट भी उसके बिना बिना नहीं रह, एकसी वह अह रही है उसके पीछे का क्रृष्ण वो ओर विक्रमादित्य पड़ा पड़ा सुन रहा है।

लघुओं ने कहा - राजा साहब के पैर कैरो काढ़ ये तो राजा साहब है। मर हजार आजमी के दुकड़ों को कैरो जनाएंगे, लोग क्या अब अपने खड़ा तो पिर से बना देंगे। अभी दुकड़ जाना हो जावड़ों की ओर फिर वापस तूसरा खड़ा सोने का बना देंगे। आपके पाठ साने को कमी नहीं है महाराजी जी। पर काढ़ने का क्या मतलब हूआ।

पाठी ने कहा - नहीं नहीं खबर को नहीं काटना है मैं आज तेरही हू॥ राजा भी गया तो आब अस्थिपति ने हू, अब मैं सम्पाठ हू। इसलिए मैं आज्ञा दे रही हू। किंतु राजा नहीं कहेगा, पैर काढ़ ली।

अब राजी की आज्ञा माननी पड़गा, तो जाए वे तलदार, राजी ने सोचा अब मैं पैर काढ़ ही देंगे, अब मैं अगर नहीं जाऊ तो गए भेर पैर।

तो वह उठकर खड़ा हो गया।

अब राजा साहब जीवित हो गए, राजा साहब जीवित हो गए। लिकिन राजा उठे, अपना गमछा हाना करे पर और भीधा सेन्यास की ओर चाना हो गए।

उसने कहा कि जिस पत्नी को इन्हाँ प्यार करता था, उसके लिए दीवाना था जो ऐसी दीवानी होने का नाटक कर रही थी, वह बेकल नाटक था। वह प्यार था कड़ी। एक खेड़ के लिए भेर पैर काढ़ने के लिए भेर पैर कहा हो नहीं वह मेरी कहाँ से होगा।

आपका कोई नहीं है भेर यी कोई नहीं है। न पत्नी है, न पुत्र है, न बेटे है, न सरदा है, न पिता है-यह जारही है। अकेला आया हूं और जब आया या तो पहले

हुए कुछ नहीं था, बिनकुल नंगा था और जब मर्दाँ लेटा थिस पर तब यी नंगा हो होउगा। नंगा ही जल्दी। कुल कर्म नमाल यी पाप में नहीं रखेंगे। तो जैसा आया वैसा क्या वैसा गुण जाना है किर बीस कपड़ों का मुख अन्धा करना है?

हसाला-जीवन में दून बचन और कमी से परिव्र होते हुए शून दें-पूछ करके अपना लक्ष्य निर्धारित करते हुए गनिझील हानि औ जैविकों महुस्खियों कहते हैं, देवत्व कहते हैं, पूर्णत्व कहते हैं।

और उब तक वह पृणाली प्राप्त नहीं होती तब तक जीवन व्यर्थ है अधूरा है, इस जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है, इस जीवन की बाइ भान्जता नहीं है, यह जीवन एक पशु के जीवन के समान है, और पशु के समान जीवन जीवन की होनता है। इसानए उत्तरों में कहा गया है कि जीवन को सभी दृष्टियों से परिषूल होता चाहिए।

अब प्रथ-उठकर हूं कि परिषूलना का लक्ष्य क्या है?

पूर्णपूर्णता का तत्त्व यास्यों में यह बताया गया है कि ब्रेवल गुरु के सर्वप्रथम गुरु के अंदर प्रवेश करने और गुरु के अंदर काकाल हानि का छिपा की पूर्णता कहते हैं।

जरूर भानर पायी।

फटा कम जल जल ही समाना
यह सच्च कहा जानी।

जानियो ने यही तथ्य कहा है कि गुरु और शिष्य में अंतर कवल एवं प्रथा की बाबत है, माया है तुम्हारे पल्ले। तुम्हारा
पति, तुम्हारा पुत्र, बधु बधिक, सखा, स्वजन लोग मोह आलच तोष भृक्ति। और ज्योहि मांस की जो विषय है वह सब
तेजता है तो दाना एकाकर हो जाते हैं।

मिन आपको समझाता कि ये सब अप हैं जो तुम्हारे सामने आते हैं और जो युक्त से गिलने नहीं देता। और उनके
ये पाप सामाजिक नहीं हो जाएंगे तब तक तुम जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते। जिस दिन यह बालच की दीवान दृढ़
जाएगी तो फटा तुम जल जल ही समाना तो गुरु शिष्य में और छात्र गुरुमें रसमा आदम और अपने शृणु में बड़
पूछता प्राप छोड़ाएगी जिसे धार्मों में पूर्णभूत पूर्णभूत कहा जाया है।

यह परिवार एक लोग है, एक ढकोसला है यह स्त्री, यह पति, पत्नी, पुत्र केवल स्वाधीन इच्छा है, जो उनके
जिसमा इन स्वाधीन उच्चारों दो आप परे रहें जहां तो आप गुरु सत्य के नजदीक, एक जान के नजदीक, एक
वेतन के नजदीक, एक पूछता के नजदीक, पहुँचता।

बालमीकी अपन आपमें एक बहुत बड़ा डाक था और योज इत्याएं करता था लोगों की सहना या विचार
के गहने छीन लेता था और घर जाकर पत्नी को गहने लेता, धन देता और पत्नी बहुत प्रसन्न होती। परं
जो स्नादिष्ठ धोजन केता तो मा प्रसन्न होती। और उसने समझ रखा था कि यही जीवन का भल्य है।
मगर एक दिन ब्रह्मत धमते नारद उधर से गुनर, दोपहर हो गई थी, और राहगीर मिला तो नहीं या
ना द्याकु बालमीकी ने उस नारद को पकड़ लिया। नारद ने कहा तुम मुझे क्यों पकड़ सकते हों तुम डाक
हो, तुम मुझे बया पकड़ रहे हो, मेरे पास एक बीणा है जिसमें नारद्यण, नारायण की इच्छा करता
रहता है। न भृन है, न जीलत है—मेरे पास कुछ है ही नहीं।

उसने कहा— नहीं आज वा दिन खाली जा रहा है, यह बीणा ही दे दे, यह बीणा बेच दर
पाव दृप्त रुप्त रुप्त रुप्त ही तूरा।

नारद ने कहा— तुम यह सब किस लिए कर रहे हो।

उसने कहा— यह आपने परिवार के लिए कर रहा हूँ।

नारद ने कहा— कौन रा, परिवार, कैसा परिवार? क्या वह परिवार तुम्हारे साथ
लानेगा।

उसने कहा— निविवत स्त्री से चलेगा, पत्नी मेरे एक द्वारा थी रह नहीं
सकती, मैं तुम मिनट लें पहुँचता रहूँ तो मां की आश्रों से आपु बहने लग
जाते हैं। बेटे देतनार करने रहते हैं और वे सभी मुझे प्राप्ति से बहुत प्रिय हैं
और मुझे बहुत प्रिय लगते हैं। इसलिए जो तुम कह रहे हो सच्च कि यह
परिवार क्या है और क्या सच्च है, तुम जाहे हो, यह तुम्हारा विषया
कहन है।

नारद ने कहा कि यह जाकर पुछ कर आ जाओ कि ये सब
तुम्हारे हैं।

उसने कहा— नहीं मैं तुम्हें छोड़ना नहीं। हो
सकता है, तुम मरण करो।

नारद ने कहा— तुम मेरे बीणा के लिए कौर-

पुरां गेह से बाथ दो। मगर घर जाकर पठ कर आ जाओ। तो रामायण के दृष्टि
आपका हो बना वे एह तुम्हारे हैं?

बालमीकी ने नारद को पत्र से कथा और घर गया, मैंने उड़ाने के लिए
ए पुड़ा और भवने था कहा कि तुम्हारे कर्म तुम अपने अपूर्व कला तक पहुँच
देना चाहते जो कलाकृति है उस तरह नियमना है। किस प्रकार ऐसे कौन
इससे कर्म कर्ह नालभाव नहीं है। जाप का कथा आप जानते हो कि किसी
एक र वालमीकी को अपने परिवार से भावालिक आधार प्राप्त बुझा, उसका
बढ़ा दख दुखा। वह बास्तव आप और नारद को पठ से खोल देया। उसने
कल के आज भैंस आप खुल गई कि न पन्ना होती है, त भैंस होती है, व
देटा लोजा है, परिवार को कोई व्यापक त्रास है नहीं होता। अगर तुम
पामसा उत्तराय लिया अकल अन्तर्वेदी हो तो वह तुम्हारा हो जाए है और उस पाम
का फल तुम्हें ही भरना पड़ेगा, यह जान युक्त आज हो गया प्रत्यक्ष घर जाकर
पुड़ा कर क और मैं तुम्हें अपना युक्त भवनता हूँ अब युजे कथा करना है?

मरुद ने कहा— तुम्हें धूज से वह छलाय धन एकत्र करने को किया छोड़ देनी
चाहिए, और बेवज राम का नाम उच्चारण करना चाहिए। नालायण का उच्चारण
करना नामधारी और डसक अन्नावा कोई शब्द उच्चारण करना ही नहीं है, बोहँ
इच्छा भी नहीं रीटी है, र तो खा लेनी है कर्योंकि ये पर्वी और मौ और पूर्व ही वी
नहीं, ये केवल माया है, और तुम माया से ग्रस्त हो आज पहली बार आया से बाहर
निकले हो।

बालमीकी इकु नारद के बराणों में जिर गया और निरंतर नरायण, नारदाय
व्यनि करने रहा और एक दिन वही इकु बालमीकी एक दिन उच्च कोनि का महाकाल
बना, जिसने रामायण जैने गये की रचना की और विष तुल्य कहलाया।

भेर कहने का नामपर्यं यह है कि नीवन का सार भनी, धौत धन, वश, मान, उभव,
प्रतिष्ठा नहीं। नीवन को श्रेष्ठता से इसमें है कि आप कथा है और किस प्रकार से आप
प्रतिष्ठीत हैं, किस प्रकार भेर उभव भर रहे हैं, किस प्रकार की आपको भरोष वही है,
जिस प्रकार से आप कथा भी कस तामगी में नीवन धापन करते हों, किस प्रकार से तुम
अपने नीवन को गतिशील करने हो और कथा तुम्हारे पास नहु है, कथा युक्त तुम्हें तुम्हारे से
सुमारा पर गतिशील करने में अद्यता है, कथा तुम्हें यहाँ रामना दिखाने में अफल है।

और यदि है तो वक्सकर मूर के चरणों को पकड़ लेना चाहिए और हाथ जाहलन, अंगों
में आपूर्वकर निवेदन फर्सी और बेवजा चाहिए कि प्रभु युक्तेव ने सही शस्त्रे प्रसन्न योग गति
में आपूर्वकर निवेदन फर्सी और बेवजा चाहिए कि प्रभु युक्तेव ने सही शस्त्रे प्रसन्न योग गति
शस्त्रे पर है, यह आप ज्यादा जानते हैं। आप गड्ढे बताइए कि भेर दिप कीन या रामना
शस्त्रे पर है, यह आप ज्यादा जानते हैं। मैं परिवार में मोहशस्त्र ही गया हूँ मैं धन के
ब्रह्मन्कर हूँ। किस गस्ते पर चर्चा? मैं भ्रामित हूँ। मैं परिवार में मोहशस्त्र ही गया हूँ मैं धन के
दीछे नीवन हो गया हूँ, मैं अधिको गया हूँ। मैं नाहने हुए भी इन से इट नहीं पारहा हूँ। आप
मृद्द जान द्विजप रामना दीवि, मृद्द अनाडे कि नीवन में पारित केगा प्राप्त करें। और युक्त तुम्हें
रामनो बनायग, एक चन्दा चुम्बा, एक प्रज्ञा देगा, एक वीक्षा देगा, नामहरि भैन कल्प को शुद्धि
करेगा, तुम्हें अपूर्व प्राप्ति देने वाला भ्रामण करेगा, और निरंतर तुम्हें गतिशील करता होगा।

ज्ञान भीतर भूहन के

सब कुम्भर शिष्य कुप हे

बाहर बाहर चोट

गहि गहि काढे खोट।

उस त्रिशूल की तदह हे और इष्ट मिठारी का लौंग हे उस
कुम्भर कहे उस गुरु का मालम हे उस पिंडी के नींवों को क्या
क्याम हे। वही बनाना हे। सुरांडी बनाना हे, दीपक बनाना हे या
क्षमा बनाना हे।

यह तुम्हें दीपक बनाएगा तो तुम शोशाना फैलाकर अंधकार
को छिपाएँ सकोगे वह तुम्हें शोशानी धा बड़ा बनाएगा तो तुम
लोगों को उड़ायानी पिला लोगों, तुम्हें लड़ा दोगे से गतिशील
द नाकगा। और वह व्यक्तित्व जास हमें दिया आवश्यक हे।
और गुरु का अंदर बरबार शुद्ध होना हे कि दरा त्रिष्णा द्वाटे नहीं
चिप्पेर नहीं और बाहर बरबार चोट पहचान रहना हे इत्यलिपि
कि एह निर्भूत बने, धृतम् बन शुद्ध बने। उसके लिए गुरु
उसकी आलोचना करेग, उसकी इतेंग। उसको फटकारेग,
उसको सन्मान पर नान की कोशिश करेग, कोशिश उसकी बही
होगी कि किसी गो पकार से यह बफल हो, वह अपने आपमें
पृथिवी प्राप्त करे, वह अपने जीवन में उच्चता प्राप्त करे, श्रेष्ठता प्राप्त
करे। गुरु का बहल यशी गळ करन्वा हे।

आर त्रिष्णा का भी एक दृष्टि कर्तव्य हे कि अपने आप को पूर्णतः गुरु
के चरणों में समर्पित कर द, अपने पास कृष्ण न रखे।

पृथिवी- पृथिवीद् पृथिवी पृथिवीद्वच्यते

यह युक्ति तर्हा साधक हो रामेनी जब शिष्य के मन में वह आङ्गा कि
एह गारी हे, जब उसके मन में आएगा कि-

तवदीप वस्तु शोविद्

तुम्हयेव समर्पयत

जब देखी भवना उसके मन में आएगा, तो त्रिष्णा निश्चय हो जूँना प्राप्त
करेग, और मैं भागको आशीर्वाद देना हूँ कि जाप सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त
करे और यहां हो।

ॐ पूर्णमन् पूर्णमिव पूर्णाद् पूर्णमिदुच्यते

पूर्णमय पूर्ण भावाद्य पूर्ण मेवा य शिष्यते।

द्वितीय ३० तत्त्वात्

यदमहंस स्वामी निखिलश्वरामन्द जी

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका उपर्युक्त परिवेश का भौगोलिक अंग है। इसके साधनात्मक भव्य के समाज के सभी स्तरों में रूप से भवीकार विद्या गढ़ती है। यथोक्त इन्हें प्राचीक वर्गों की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप ने साझित है।

वार्षिक विज्ञापन

इस परिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप यात्रों अवितीय और विशेष उपहार

कनक धारा यंत्र

वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनुसार जीवन के चार पुरुषार्थों में अर्थ की महत्ता सबाधिक अनुभव होती है। परंतु नब भास्य या प्रारब्ध के कारण जीवन में अर्थ की न्यूनता व्याप्त हो, तो साधक के लिए यह आवश्यक हो जाता है, कि वह किसी दैविक सहायता का सहारा लेकर प्रारब्ध के लेख को बदलते हुए उसके स्थान पर मनचाही रचना करें कनकधारा यंत्र एक ऐसा अद्भुत यंत्र है, जो गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए भी धन के स्रोत खोल देता है, यह अपने आप में तीव्र स्वर्णकर्षण के गुणों को समाविष्ट किए हुए हैं। लक्ष्मी से सम्बंधित सभी ग्रंथों में इसकी महिमा गायी गई है। शंकराचार्य ने भी निर्धन ब्राह्मणों के घर स्वर्ण वर्षा कराने हेतु इस यंत्र की ही चमत्कारिक शक्तियों का प्रयोग किया था।

प्रधान विधि - साधक को चाहिए कि इस यंत्र को किसी बुधवार को अपने घर पर स्थापित कर दें। नित्य इसका कुकुम, अक्षत एवं धूप से पूजन कर इसे समझ 'ॐ लौ लहलावदने कनकधारि श्रीधृ अवतर आगच्छ ॐ फट एवाम' परत कर २१ बार जप कर। एसा ११ बुधवार तक कर, फिर यत्र को निजोरी में रख लें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप परिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को दानाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप परिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप परिका में प्रकारिता पोर्टफोर्ल नं. ४ स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क-195/- डाक रार्च अंतरिक्ष 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage
संपर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, Dr. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimall Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-432209, 433623 टेलीफॉनेस (Telefax) - 0291-432010

गुरु शिष्य सम्बन्ध

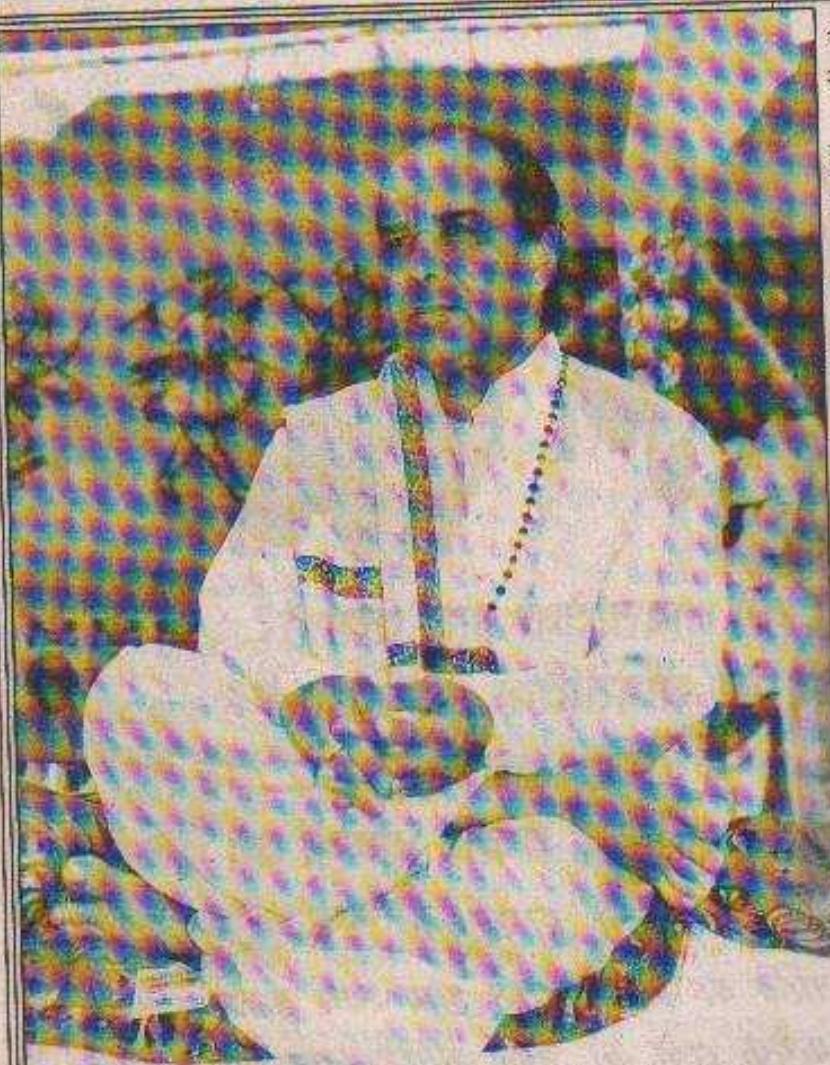
- ★ गुरु शिष्य का वास्तविक अर्थ क्या है?
- ★ शिष्य शिष्य का वास्तविक अर्थ क्या है?
- ★ गुरु और शिष्य किस प्रकार जुड़े हुए होते हैं?
- ★ गुरु अपना ज्ञान किस प्रकार शिष्यों को देते हैं?

गुरु शिष्यों की विश्वास

व्याख्या सहित यह लेख जिससे आप स्वयं समझ सकें और प्रत्येक शब्द को अपने भीतर उतार सकें,
तभी जीवन की सार्थकता है।

गुरु और सद्गुरु के संबंध में हजारों ग्रन्थ और व्याख्याएं लिखी गई हैं। लेकिन अब तक इसे पूर्ण रूप से समझा नहीं पाया गया है। सामान्य तीर पर गुरु का तात्पर्य अध्यापक, शिक्षक या गुरु और गुरु का अपने अपने शिष्य का अध्यापक है। इसके साथ ही आपके स्वयं के विचार रहित व्यक्ति लगते हैं, लेकिन आपके चेहरे की आभा मातृ-पिता भी आपको कुछ जान देते हैं, क्योंकि आपके स्वयं के विचार रहित व्यक्ति लगते हैं, यह बता रही है कि आप एक प्रशान्त और पूर्ण जाग्रत नहीं? गुरु धारणा इतनी अधिक सरल नहीं है जितनी आप व्यक्तित्व हैं, आपके गुरु कौन हैं और आपने क्या प्राप्त कर समझ देते हैं। हर व्यक्ति को गुरु अवश्य मिलते हैं और मैं लिया है? सन्यासी ने उत्तर दिया कि मेरे एक दो नहीं, चौबीस यहाँ कहना चाहुंगा कि यदि शिष्य मानसिक रूप से नैवार है, गुरु हैं और प्रत्येक से मैंने जान प्राप्त किया है अर्थात् व्यक्ति के बीचिक रूप से जाग्रत है तो उसे गुरु मिल ही जाते हैं, यह जीवन में जान प्राप्त ही महान् उद्देश्य ही है। जान प्राप्ति के जितना सरल लगता है उतना ही कठिन और दुष्पाठ्य है।

लिए अच्छा समर्पित शिष्य बनना आवश्यक है और यह जान



कई गुरुओं से, लिखितों से प्राप्त हो सकता है तभी व्यक्तित्व पूर्ण प्रज्ञावान बनता है।

गुरु कौन

गुरु वह व्यक्तित्व होता है जो अज्ञान के अन्धकार को दूर करता है यहां अज्ञान का तात्पर्य परम शक्ति के प्रति, परमात्मा के प्रति ज्ञान का अभाव और स्वयं के प्रति ज्ञान का अभाव है। आप अपने जीवन में सेकड़ों साधुओं से मिलते हैं। लेकिन क्या किसी ने आपके हृदय को घ्यश किया है, यदि नहीं किया हो तो ठाड़ दीर्घिए। इतना अवश्य है कि वह आपके शिक्षक अवश्य हुए लेकिन गुरु नहीं हो सकते, गुरु वही व्यक्तित्व है जो आपके स्वयं के प्रति ज्ञान के अधिकार को दूर करे आपके हृदय को भावों से भर दे और आपको पूर्ण जाग्रति की

आवस्था में ले धोए। यही आपके गुरु है।

गुरु शिक्षणस बर बोर मरा जोर देने का उद्देश्य यही है कि आप गुरु शिष्यमन्तीको समझ सकें। जब आप कहते हैं कि 'वे मेरे गुरु हैं', वे आपके गुरु कहाँ हैं? इसका उत्तर केवल आप स्वयं दे सकते हैं।

नदी के जल में एक पत्थर पड़ा है और जब हम उस पत्थर को बाहर निकालते हैं तो और सूर्य की रोशनी में रखते हैं तो योड़ी ही देर में वह पत्थर सूख जाता है। वह पत्थर जल विछिन होकर गुब्बक हो जाता है। इसलिए यह संभव है कि आपको जो गुरु मिले हैं, उन्होंने आपके हृदय को प्रभावित नहीं किया है तो आपकी स्थिति ठीक हरी प्रकार है जैसे नदी के जल में पड़ा हुआ यह पत्थर है। गुरु के सम्पर्क में जाएं और आपका मन मस्तिष्क, हृदय पूर्ण स्वयं से प्रभावित न हो और आपमें ज्ञान का प्रकाश उदय नहीं हो, आत्म साक्षात्कार की स्थिति प्राप्त नहीं हो तो वे आपके

गुरु कैसे हो सकते हैं? गुरु और शिष्य का संबंध हृदय और आत्मा का संबंध रहता है।

शास्त्रों में लिखा है कि गुरु के बिना पूर्ण आत्मज्ञान, आत्म साक्षात्कार, पूर्णत्व प्राप्ति संभव ही नहीं है, दूसरी मूल्य बात है कि गुरु जो भी आज्ञा दे, उस आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करे। पर साथ में तीसरी बात यह भी लिखी है कि गुरु बनाने से पहले आप भली मांति जांच परख ले।

ये तीनों बातें एक दूसरे से विग्रेधाधार से लगती हैं क्योंकि वर्तमान युग में व्यक्ति अपने आप को बहुत अधिक जानकार और योग्य समझने लग गया है। शास्त्रों की बात मानता है लेकिन उन बातों को अपनी प्रकृति हच्छा के अनुसार ढाल देता है। यदि कोई व्यक्तित्व अच्छा लग तो वह शास्त्रों

न इत्यत्त्वा हुआ परहलो ज्ञान अपने जेब से निकाला और कहा लाभ हो रहा है लेकिन मेरे उन्दर तो कुछ भी परिष्कृति नहीं। के नुस्खे में लिए आवश्यक हैं और आप ही मेरे गुरु हैं, इसके हो रहा है। इसका सीधा तात्पर्य है कि कहीं नै कहीं कोई कहीं चलने जूले ने कोई भाला दी और वह आपकी प्रकृति और आपके भीतर ही है। कोई न कोई अदर्श अवश्य है जो उन्मुख के अनुकूल है, ऐसे आप आसानी से कर सकते हैं आपको और गुरु को मिलने नहीं देता है। इस अवश्यक का न आप दूसरा कागज निकाल कर पढ़ते हैं जिसमें लिखा है हटाने के लिए और अधिक प्रयास करना पड़ेगा क्योंकि गुरु कि गुरु के आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए। और अपना अधिकतम ज्ञान मौन भाषा में नहीं शब्दों से रहित जब गुरु कोई कठिन कार्य दे देते हैं जिसके पूरा करना आपके केवल अपनी उपस्थिति मात्र से ही दे देते हैं। उनकी प्रत्येक नवमाव और प्रकृति के अनुकूल नहीं रहता तो आप शास्त्रों में क्रिया को विद्यता को, शब्दों में बांधा जा सकता है।

लिखा तीभ्रा काशज जेब से निकालते हैं और कहते हैं कि योग वशिष्ठ में एक अत्यंत संदर आख्यान आया है जब 'नहीं-नहीं' अपने गुरु को अच्छी तरह से परखा नहीं था। राम गुरु वशिष्ठ से शिक्षा ले रहे होते हैं तब गुरु वशिष्ठ राम वह व्यक्तित्व मेरा गुरु नहीं हो सकता है। गुरु की परीक्षा को बार-बार कहते हैं 'यह सब तुम्हारा केवल विचार है तुम अवश्यक है इस कारण जब मैं दूसरा गुरु देखता हूँ, इस विचार करते हो कि तुम यह हो, वह तो तुम वह नहीं हो तुम प्रकार यह पूरी बात बड़ी ही विचित्र लगती है।'

गुरु वह महान व्यक्तित्व है जो आंतरिक ज्ञान नेत्र को भेसार तुम्हारा नहीं है। यह केवल तुम्हारी एक वैयाकिक जायन कर दे। उनकी उपस्थिति ऐसी लगे कि मानव राक्षात धारणा है। मानसिक क्रिया है, इसे छोड़ दो। राम ने पूछा कि सूर्य प्रकाशमान हो गया है। जिनके उपस्थित होने मात्र से 'इसका तात्पर्य है कि आप भी मेरी मानसिक धारणा हो, भीतर ही भीतर एक हलचल मचने लगती है, एक आनन्द कल्पना हो तब आप मुझे क्यों शिक्षा दे रहे हैं?' वशिष्ठ इस आने लगता है, एक अनुभूति होती है वही व्यक्तित्व आपका पर चुप रहे, और कोई उत्तर नहीं दिया। राम ने पूछा, पूछा गुरु है।

इसके निए राबरसी पहले अत्म भवलोकन कर अपनी कमियों आप उसका उत्तर नहीं दे रहे हैं। तब वशिष्ठ ने कहा मैं चुप के बारे में विचार करना चाहिए और ऐसे व्यक्तित्व को हूँदना इसलिए नहीं हूँ कि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। चाहिए जो शापके भीतर के संदेहों को दूर कर सके जो क्योंकि मौन ही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है जब नुम नौन रहकर आपको आंतरिक रूप से प्रकाशवान कर सके। आपको पूर्णत्व इस प्रश्न पर विचार करोगे तो तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर अपने की ओर यात्रा प्रारंभ करता सके। यह कोई व्यक्ति भी हो आप प्राप्त हो जाएगा। मेरी तो केवल उपस्थिति आवश्यक है। भवता है, घटना भी हो जाकती है, वस्तु भी हो सकता है, यह मौन यात्रा लाप और संबंध किस प्रकार से संभव है, स्थान भी हो सकता है अथवा कोई अन्य स्थिति। बुद्ध ने यह तभी संभव है जब व्यक्ति अपने आपको भीतर से पूर्ण अपना कोई गुरु नहीं बनाया और जान प्राप्त करते करते मौन करने की क्रिया प्रारंभ कर दे। बाढ़र में चाहे वह बोल हनारों स्थानों पर वृम्म तथा एक वृक्ष के नीचे बैठ कर समाधि रहा है लेकिन आंतरिक रूप से मौन है, शांत है, तभी गुरु जे जगाई और उनका आंतरिक प्रकाश प्रशाट हो गया, उस वृक्ष वाली नाम संभव है, तभी व्यक्ति को अपने संदेहों का निवारण को उन्होंने लोधिवृक्ष कहा नहाँ उन्हें पूर्ण केवल ज्ञान की प्राप्त होता है।

इन स्थितियों के अतिरिक्त आमान्य रूप से यह कहना कि इत्याएं साथ-साथ चले प्रथम क्रिया में सीखने की भावना हो, आप मेरे गुरु और मैं आपका शिष्य हूँ, अनावश्यक उलझाने गृहण करने की भावना हो, दूसरी स्थिति में आंतरिक रूप से उत्पन्न करता है। सुख्य बात है ज्ञान को धारण करने की और मौन हो अथवा भीतर जो महंकार भरा पड़ा है। वह पूर्ण रूप निरंतर सीखते ही।

एक सामान्य व्यक्ति एक महान व्यक्तित्व के पास जाता है ध्यान मात्र से एक मौन संमाधण प्रारंभ हो जाता है। अन्यथा जिससे हजारों लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया है। आप वहाँ दर्शक गुरु शिष्य संबंध में अन्यथिक विचित्र स्थिति आ सकती है। मांति खड़े हैं और यह कहते हैं कि इनके ज्ञान से दूसरों को उपनिषद में एक सुन्दर कथा आती है कि ब्रह्मा के पास देव

शुरू तक उमा की जगता का प्रवाह कहते हैं जिसे शिष्य आत्मरिका रूप से बहाण कहता है और उसके नाम हीर-धीर शुरू होते रहते हैं। इस आत्मरिका उमा का प्रवाह के बाद शुरू के माध्यम से ही ही अकर्ता है। हसके अलावा दूसरे जब माध्यम में व्यक्ति के 'हनी' बाहर में अवश्य आ जाता है। इस धीर प्रवाह के कारण ही शुरू शिष्य परमपरा जीवित जीवनता रहती। किसी भी चिथिति में समाप्त नहीं ही रहती।

और दानव दोनों उपदेश प्राप्त करने के लिए, ज्ञान प्राप्त करने के लिए गए। ब्रह्मा जो कि उनके पिता भी थे। उन्होंने कहा कि तुम्हें आत्मज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और के अनुसार उन बातों का अर्थ लगाता है। क्योंकि गुरु के आत्म ज्ञान प्राप्त करके ही तुम भूख, प्यास, पीड़ा, रोग-मस्तिष्क का स्तर और शिष्य के मस्तिष्क का स्तर एक शोक से दूर हो सकते हैं तथा तीनों लोकों के अधिपति बन स्तर पर नहीं होता और जब यह एक स्तर पर नहीं होता तो भक्ति हो। दानवों ने केवल अंतिम वाक्य को गहण किया और गुरु के वचनों का अर्थ अलग लगने लगता है। चाहे आप उपदेश समाप्त होते ही ब्रह्मा से निवेदन किया कि 'पिताश्री' किसे ही सुन्दर हों लेकिन यदि दर्पण स्वच्छ नहीं है अथवा आपमें अपने हाथ में कोई विचित्र वस्तु पकड़ रखी है और लोकों का अधिपति बनना चाहता हूँ। उपनिषद् आगे लिखते हुए उसे मुख के सामने रख दिया है तो यह आपके प्रतिबिंब को है कि ब्रह्मा ने कहा कि दर्पण में देखो इसमें तुम क्या देख रहे विगाड़ देगा। क्योंकि दर्पण एक वस्त्र स्वच्छ नहीं था। वह असूरपति ने उत्तर दिया कि दर्पण में मैं स्वयं को देख आपकी आंतरिक सुंदरता को पूर्ण रूप से प्रगट नहीं कर रहा हूँ। ब्रह्मा ने कहा ठीक है जैसा तुमने कहा। इसी प्रकार था। इसी लिए गुरु शिष्य को सेवा करने का कहते हैं। वे रखा हूँ। ब्रह्मा ने कहा ठीक है जैसा तुमने कहा। इसलिए इसलिए नहीं कहते कि उन्हें आपकी सेवा की आवश्यकता है गुरु आत्म ज्ञान का प्रकाश देने के लिए शिष्य को कहते हैं इसलिए नहीं कहते कि उन्हें आपकी सेवा की आवश्यकता है तुम दर्पण में क्या देख रहे हो और शिष्य उत्तर देता है कि मैं अथवा आपको दास बनाना चाहते हैं। सेवा धर्म के लिए तुम दर्पण को देख रहा हूँ। और गुरु कहते हैं कि यही है। लेकिन केवल इसीलिए कहा जाता है कि यदि आप शिष्य बनना स्वयं को देख रहा हूँ। और गुरु कहते हैं कि यही है। क्योंकि उपने दर्पण में अपनी देह को ही देखा और अर्थ यह मानसिक स्थिति को स्वच्छ करने के लिए और चित्त एवं निकाला कि खाओ, पिओ, मार काट करो, युद्ध करो, व्यवहार में निर्मलता लाने के लिए ही गुरु सेवा का आदेश शक्तिशाली बनो और राज्य करो। वास्तव में वे स्वयं की देते हैं।

योहों द्वारा बाद देवों के अधिपति ब्रह्मा के पास गए और उन्होंने भी यही प्रश्न पूछा। फिर ब्रह्मा ने कहा कि दर्पण में देखो तुम क्या देखते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि दर्पण में मैं अपने आप को देख रहा हूँ। ब्रह्मा ने कहा तपास्तु जाओ। इन्द्र चले गए लेकिन विचार किया कि मैं मंबले युद्ध कर सकता हूँ और तीनों लोकों को जीत सकता हूँ लेकिन ब्रह्मा कह रहे हैं कि 'स्व' भूख, प्यास, शोक, विषाद से परे होता है जबकि दर्पण में दिख रहा मेरी देह, मेरा रूप तो इन सबसे परे नहीं है। अतः यह विषय और अधिक गहरा होना चाहिए। ऐसा विचार कर ब्रह्मा के पास पूछ, गये और कहा कि मैं 'स्व' के संबंध में कुछ और विस्तृत जानकारी जानना चाहता हूँ। ब्रह्मा ने उत्तर दिया कि यदि तुम और कोई प्रश्न पूछना चाहते हो तो मेरी 32 वर्ष सेवा करनी पड़ेगी। उसके पश्चात ही, तुम प्रश्न पूछने के अधिकारी बनोग। क्या ब्रह्मा को जो कि सृष्टि के इच्छिता हैं उन्हें सेवा के लिए एक सेवक की आवश्यकता यी? नहीं!

इस का सीधा तात्पर्य है कि व्यक्ति गुरु के बातों को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाता है अथवा अपने स्वभाव एवं प्रकृति के वचनों का अर्थ लगाता है। क्योंकि गुरु के आत्म ज्ञान प्राप्त करके ही तुम भूख, प्यास, पीड़ा, रोग-मस्तिष्क का स्तर और शिष्य के मस्तिष्क का स्तर एक स्तर पर नहीं होता और जब यह एक स्तर पर नहीं होता तो भक्ति हो। दानवों का अर्थ अलग लगने लगता है। चाहे आप गुरु के वचनों का अर्थ अलग लगने लगता है। चाहे आप अपने हाथ में कोई विचित्र वस्तु पकड़ रखी है और आपमें अपने हाथ में कोई विचित्र वस्तु पकड़ रखी है। उसे मुख के सामने रख दिया है तो यह आपके प्रतिबिंब को किसने ही सुन्दर हों लेकिन यदि दर्पण स्वच्छ नहीं है अथवा आपको दास बनाना चाहते हैं। सेवा धर्म के लिए उसे मुख के सामने रख दिया है तो यह आप शिष्य बनना चाहते हैं। यदि आप गुरु द्वारा आत्मज्ञान, गुरु के आदेशों के असूरपति ने यही अर्थ समझा कि शरीर ही सब कुछ है अनुसार प्राप्त करना चाहते हैं तो सेवा अनिवार्य है। केवल क्योंकि उपने दर्पण में अपनी देह को ही देखा और अर्थ यह मानसिक स्थिति को स्वच्छ करने के लिए और चित्त एवं निकाला कि खाओ, पिओ, मार काट करो, युद्ध करो, व्यवहार में निर्मलता लाने के लिए ही गुरु सेवा का आदेश संपूर्ण व्याख्या यहाण नहीं कर सके कि स्वयं का तात्पर्य है इसलिए इस बात में कोई भेद नहीं है कि मैं आपका गुरु हूँ अथवा आप मेरे शिष्य हैं। पर यह जात निश्चित है कि सेवा आत्मा जो भूख, प्यास, शोक, विषाद से परे है।

केवल मैं हमें अपने द्वारा योग संभाषण की स्थिति में पहुँच सकते हैं। केवल उनमें ज्ञान की शब्दों में बहुत बोला जा सकता। इसे तो केवल एक मन द्वारा दूसरे मन से ही जाना जा सकता है।

वास्तव में शिष्य होने की कितने हैं? जिससका इस्ट द्वारा हजारों लोगों को उपदेश दिया गया उनमें से कितने लोगों ने उनपर पूर्ण विश्वास कर उस समय उनके जान को ग्रहण किया। केवल योड़े से ही लोग बचे थे उसमें से भी कस चले गये और एक ने उन्हें ही धोखा दिया और दूसरे ने उन्हें नकार दिया। इस कारण यदि यह स्थिति क्राइस्ट के साथ हो सकती है तो समझ सकते हैं कि वास्तविक शिष्य कितने हैं?

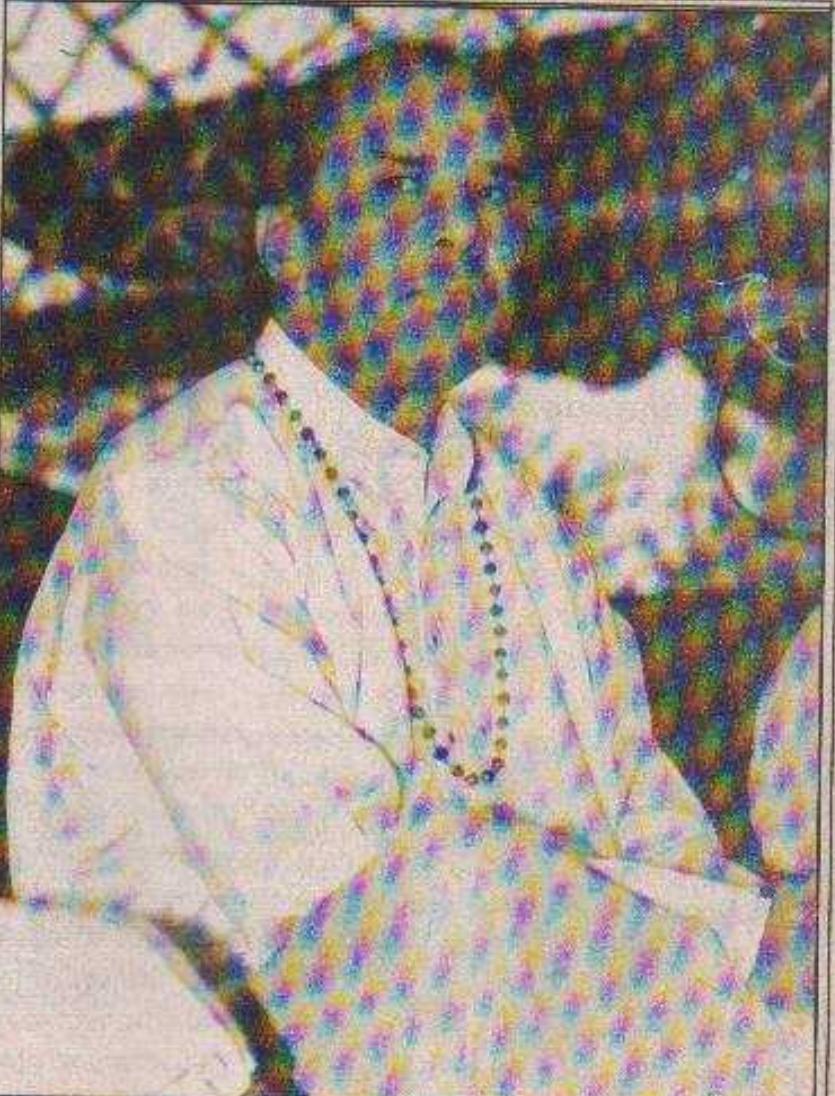
कृष्ण ने भी हजारों लोगों को जान दिया, लेकिन उनके पूर्ण शिष्य बनने वाले थे व्यक्ति थे। प्रथम थे अर्जुन और दूसरे थे उच्छव। यह अलग बात है कि आज हम कृष्ण को, क्राइस्ट को भगवान् स्वरूप मानते हैं लेकिन उनके जीवन काल में पूर्ण रूप से शिष्य

बनकर कितने लोगों ने जान ग्रहण किया।

गुरु आज्ञा पालन में सबसे बड़ी बात यह होती है कि यह विचित्र विरोधाभास की स्थिति है। गुरु से आत्म ज्ञान इससे शिष्य का चिन निर्मल होता है, लेकिन समस्या आती केवल पूर्ण समर्पण और पूर्ण श्रद्धा से ही प्राप्त किया जा है व्यक्ति का अहंकार। यह अहंकार कहता है कि मैं आज्ञा का सकता हूँ।

पालन नहीं करूँगा। या यह अहंकार कहता है कि गुरु ने जो बाइबिल में एक अत्यंत सुंदर बात जिसेस ने लिखी है कि आदेश दिया है वह सही मानसिक स्थिति में नहीं दिया है 'तुम मुझे देख रहे हो किर भी मुझ पर विश्वास नहीं कर रहे अद्यता केवल मजाक कर रहे हैं अथवा पूर्ण तर्थों की जानकारी हो तो तुम ईश्वर पर कैसे विश्वास करोगे? जिसे तुमने देखा नहीं है। मैं ज्यादा जानकारी रखता हूँ और मेरा कर्तव्य है कि ही नहीं है।'

मैं गुरु को बताऊँ। एक क्षण तो शिष्य अपनी आंतरिक यह भी संभव है कि आपकी इच्छियाँ नेत्र और मस्तिष्क गूस अहंकार जिसे 'इओ' कहा जाता है, उसे बड़ा रहा है और के अन्दर दिव्यता को अनुभव नहीं कर रही है। उस स्थिति में दूसरे क्षण गुरु से निवेदन करता है कि मेरा आंतरिक अहंकार आप क्या करेंगे? आप उनकी पूजा भी करते हैं और साथ में



यह भी जानते हैं कि परमात्मा गुरु के देह में नहीं है, इस में रूप है जो हमारी पृथ्वी में जन्म की कल्पना विन्दु शिष्य को बुझिये की हार नहीं है। संसार में कई लोग कहते हैं हैं और हृष्ण के कपाट की खाल छेते हैं। इस प्रकार कि परमात्मा पृथ्वी नहीं है। संसार में कई व्यक्ति केवल पाप वासनाविक गुरु सद्गुरु ही हमें अधिकार से दूर प्रकृश की और दोष ही देखते हैं यह भव उत्तरांश नवाचा का दिव्य है। और ले जाते हैं और अपनी दिव्यता के द्वारा शिष्य को यदि आप गुरु में कोई दोष देखते हैं तो यह आपको दृष्टि का अनुभव जन्म लाने प्राप्त करते हैं। इस कारण इस युग में हमें गुरु की ओर भी अधिक आवश्यकता है। इसके साथ आवश्यक है कि मैं ऐसा क्यों देख रहा हूँ जब स्वयं ही यह नुख्ले बासे ध्यान रखें और उन्हें आधार बना ले तो आत्मविश्लेषण कर यह कुविनाम अपने मन में छोड़ देने तो यही शिष्य बन सकते हैं भीर सही गुरु शिष्य परमपरा को निभा सकते हैं। एक शिष्य के रूप में निम्न बातों को सदैव ध्यान रखें-

अपनी मानसिक कानियों शोक, विषाद के कारणों की पहचान करें और उसे दूर करने का प्रयत्न करें, न कि हर समय गुरु के सामने अपनी उख्लाओं को ही बताते रहें।

-यदि रखें कि गुरु भी मनुष्य रूप में मानव देह रूप में है इस कारण उनका भी एक व्यक्तित्व है जो आपकी कल्पनाओं के अनुभार नहीं हो।

-गुरु के बाद स्वरूप की ओर ध्यान देने के बजाए उस ऊर्जा की ओर ध्यान कन्दित करें जो गुरु से प्रवाहित हो रही है।

-आत्म विश्लेषण करते समय अपने हृदय को सदैव खुला रखें, उस पर इगो को सवार नहीं होने दें।

-सदैव ध्यान रखें कि गुरु विव्य शक्ति का संचार कर उसकी बुद्धि करते हैं और इस बुद्धि में शिष्य को सदैव तत्पर रहना है।

इसके साथ ही ऐसे गुरुओं से भी सावधान रहें जो कि अपनी गतिसीलीयों को स्वीकार करने में घबराते हैं जो आपकी इच्छाओं की पूर्ति का सही मार्ग और क्रिया बताने के लिए उन इच्छाओं को सोकने के बाटे हैं जो यह शर्व करते हैं कि केवल उनके माध्यम से ही उनके लाला बताई गई क्रिया छापा हो आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है। पृथ्वी सिद्धियों प्राप्त हो सकती हैं। उसके अलावा और कोई मार्ग ही नहीं है।

वासनाव में गुरु का कार्य शिष्य की शिशु की भासि समझते हुए उसे बढ़ा करना है। हर समय हाथ पकड़ कर उसे अपने पास नहीं रखना है। गुरु का कार्य है शिष्य की मानसिक स्वतंत्रता प्रदान करना जिससे वह स्वयं दिव्यता का विकास कर सके।

गुरु की आवश्यकता

गुरु शिष्य संबंधों में और गुरु शिष्य परमपरा में वर्तमान विधिन में चाहे कितना भी व्यक्तिगत भा गया हो अधिक कितनी ही भ्रातियों के गई हो लेकिन यह धूम नात्य है कि आत्म ज्ञान के लिए गुरु की आवश्यकता रहती ही है। हर व्यक्ति ज्ञानवान जानता है। यह बत ठोक उनी तरह को है कि आपके बाहर का साथ दूर में पड़ा है और आपको इसकी जानकारी भी है कि बाहर दूर में है लेकिन यह इच्छा है कि काढ़ तत्काल बना दे कि चाही कहाँ रही है जिसमें अधिक श्रम नहीं करना पड़े। इसलिए गुरु नो अत्यंत आवश्यक है। गुरु अपनी उपस्थिति मात्र से प्रेरणा देते हैं, मानसिक तीर पर जब उम एक महान व्यक्तित्व के देखते हैं तो हमारी यह धारणा और अधिक मनसूत होती है कि हम भी इस प्रकार का आदर्श दिव्य जीवन जो सकते हैं।

व्यक्ति की मानसिकता में जो भैंडह उसे देर रहते हैं और इन संबंधों और अविद्यायों के कारण वह अपनी आत्म विधिन की अनुभव नहीं कर पाता। गुरु वह ऊर्जा की रचना का प्रवाह करते हैं जिसे शिष्य भास्तुरिक रूप से ग्रहण करता है और उसके अनुरूप धीरे-धीरे दूर देने रहते हैं। इस आत्मिक ऊर्जा का प्रवाह केवल गुरु के माध्यम से ही हो सकता है। इसके अलावा दूसरे सब मार्गमें व्यक्ति के 'झो' बीच में अवश्य आ जाना है। इस शक्ति प्रवाह के कारण ही गुरु शिष्य परमपरा सदैव जीवन रहेगी। किसी भी विधिति में स्मास नहीं ही सकती।

गुरु जिन्हे हम सद्गुरु कहते हैं उसका जात्यर्थ है सन+गुरु, सत का वार्ष सत्य और गुरु का जात्यर्थ है भंधकार को दूर करने वाला। इस कारण हम ज्ञान नो कई व्यक्तियों से प्राप्त कर सकते हैं लेकिन सद्गुरु उन सब का समिलित

पूर्व जन्म कृत दोषों का निवारण संभव है

आवश्यकता है

निष्पत्ति देव पुल सन्धास साधना

कल शिष्टाचार के तर्बंध में, श्रीगद गणवत नीता में, विश्वार से उत्तम आया है कि किस प्रकार वह अनुच्छेद-जन्म-जन्म के बंधनों से युक्त है और गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से उन बंधनों को पूर्ण रूप से निवारण कर उन दोषों का शक्ति कर सकता है जिनके कारण से इस जन्म में दुख विषाद, पीड़ा, गम, वादा, टोण, शोक इत्यादि हैं। साथना वह जाधन है जिसके द्वारा शिष्य पूर्ण गुरु फृण प्राप्त कर सकता है, अपने आपको भव लक्ष कर सकता है। अपने जीवन का शुद्ध तंत्रालन कर सकता है। ऐसी ही विशेष साधना संबंधित दिवस के शुभ म्रवता पर-

साधक को कई बार प्रयत्न करने पर भी ज्ञाननाओं सफलता कर पाना है, तब भी साधना में सफलता नहीं मिल पाती। ४ नहीं मिल पाती, इसके कई कारणों में से एक कारण यह भी गुरु के बताये हुए कार्यों ने शिष्यलता बरतना या आज्ञा होता है कि उस जाधक के पिछले जीवन के या इस जीवन के पालना में न्यूनता रखने से भी साधना में सफलता संदिग्ध हो दोष या पाप इतने अधिक होते हैं, कि वह प्रयत्न करने पर भी जाती है। और पिछले जीवन के अधवा वह जीवन के पाप, सफल नहीं हो पाता।

इसके लिए पांच चिन्हन स्पष्ट हैं-१) दीक्षा अद्वि नहीं ली पाती। हुई ही तब भी साधना में सफलता संदिग्ध रहती है, दीक्षा के उपरोक्त पांच कारणों में से प्रथम चार या पहली चार उपरान्त भी यदि गुरु के प्रति आलोचना उनके प्रति भ्रम और बाधाएं तो गुरु की सेवा करने से उनके सानिध्य में रहने से संशय रहता है, तो भी सफलता नहीं मिल पाती २- यो अवश्य उनकी आज्ञा का पालन करने से और निरंतर गुरु मन्त्र साधना काल में अपने इष्ट और गुरु में अन्तर समझाता है, या नप करने से इन चारों दोषों का शमन हो जाता है, पांचवा पूर्ण हवय से गुरु चिन्हन, गुरु पूजा अधवा गुरु मन्त्र जाप नहीं तोष गंभीर होता है व्याकु मन से वचन से और कर्मगत किये

गये कार्यों से दोष व्याप्त हो जाता है, भ्रतः इस पांचवें प्रकार के दोष को दूर करने के लिए अर्थात् पिछले जीवन के दोषों को और बर्तमान जीवन के दोषों को समाप्त करने के लिए यह कृतं मम (अपना नाम उच्चरण करें) गुरु शान्तिः साधना अपने आप में अत्यन्त सशक्त, महत्वपूर्ण और बुर्जम् कल्पण द्वेषु प्रस्तुम् कर रहा हू।

साधना दृष्टि कर्त्ता

इह साधना गुरुवार को की जाती है, और आठ गुरुवार तक यह साधना सम्पन्न होती है। गुरुवार के दिन साधक स्वामन कर पीली धोती धारण कर पूर्व या उत्तर विश्वा की ओर मुङ्ह कर बैठ जाए, सामने पृथ्य मुखेव का अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर धूप स्थापित करे, तथा उनकी भक्तिभाव से पूजा करे। उन्हें निवेद्य समर्पित करे, सुगन्धित अगरबती प्रज्ञवलित करे, धी का दीपक लगावे।

इस साधना में 'रुद्र मंत्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त निखिलेश्वर यंत्र' तथा 'गुरु सदाश्व माला' आवश्यक है। सदाश्व माला धारण द्वेषु है तथा योग का नियमित पूजन आवश्यक है, पूजन गुरु पूजन के अनुसार ही करना है।'

साधना विधान

साधक तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर पी ले और उनके बाद हाथ धो कर प्राणायाम करे और फिर दाहिने हाथ में जल कुकुम, पुष्प लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु देश काली संकीर्त्य अमुक जीवस्य अुभक शर्माऽहम् ममोपरि इह जन्म गत जन्म स्वकृत परकृत-कारित कियमाण कार-विष्वमाण-भूत-प्रेत पिशाचावि भन्न-तन्न-यन्न त्रोटकादिजन्यसकलदोष वाधा निवृति पूर्वक पूर्ण सिंहि वीष्वयुरारोग्येश्वयादि-प्राप्त्यर्थ शमन साधना प्रयोग करिये।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें और गले में पहनी हुई सदाश्व माला से गुरु मंत्र जप करें-

ॐ परमतत्वाय नाशयाय गुरुभ्यो नमः:

एक माला मंत्र जप करने के बाद उस सदाश्व माला को गले में धारण कर ले और पूर्व दिशा की ओर मुङ्ह कर बैठ जाए, सामने गुरु विश्व लकड़ी के बाजोट पर स्थापित करे, उस पर शुद्ध घृत का दीपक लगावे, और हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

ॐ मे पूर्ववत् इह गतः पापम् पापकेनिह कर्मणा इन्द्र

४४ 'नवम्बर' 2002 मंत्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान '30'

साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भजयतु भजयतु मोहयतु नाशयतु भारयतु कर्ति तस्मै प्रवच्छतु और बर्तमान जीवन के दोषों को समाप्त करने के लिए यह कृतं मम (अपना नाम उच्चरण करें) गुरु शान्तिः साधना अपने आप में अत्यन्त सशक्त, महत्वपूर्ण और बुर्जम् कल्पण द्वेषु प्रस्तुम् कर रहा हू।

इसके बाद पूर्व की ओर मुङ्ह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई सदाश्व माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

पूर्वदिशाकृता गुरु मंत्र

ॐ श्री निखिलेश्वरनंदाय श्री ॐ ॥

२. इसके बाद साधक अग्निकोण की ओर मुङ्ह कर बैठ जाए सामने गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और सामने धी का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पापमा पापकेनेह कर्मणा अग्नि साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भजयतु मोहयतु नाशयतु भारयतु कर्ति तस्मै प्रवच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चरण करें) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु।

इसके बाद अग्निकोण की ओर मुङ्ह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई सदाश्व माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

अग्निं दिशा कृता गुरु मंत्र

ॐ ऐं ऐं निखिलेश्वर नंदाय ऐं ऐं नमः ॥

३. इसके बाद साधक दक्षिण दिशा की ओर मुङ्ह कर बैठ जाए, सामने लकड़ी के बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर गुरु विश्व स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और धी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पापमा पापकेनेह कर्मणा दक्षिण नाशयतु साक्षी भूतं निखिलेश्वरा-नदम् मम समस्त दोष पाप भजयतु भजयतु मोहयतु नाशयतु भारयतु कोलं तस्मै प्रवच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चरण करें) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु।

इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुङ्ह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई सदाश्व माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

दक्षिण दिशा कृता गुरु मंत्र

ॐ श्री परमतत्वाय निखिलेश्वराय हीं नमः ॥

४. इसके बाद नैऋत्य दिशा की ओर मुङ्ह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित

ॐ उनकी संक्षिप्त पूजा करे और धी
का बोधक जलावे इसके बाद हाथ में
जल लेकर संकल्प करे।

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा
पापकेनह कर्मणा नैकत्य रक्षराज
साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम
समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु
मोहयतु नाशयतु मारयतु कलि तस्मै
प्रवच्छतु कृतं मम (अपना नाम
उच्चारण करे) गुरुं शान्ति
स्वस्त्ययनचास्तु।

इसके बाद नैकत्य कोण की मुँह किये-
किये ही अपने गले में पहली हुई सूक्ष्म
माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला
मंत्र जप करे।

नैकत्य दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ कल्पी कली निखिलेश्वरनंदाय
कली कली नमः ॥

इसके बाद साधक उत्तर दिशा की
ओर मुँह कर सामने लकड़ी के बाजोट
पर सकेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र
स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे
और धी का दीपक लगावे इसके बाद
हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनह कर्मणा उत्तर
दिशा वरुण साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त
दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलि
तस्मै प्रवच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरुं
शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु।

५. इसके बाद उत्तर दिशा की ओर मुँह किये किये ही
अपने गले में पहली सूक्ष्म माला से निम्न गुरु मंत्र की एक
माला मंत्र जप करे।

उत्तर दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ श्री श्री श्री निखिलेश्वरीं श्री श्री नमः ॥

इसके बाद वायव्य दिशा की ओर मुँह कर सामने लकड़ी
के बाजोट पर सकेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित

करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और धी का दीपक जलावे इसके
बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

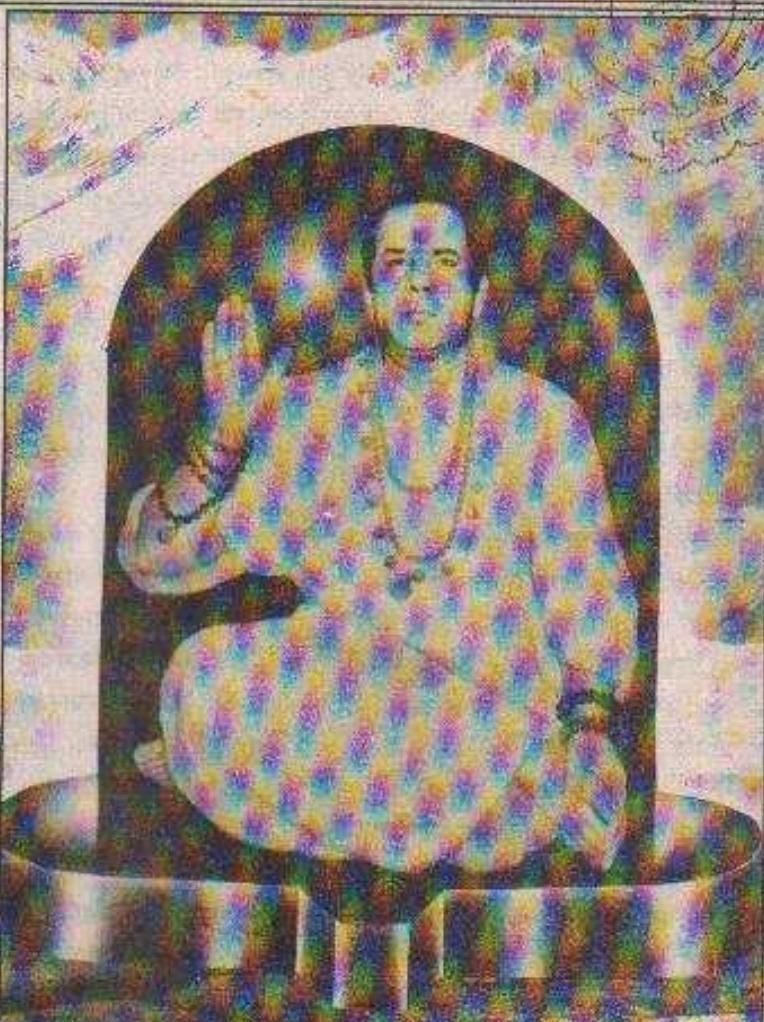
ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनह कर्मणा वायव्य
रक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष
पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलि तस्मै
प्रवच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरुं शान्तिः
स्वस्त्ययनचास्तु।

६. इसके बाद वायव्य कोण की ओर मुँह किये किये ही
अपने गले में पहली हुई सूक्ष्म माला से निम्न गुरु मंत्र जप
करे।

वायव्य दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ऐ ही श्री निखिलेश्वरवायं श्री ही ऐ ॐ ॥

इसके बाद साधक पश्चिम दिशा की ओर मुँह कर सामने



तरक्की के बाजौट पर अफेद वस्त्र (बहुा कर कर) गुरु यान्त स्वस्त्रवापन चास्तु।
गुरु चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और धी ३. इसके बाद साधक अपने आकाश की ओर मुह किये का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प किये हो अपने गले में पहनी हुई सद्गुरु माला से निम्न गुरु करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्या पापकेनेह कर्मणा अनन्त (आकाश) दिशा कृत गुरु मंत्र

यश्चिम सोम विप्रराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मंत्र
मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु
मारयतु कलि तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरुं शान्तिःस्वस्त्रयनंचास्तु।

४. इसके बाद पश्चिम दिशा की ओर मुह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई सद्गुरु माला में निम्न गुरु मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे-

पश्चिमी दिशा कृत गुरु मंत्र

॥४ की निखिलेश्वर नदाय त्रीं ॥

इसके बाद साधक ईशान दिशा की ओर मुह कर सामने लकड़ी के बाजौट पर अफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और धी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इहगत पाप्या पापकेनेह कर्मणा ईशान पृथुरत्न साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलि में प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्रयनंचास्तु।

५. इसके बाद ईशान कोण की ओर मुह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई सद्गुरु माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

ईशान दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ही निखिलेश्वर्यै ही नमः॥

६. इसके बाद ऊपर आकाश (अनन्त) दिशा की ओर मुह कर सामने लकड़ी के बाजौट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और धी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे मपूर्वगत इह गत पाप्या पापकेनेह। कर्मणा अनन्त ब्रह्मा सप्तिराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयु मारयतु कलि तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण

मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे-

॥५ ओ “नि” निखिलेश्वर्यै “नि” नमः॥

७. इसके बाद साधक भूमि की ओर नीचा मुह कर सामने लकड़ी के बाजौट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और धी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्व गत इह गत पाप्या पापकेनेह कर्मणा अधः

नागराज्ञो साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु, मोहयतु नाशयतु मारयतु कलि तस्मै प्रयच्छतु, कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्रयनंचास्तु।

८. इसके बाद साधक भूमि की ओर मुह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई सद्गुरु माला से निम्न गुरु मंत्र जप करे-

अथः (भूमि) दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ निखिल निखिलेश्वर्यै निखिलं नमः।

इसके बाद साधक इस प्रकार दोनों दिशाओं से संबंधित प्रयोग सम्पन्न कर पुनः मूल गुरु मंत्र का एक मंत्र जप पूर्व दिशा की ओर मुह कर करे।

ॐ परमत्वाव नारायणाय गुरुभ्यो नमः

इस प्रकार एक गुरुवार का प्रयोग सम्पन्न होता है। इस प्रकार साधक आठ गुरुवार इसी प्रकार से प्रयोग सम्पन्न कर ले तो यह दुर्लभ और अद्वितीय साधना सम्पन्न हो जाता है और इसके बाद साधक पूर्णतः पवित्र, विद्य, तेजस्वी, प्राणश्चेतना युक्त एव सिद्धाश्रम का अधिकारी होता हुआ, गुरु का अन्यनन्य प्रिय शिष्य हो जाता है, और साथ ही साथ उसके पिछने जीवन और इस जीवन के सभी प्रकार के पाप दोष समाप्त हो जाते हैं।

यह दुर्लभ स्थापन प्रत्येक साधक के लिए अपने आप में अद्वितीय है और साधकों को इस अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

साधना सामग्री ४३०/-

श्रुओं पर वज्र की तरह प्रहर किया जा सकता है

काल भैरव प्रयोग से

किसी भी शुभ कार्य हेतु भैरव स्थापना अवश्य की जाती है, क्योंकि भैरव रक्षाकारक देव है, जहां भैरव की स्थापना पूजा होती है, वहां कार्य में कोई विपत्ति, बाधा नहीं आ सकती, काल भैरवाष्टमी के अवसर पर किया जाने वाला एक अनूठा प्रयोग जिसे संस्कृत जानने वाला और न जानने वाला कोई भी साधक सम्पद्ध कर सकता है।

जो अपने दम पर जिये दुनिया उसी की बहनती है, जो करने का, नये जोखुम उठाने का उत्पाह हर समय हीना अपने जीवन में जोखिम उठा कर कार्य छाय में लेता है, माझ चाहिए नभी सड़-गले जीवन में नये जीवन का निर्माण किसी उच्ची का साथ देता है, और वही अपने जीवन में सफल होता जा सकता है।

जो अपने दम पर जिये दुनिया उसी की बहनती है, जो करने का, नये जोखुम उठाने का उत्पाह हर समय हीना अपने जीवन में जोखिम उठा कर कार्य छाय में लेता है, माझ चाहिए नभी सड़-गले जीवन में नये जीवन का निर्माण किसी उच्ची का साथ देता है, और वही अपने जीवन में सफल होता जा सकता है।

उत्पन्न होते हैं, जो अपने जीवन को एक निश्चित गति पर सम्बंध में विलेखते हैं, कि इस दिन जो साधक भक्तिपूर्वक कोलह के बैल की तरह चलने वेते हैं, उसके शत्रु कैसे होंगे? भैरव साधना सम्बन्ध कर लेता है, भैरव साक्षात् उस साधक जो जीवन से भाग कर कृप जाता है, वहां साधना का नाटक में विराजमान हो जाते हैं।

इतिहास उठा कर केखे तो हमें यह स्वष्टि मालूम पड़ेगा कि भैरव साधना के स्वरूप को मूलरूप से तांत्रिक स्वरूप दे इसने केवल उन्हीं की पूजा की है, जो अपने शत्रुओं से लड़े हैं, विया गया है, जो कि गलत है, यह तो एक सान्त्विक जीवन और जिन्होंने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, चाहे वह राम हो की आवश्यक साधना है, आप अपनी ओर से किसी का बुरा अथवा श्रीकृष्ण, इन्द्रानां हो अथवा महाकाली, इनमें से प्रत्येक नहीं चाहते हैं, लेकिन क्या आप पर कोई प्रह्लाद करेगा तो उसका जबाब नहीं होंगे? क्या आपको व्यर्थ के मुकदमों की आवश्यकता है कि अपने आपको प्रबल बनाया जाए, शत्रु बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तो मुकदमे नहीं लड़ेगे? आधा का वीरता से सामने किया जाए, और शत्रुओं पर विजय क्या आपके विस्तृत तांत्रिक प्रयोग होंगे और घर में तांत्रिक प्रयोगों के कारण जरा, गीड़ा, बीमारी, मृत्यु, शोक, रोग, दुःख रहेगा तो इसे दूर करने का उपाय नहीं करेंगे?

काल भैरव

शिव के अंश, शिव भवरूप, शक्ति सम्पन्न, शक्ति स्वरूप महाकाली सेवक के रूप में भैरव की मान्यता विद्युत है, भैरव जन-जन के देव हैं, जो साधक विशेष मंत्रों को नहीं जानता, पूजा का विशेष विधान नहीं जानता, वह भी भैरव पूजा कर सकता है, और ऐसे एक दो नहीं हजारों लाखों उदाहरण हैं जहां सम्मान्य साधक को भैरव कृपा से विशेष समर्पण होता है।

इकाकारक देव

भैरव की मान्यता मूल रूप से रक्षाकारक देव के रूप में ही है, बहे से बड़े यज्ञ में पहले भैरव स्थापना की जाती है, जिससे कि भैरव अपने शक्ति से दसों दिशाओं को आबद्ध कर देने हैं कि उस्मृण कार्य में कोई विधि उपस्थित नहीं हो सकता है, भूत, पिशाच, प्रेत, तांत्रिक प्रयोग केसा भी प्रबल प्रह्लाद किया जाए तो जहां भैरव की उपस्थिति है, वहां से यह प्रह्लाद उलटे लौट आते हैं और इस प्रकार के गलत तांत्रिक प्रयोग जो करने वालों का ही नाश कर देने हैं।

भैरव पूजा का विधान अत्यन्त भरल है, और आज पाठकों द्वारा काल भैरव के कुछ सरल प्रयोग स्वष्टि किये जा रहे हैं जिनमें सरलता से ही, इनकी सिद्धि और उपयोगिता है।

काल भैरवाष्टी

दिनांक २३-११-२००२ गुरुवार मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को काल भैरवाष्टी दिवस है, और इस दिवस की मान्यता के

यदि किसी कालसंवेद भैरव अष्टमी के दिन साधना सम्पन्न नहीं कर सकते तो वह साधना कृष्णप्रक्ष की अष्टमी तथा रविवार सकती।

यदि किसी कालसंवेद भैरव अष्टमी के दिन साधना सम्पन्न

नहीं कर सकते तो वह साधना कृष्णप्रक्ष की अष्टमी तथा रविवार सकती।

को भी सम्पन्न की जा सकती है।

भैरव साधना के स्वरूप को मूलरूप से तांत्रिक स्वरूप दे इसने केवल उन्हीं की पूजा की है, जो अपने शत्रुओं से लड़े हैं, विया गया है, जो कि गलत है, यह तो एक सान्त्विक जीवन की आवश्यक साधना है, आप अपनी ओर से किसी का बुरा अथवा श्रीकृष्ण, इन्द्रानां हो अथवा महाकाली, इनमें से प्रत्येक नहीं चाहते हैं, लेकिन क्या आप पर कोई प्रह्लाद करेगा तो उसका जबाब नहीं होंगे? क्या आपको व्यर्थ के मुकदमों की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तो मुकदमे नहीं लड़ेगे? क्या आपके विस्तृत तांत्रिक प्रयोग होंगे और घर में तांत्रिक प्रयोगों के कारण जरा, गीड़ा, बीमारी, मृत्यु, शोक, रोग, दुःख रहेगा तो इसे दूर करने का उपाय नहीं करेंगे?

जीवन को श्रेष्ठ रूप से जीने के लिए इन सब बाधाओं को हटाना आवश्यक है, और इसके लिए सरल से सरल अचूक से अचूक प्रयोग काल भैरव प्रयोग ही है, जो आपके हाथ में शक्ति का, उत्साह का वह वज्र यथा सकते हैं, जिसके बलबूते पर आप अपना जीवन अपनी इच्छानुसार जी सकते हैं, आपने व्यक्तिगत को पराक्रमी बना सकते हैं, अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सकते हैं।

मूल रूप से चार बाधाएं व्यक्ति के जीवन को दीमक की तरह खा रही हैं, ये हैं-

१. शत्रु बाधा, २. शोक, बीमारी ३. मुकदमेबाजी ४. तांत्रिक बाधा, अथ आदि।

इनमें से कोई भी एक बाधा रहने पर व्यक्ति अपना जीवन सही ढंग से नहीं जी सकता, इसके चक्र में उलझता हुआ अपनी शक्ति क्षीण करता रहा है, काल भैरवाष्टी पर इन्हीं चार बाधाओं के निवारण हेतु किया जाने वाले विशेष साबर प्रयोग पाठकों के लिए प्रस्तुत किये जा रहे हैं, इन महत्वपूर्ण प्रयोगों को निष्ठा से सम्पन्न कर तत्काल प्रभाव का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इनमें से प्रत्येक प्रयोग के लिए अलग-अलग मंत्र विधान है, कुछ विशेष सामग्री है, साधक जिस बाधा विशेष का निवारण करना चाहता है, उससे सम्बंधित प्रयोग काल भैरवाष्टी को विशेष रूप से सम्पन्न करें, साथ ही ये प्रयोग वह किसी भी रविवार को कर सकता है। भैरव साबर मंत्र



1

दिनांक : नवम्बर 2002
 कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री
 भेजना है, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा दूंगा।
 मेरा नाम :
 प्राप्त : पोस्ट :
 जिला : राज्य :
 संस्कृत का नाम

प्रिय सम्पादक जी,

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियाँ वी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोरटमैन को घनराशि दे कर छुड़ा दूंगा पुस्तकों के नाम –

दिनांक : नवम्बर 2002

2

मेरा नाम / पता :

नोट : 300/- से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मराने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

(एक संक्षेप ७०% पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी,

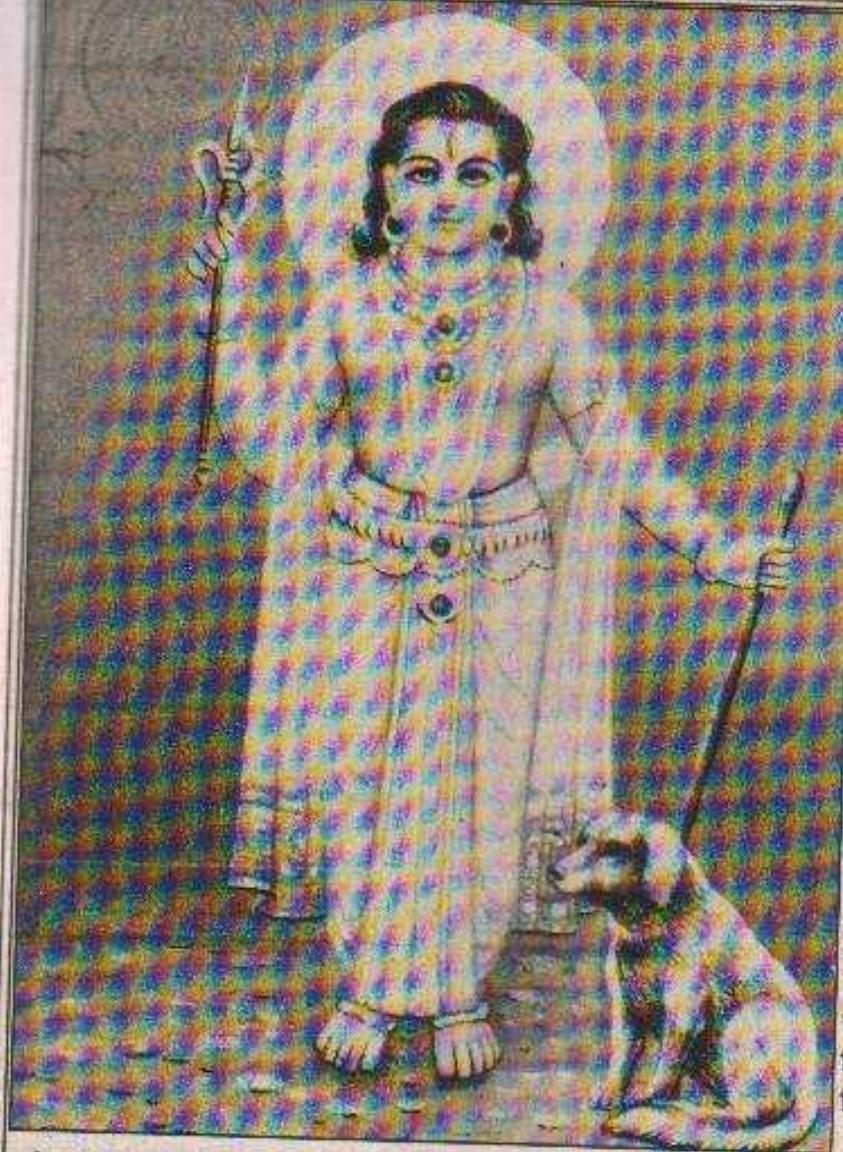
मुझे उपहार स्वरूप **सौआन्यसिद्धियंत्र** 390/- (300/- - न्यौलावर तथा डाक व्यय 90/-) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोरटमैन को घनराशि दे कर छुड़ा दूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 प्रतिकारे निःशुल्क भेजी जायेंगी।

दिनांक : नवम्बर 2002

3

मेरा नाम :

पूरा पता :



प्रयोग सम्पन्न करने से ही उसे जीवन में भैरव रक्षा का पूर्ण वर निश्चित रूप से प्राप्त हो जाता है।

१. शत्रु खाथा निवारण प्रयोग

भैरवाणी के दिन प्रातः साथक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें सिन्दूर का तिलक लगायें, अपने सामने एक भिंडी की ढेरी बना कर उस पर पानी छिड़के फिर सिन्दूर छिड़के और उस पर 'काल भैरव गुटिका' स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर 'पांच आक्रान्त चक्र' तिल की ढेरियां बना कर रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़के, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुण्जन का धूप तथा अगरबत्ती इन्यादि जला दें,

का जप कर पूजा में रखे हुए धूप और दीप से भैरव आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब

सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाढ़ दें, और उस पर

भारी

पत्थर

रख दें। आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मंत्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति कीण हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं।

साधना सम्पन्नी-२१०/-

अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

अब एक पात्र में अरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें छोड़ा तेल ढालें, थोड़ा सिन्दूर ढाल कर उसे मिला दें, इस भित्रण को निम्न भैरव मंत्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अधित करते रहें।

मंत्र

विभूति-भूमि नाशाय, दुष्ट-
सत्य-कारक, महा भैरवे नमः।
सर्व-बुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-
सिद्धि कुरु। ॐ काल-भैरो,
कटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-
भैरव महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व सिद्धि भवित्।

ॐ काल भैरव, अशान-
भैरव, काल रूप काल भैरव!
भैरो वैरी तेरो आहार रे। काढ़ि
करेजा चख करो कट-कट। ॐ
काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-
भैरो! महा-भैरव महा-भय-
विनाशनं देवता। सर्व-
सिद्धिभवित्।

इस प्रकार ५१ बार इस मंत्र

४. काल भैरवः रोग नाश प्रयोग

बहु प्रयोग भी प्राप्त, ही सम्पन्न किया जाना है। इसमें यदि भाष्यक में प्रयोग करना चाहिए तो उपर्युक्त चिन्ह पर सिन्दूर से स्वयं की ढोमारी नाश हेतु प्रयोग करना है, तो उपर्युक्त नाम का लिखा जाए।

संकल्प ले और यदि तूरंग के नाम से प्रयोग करना है, तो उपर्युक्त नाम का लिखा जाए। अब उपर्युक्त सामने “काल भैरव महाशक्ति” स्थापित करें, संकल्प ले और यदि तूरंग के नाम से प्रयोग करना है, तो उपर्युक्त सामने “एक नाशचक्र” स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन निति के नाम का लिखा जाना है।

संकल्प

ॐ अग्न्य गी बटुक भैरव-मन्त्रानश्य मण्डन ऋषि; वृश्य; मानुका छन्दः, श्री बटुक, भैरवो दवता, मम्पिति-सिद्धयथ विनियोगः।

अपने सामने एक बात्र में ‘काल भैरव महामन्त्र’ स्थापित कर दें, वार मुद्रा में बठ कर मुद्रा उपर कर मंत्र जप प्रारम्भ करें-

उम पर सिन्दूर बहाएं तथा एक दोपक जलाएं तिसमें जार बनियो मंत्र
हों, तथा उक्तिग्रन्थ की ओर भूमि कर दें, प्रथम यज्ञ के सामने
एष्ट, लड्डू, लिन्डू, लोभ तथा तुष्टि जला, जला तेज अस्ति तथा
मंत्र जप प्रारम्भ करें, मंत्र जप के पश्चात् जल से भ्रंत होप फूल का संक
लाल कपड़े से बाय दें।

अब एक पात्र में तितल ने उसमें सामने स्तुपारी लखे, तथा
सिन्मंत्र का जप करना है, तब तितल उक्तिग्रन्थ की देखा जाए
और फैलने रहे-

ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो महाभैरव-विनाशने
देवता-सर्व-सिद्धिभवित्। शोक-दुःख-क्षयकरं निरन्मनं, उत्सुक हो जाना है, मुक्तये मैं विजय प्राप्त होती है, मंत्र जप
निराकारं नाराशणं, भक्ति-पूर्ण त्वं महेशं। सर्व-काम-
सिद्धिभवित्। काल-भैरव, भूषण-वाहनं काल जन्मा रथं
च, भैरव गुरुं। महात्मनः वोगिना महा-देव-स्वरूपं। सर्व
सिद्धिभवित्। अं काल-भैरो, बटुक भैरो भूत-भैरो! महा-
भैरव महा-भैरव-विनाशने दवता। सर्व-सिद्धिभवित्।

इस प्रकार १०८ बार मंत्र जप के पश्चात् जलाने सूपारी
स्थीर विशाओं में फैल दे, भूमि दवता पूजा में प्रयोग जला,
काजे ढोए से सोसी की भूजा पर लाभ दे अथवा जले में पहना
प्रयोग से दूर होने देख गये हैं।

आधना आमदी-२४०

३. मुकुवमा-वादविताव में विजय तथा प्रयोग

यह प्रयोग आधक संवेदकाल की ही स्पृह वर्ते। पूजा स्थान

में पूर्ण रूप ने जानित होना। नीति संस्कृत विशेष कार्य के

बहु प्रयोग भी प्राप्त, ही सम्पन्न किया जाना है। इसमें यदि भाष्यक में प्रयोग करना चाहिए तो उपर्युक्त चिन्ह पर सिन्दूर से

स्वयं की ढोमारी नाश हेतु प्रयोग करना है, तो उपर्युक्त नाम का लिखा जाए।

अब उपर्युक्त सामने “काल भैरव महाशक्ति” स्थापित करें,

गंगा के चारों ओर शिवतुर्गुरुस्त्रवात्मना दें, सामने “एक

नाशचक्र” स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन

निति के नाम का लिखा जाना है।

इस्तेक पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़े।

तथा वह कान्ज तिसमें कार्य निर्खा है, भैरव शंख के नीचे रख

दें, वार मुद्रा में बठ कर मुद्रा उपर कर मंत्र जप प्रारम्भ करें-

अपने सामने एक बात्र में ‘काल भैरव महामन्त्र’ स्थापित कर दें, वार मुद्रा में बठ कर मुद्रा उपर कर मंत्र जप प्रारम्भ करें-

उम पर सिन्दूर बहाएं तथा एक दोपक जलाएं तिसमें जार बनियो मंत्र

ओं आं ही ही ही ही। (अमुक) मारय मारय, उच्चाटय

एष्ट, लड्डू, लिन्डू, लोभ तथा तुष्टि जला, जला तेज अस्ति तथा

उच्चाटय, मोहय मोहय, वंश कुम कुम। सर्वार्थकस्य सिद्धि-

मंत्र जप प्रारम्भ करें, मंत्र जप के पश्चात् जल से भ्रंत होप फूल का संक

रथं त्वं महा-काल! काल-भैरव महा-देव-स्वरूप त्वं।

सर्व सिद्धिभवेत्! अं काल भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-

भैरव महा-भैरव विनाशने देवता। सर्व सिद्धिभवित्!

५. बार मंत्र जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को

काल कपड़े में बांध कर अपने बैग, बीपफकेस, मैं रख दें और

किसी भी मुकुटम के निपाए जाने समय बैग अपने पास रखें।

आधना सामदी-३००/-

इसमें सम्बद्ध उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता

स्वयं प्रयोग प्रेत जन्मपत्र कर ही जान सकते हैं कि इन

प्रयोगों में किनमा अधिक प्रभाव है, काल भैरव प्रसन्न होने पर

साधन को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी

रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभ्यु प्रदान करते हैं,

काजे ढोए से सोसी की भूजा पर लाभ दे अथवा जले में पहना
भावक की शक्ति में वृद्धि हो कर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो

जाता है।

भैरवाहमा अभ्यु रविवार को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब

तक पूर्ण भूमि भूमि सम्पन्न करते रहना चाहिए।

क्या ग्रह इतने अधिक प्रभावशाली होते हैं?



नवग्रह रहस्य विवेचन एवं सम्पूर्ण पूजा विद्यान्

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' भाषात जो कुछ पिण्ड में भवति शरीर में है, वही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है, और जो कुछ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है वही शरीर में है, यही ग्रहों का और शरीर का सीधा सम्बन्ध है।

यह किसने प्रभावशाली होते हैं? कौन सा ग्रह किम गुण का, किस क्षेत्र का विशेष कारक है? प्रत्येक ग्रह के देवता कौन है? प्रत्येक ग्रह का ध्यान, मंत्र क्या है? तथा प्रत्येक ग्रह का बीज मंत्र क्या है?

इन्हीं सब विशेष वातों का पूर्ण ग्राम्योत्तम विवेचन आप सब के लिए पहली बार.....

यह बात न केवल सिद्ध हो सूक्ष्मी है, कि सम्पूर्ण जगत् कुल विशेष नियमों-उपनियमों में बधा है, प्रत्येक मनस्य के नीवन में जो विशेष घटनाएं घटित होती है, उनपर ग्रहों का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है, प्रत्येक ग्रह का पृथक् पर रहने वाली प्रत्येक वस्तु के साथ जो आकर्षण विकरण ग्रहों के प्रभाव से बनता है, उसके प्रभाव से कोई बच नहीं सकता।

नके देन वाले लोग नीवन में घटने वाली घटनाओं को मनस्य की बुद्धि, उसके भाग्य, ईश्वर की इच्छा अथवा जीवन के नियमों से जोड़ते हैं, तो फिर ग्रह अपना प्रभाव क्यों ढालते हैं, किसी के जीवन में क्यों विशेष घटनाएं घटित होती रहती हैं।

ज्योतिष और ग्रह

ज्योतिष का आधार ही ग्रह है, और ग्रहों की स्थिति उनकी गति, उनकी ब्रह्मता, उनके प्रभाव आदि की गणना कर ही भवित्याकाल का कथन किया जाता है, और यह शुद्ध रूप से गणित की जाए तो फलादेश में किसी भी प्रकार की गृह शोने की सम्भावना नहीं रहती है।

ग्रहों की गति एवं उसके प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में तो परिका कायात्तिय में एक युग्म गणित विभाग ही स्पष्टित किया हुआ है, जो कि निरंतर विषय प्रबोध की गणनाएं, आकृता मण्डल में स्थित ग्रहों की गति, राशि में घटने वाली महावपुर्ण घटनाओं का ग्रहों के साथ

सम्बन्ध इत्यादि के बारे में निरंतर गणना कर रहा है, और इस प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है। सूर्य का सम्बन्ध नेत्रों से भी है, सम्बन्ध में जो विशेष तथ्य जात हुए हैं, उन्हें निकट भविष्य में और यह सूर्य-चन्द्र-मण्डल, अपाता, समृद्ध इत्यादि के भाष्यमें भी पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

आह-वर्तमान संदर्भ में

वर्तमान जीवन में क्यों समस्याएं इतनी अधिक बढ़ रही हैं? आपस में स्नेह की कमी, धोखा-धर्य, रोगों में वृद्धि, मानसिक अशांति इत्यादि घटनाएं तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अंग ही बन गई हैं, इसका क्या कारण है? बुद्धि तो बढ़ती ही जा रही है, सोचने के लिए एवं गणना करने के लिए कम्प्यूटर तक आ गये हैं, फिर भी समस्याएं सुलझने के बजाय उलझती ही जाती हैं।

इन सबका मूल कारण यहाँ की उपेक्षा ही है, हमने उस आधार भूत तथ्य को ही छोड़ दिया है, जो कि जीवन की गति को निर्धारित करता है, पल-पल जिन यहाँ का प्रभाव उसके जीवन की घटनाओं, उसके मन, उसके विचारों का पड़ता है, यातावरण जिस प्रकार से यहाँ से प्रभावित होता है, उसे ही छोड़ दिया है।

इसीलिए शास्त्रों में प्रत्येक विशेष कार्य, यह तथा विवाह हो, ग्रह प्रवेश हो, भूमि पूजा हो, अध्यात्म कोई अन्य विशेष धार्मिक कार्य हो, उसके पछले ही ग्रह शांति एवं नवग्रहों की पूजा अवश्य सम्पन्न की जाती है, और यह प्रार्थना की जाती है, कि अमुक कार्य भली भाँति सम्पन्न हो।

समस्त ग्रह-देवताओं का अलग-अलग अस्तित्व है, सब का प्रभाव क्षेत्र, शक्ति, क्रिया-स्वरूप, इत्यादि अलग-अलग बटा हुआ है, और जब व्यक्ति, वस्तु, नक्षत्र-मण्डल, इत्यादि, से पृथ्वी प्रभावित हो रही है, तब तक इन ग्रह-देवताओं के प्रभाव को किसी भी रूप में अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्रत्येक शरीर की उत्पत्ति के समय, और इस उत्पत्ति में दो समय है- प्रथम गर्भाधान का और दूसरा जन्म लेने का, सूर्य तथा दूसरे शनि आदि यहाँ के पृथ्वी के साथ उस प्रदेश में, उसके जन्मदाताओं पर यहाँ का जैसा सम्बन्ध होता है, और जिस प्रकार की ग्रह गति उस समय होती है, उसका निश्चित रूप से उस पर प्रभाव पड़ता है, और यह प्रभाव किसी न

प्रत्येक ग्रह के दो स्वरूप द्वारा है, प्रथम स्वरूप तो ग्रह जो विखाई देता है, और दूसरा उस ग्रह-देवता स्वरूप का रूप, ये दोनों किसी भी रूप में अलग-अलग नहीं हैं, यदि प्रति रूप में उस ग्रह-देवता के सम्बन्ध में पूजा-पाठ, नप-साधना सम्पन्न की जाए और इस भाव से की जाए कि अमुक ग्रह मुझ पर पूर्ण रूप से प्रसन्न हो कर मुझे आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से बहुत कुछ उसका विपरीत प्रभाव शान्त हो जाता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे पूरे शास्त्रों में यह उक्ति 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्मण्डे' प्रसिद्ध है, अर्थात् जो कुछ पिण्ड अर्थात् शरीर में है, वही सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में है और जो सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में है वही शरीर में भी है, इससे अधिक यहाँ तथा शरीर का परस्पर विवेचन क्या हो सकता है?

इसीलिए ग्रह शान्ति इत्यादि महत्व को समझते हुए, विपरीत यहाँ के बुरे प्रभाव को शान्त करते हुए तथा श्रेष्ठ यहाँ के उत्तम प्रभाव को बलशाली बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को जो कि जप-साधना इत्यादि में योड़ी भी सूचि रखता है, और अपने जीवन को उठाना चाहता है, उसे यहाँ की पूजा, साधना, मंत्र जप अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, यंत्र यहाँ के चेतना स्वरूप का सूक्ष्म स्वरूप है, इसीलिए प्रत्येक कार्य में यंत्र रचना तथा यंत्र स्थापना का विशेष महत्व है।

पत्रिका पाठों की सुविधा हेतु आगे प्रत्येक ग्रह के ज्ञान, मंत्र, उसके स्वरूप आदि के सम्बन्ध में विवेचन किया जा रहा है, जिससे कि सम्बन्धित ग्रह के सम्बन्ध में पाठक पूजा इत्यादि सम्पन्न कर सके।

सूर्य

सूर्य को ग्रह राज अर्थात् यहाँ का स्वामी कहा गया है, इसके अधिदेवता व प्रत्यधि देवता अनिन है।

दृश्यान

जवा कुसुम के समान हलकी रक्त लालिमा लिये हुए, दोनों हाथों में कमल तथा सिन्दूर के समान वस्त्र, आभूषण और माला धारण किये हुए, सम्पूर्ण जगत के अन्यकार को धू करने वाले, चन्द्रमा तथा अनिन को प्रकाशित करने वाले, सात अश्वों के विशेष रथ पर आरूढ हो कर, सूर्य ब्रह्मण्ड को अपने आकर्षण में लिये हुए सूर्य देव! आपको साधक का बार-बार नमस्कार है!

ग्रह प्रभाव-प्रत्यक्ष उदाहरण

यदि वैज्ञानिक रूप से यहाँ के सम्बन्ध में विवेचन की जाए, तो सूर्य का उदाहरण तो हमारे सामने है, सूर्य की प्रत्येक स्थिति का प्रभाव इस पृथ्वी पर और इस पर रहने वाले

नवग्रह मंडल



बीज मंत्र

॥ॐ ह्री ह्री सूर्याय नमः॥

चन्द्रमा

सौम्यता, सञ्जनता, शील, संकोच, सुन्दरता, जल इत्यादि का यह कारक ग्रह है, इसकी अधिदेवी उमादेवी तथा प्रत्यधिदेवता जल अर्थात् वसुण है।

हृदयान

बूध के समान श्वेत शरीर पर ज्वेत वस्त्र एवं माला तथा मोलियों का हार पहिने हुए हैं, हे तेज! आप अपनी अमृत किरणों से तीनों लोकों को सीच रहे हैं, तथा एक हाथ में गदा तथा वृष्टरा वर मुद्रा में है, वस घोड़ों के श्री चक्र रथ पर आरूढ़ आपकी महिमा अन्यन्त विशाल है, आप को इस साधक का प्रणाम!

बीज मंत्र

॥ॐ है कली सोमाय नमः॥

मंगला

मंगल वीरता, नेतृत्व, कृषि, भूमि, प्लाटि, जर्मीन इत्यादि खरीदने, लॉटरी, शिक्षा, भवन निर्माण, कार्य कुशलता इत्यादि का विशेषकारक ग्रह है, इसके अधिदेवता स्कन्द तथा प्रत्यधिदेवता पृथ्वी है।

हृदयान

हे पृथ्वी पुत्र! विशृत के समान तीव्र प्रकाश-युक्त, रक्तवर्णीय, मेष वाहन पर आरूढ़, शक्ति नामक अस्त्र धारण किये हुए, सम्पूर्ण रूप से कान्ति-युक्त, देवमंगल! आपको मन, वचन, कर्म से प्रणाम करता हूं॥

बीज मंत्र

॥ॐ है श्री मंगलाय नमः॥

बूध

यह विशेष ग्रह व्यापार, लेन-देन, खरीदना, बेचना, वाणिज्य, बृद्धि, धन-संचय आदि का कारक ग्रह है, इसके अधिदेवता नारायण तथा प्रत्यधिदेवता श्री विष्णु हैं।

हृदयान

सौम्य मूर्ति, सिंह पर आरूढ़, पीले वस्त्र धारण किये हुए, सोने के समान रंग वाले, अपने चारों हाथों में ढाल, तथा वर और खड़ग धारण किये हुए सौम्य मूर्ति श्री बूध को प्रणाम!

बीज मंत्र

॥ॐ है स्त्री श्री बूधाय नमः॥

बृहस्पति

यह विशिष्ट ग्रह शिक्षा, ज्ञान, धार्मिक कार्य, लेखन, मस्तिष्क, नेतृत्व, प्रधान कार्य आदि का विशेष कारक ग्रह है, इसके अधिदेवता ब्रह्मा, तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं।

हृदयान

पीताम्बर धारण किये हुए, कमल पर विराजमान, अपने चारों हाथों में रुद्राक्ष, वर मुद्रा, शिला और दगड़ धारण किये हुए, देवों के वेव ब्रहस्पति! आप जगत् कारक हैं!

बीज मंत्र

॥ॐ है कली ब्रहस्पतये नमः॥

शुक्र

सुदूरना, स्वच्छता, शारीरिक संगठन, तेजस्विता, विद्या-यात्रा, भोग-विनास, आनन्द, प्रेम, सम्बन्ध, विभिन्न वर्णियों से सम्पर्क, संगीत आदि का विशेष कारक ग्रह शुक्र है, इसके अधिदेवता इन्द्र तथा प्रत्यधिदेवता चन्द्रमा है।

हृद्यान

अमल पर स्थित उवेत वर्णीय, रघुगोवीय, इवेत वर्ण धारण किये हुए तथा अपने चार हाथों में स्त्राव, वर्षमाता, गिरा और वण्ड धारण किये हुए शुक्र देव! आपकी साधन उपराजन में जीवन में सभी जानन्दों की प्राप्ति सम्भव हो, आपको लौज मंत्र

लौज मंत्र

॥ॐ हीं श्रीं शुक्रायै नमः॥

शनि

शनि देव व्यापार विशेष रूप से लोहा, तिल, तेल, उत्त, मशोनरी आदि के कारक हैं, साथ ही छुन-बेट, हिंडा, चतुर्ना, क्रोध इन्द्रादि के कारक ग्रह हैं, इनके अधिदेवता यमनात तथा प्रत्यधिदेवता प्रजापति हैं।

हृद्यान

कृष्ण वर्णीय, कृष्ण वर्ण विषय हुए, गीध पर आस्त अपने चार हाथों में बाण, वर, शूल और धनुष धारण किये हुए हैं जिनके आपके कृष्ण के बिना कोई भी कार्य पूरा होना सम्भव नहीं है, मैरे जीवन की बाधा रहित बनाए, इसे हेतु उस साधक का आपको बाहर बाहर प्रणाम!

लौज मंत्र

॥ॐ ऐं हीं श्रीं शनैश्चराय नमः॥

राहु

यह विशेष ग्रह बाढ़न, अस्थिरता, राजनीतिक भविष्य, कृतनीनि, धन, नेतृत्व, उदर रोग, आलच्य आदि का विशेष कारक ग्रह है, हमें अधिक व्यापक कान, भ्रान्ति व्यापक कान।

हृद्यान

सिंह पर आस्त, कृष्ण वर्णीय, काले कर्म धारण किये हुए, मनवाणियनि अपने चार हाथों में खड़ा, वर, शूल शूल तथा धारण किये हुए, काले भय निवारण करने वाले, शहु देव का साधक का प्रणाम।

लौज मंत्र

॥ॐ ऐं हीं शाहवे नमः।

केतु

केतु धन-नाभ, ग्रह-विकृप्ति, विशेष व्याप्ति, नश, बहुमात्रा, ग्रवधूमि से दूसरे लक्षण प्राप्ति करने, अलेखन, मशीनरी जानों में प्रवृत्तिता आदि का कारक ग्रह है, जिसके अधिदेवता विक्रमपत्र तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा है।

हृद्यान

अमल पर स्थित उवेत वर्णीय, रघुगोवीय, इवेत वर्ण धारण किये हुए तथा अपने चार हाथों में स्त्राव, वर्षमाता, गिरा और वण्ड धारण किये हुए शुक्र देव! आपकी साधन उपराजन में जीवन में सभी जानन्दों की प्राप्ति सम्भव हो, आपको लौज मंत्र

॥ केतुवे ऐं सी स्वाशा ॥

ब्रह्म वाधा तिवारण

आप तिर गये विवरण से शहों के सम्बन्ध में जो सन्तुष्ट जानकारी मिलती है, उससे यह तो स्पष्ट हो ही जाता है, कि प्रत्येक ग्रह का, चाहे वह अच्छा ग्रह हो, अयवा बुरा, उसका एक विशेष प्रभाव विवरण पड़ता है, और प्रत्येक ग्रह जीवन में महत्वपूर्ण है, उनमें दून, जीवन के निः तथा कानों में पूर्ण सफलता के लिए यह आवश्यक है, कि अच्छे शहों के प्रभाव को बढ़ावा दाए, तथा खुगब शहों के दुष्प्रभाव को शान्त किया जाए।

शहों का जो कारक प्रभाव है और जो उनका विशेष भूमि है, उन सम्बन्ध में कोई समस्या आने पर उस ग्रह की पूजा, उपायना, साधन, विशेष रूप से करनी चाहिए, इस सम्बन्ध में प्रत्येक ग्रह तो सम्बन्धित यंत्र जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, की स्थापना कर उससे सम्बन्धित ध्यान एवं मंत्र जप निवृत्ति रूप से अवश्य करना चाहिए, यंत्र ही शहों के चेतना प्रवृत्ति रूप का घृण्य स्वरूप है, जिस ग्रह से सम्बन्धित यंत्र पूजा करनी ही, उससे सम्बन्धित दिन को उस यंत्र की स्थापना कर मत जप करना चाहिए।

यह लिखी व्याप्ति के जीवन में बहुत अधिक परेशानियाँ हैं, जैसा कि बाधा, विपरीत विशेषियाँ आ रही हैं, तो उसे अपने पूजा रूप में शंख मिठा, लाल-प्रतिष्ठा युक्त नवशह यंत्र स्थापित करना चाहिए। आवश्यकता इन बातों है कि यह नवशह यंत्र पूरी रूप से प्रिय हो, इसकी पूजा शुभवार से प्रारंभ करनी चाहिए, पूजा का विधान उपराजन स्वरूप है, गुरु पूजन के पश्चात यंत्र स्थापित होने पर यह उवेत का ध्यान कर, उससे सम्बन्धित लौज मंत्र का जप किया जाए भाला से सम्पन्न कर सकते हैं, यह जप कम से कम एक भाला करें।

साधना सम्पर्की-२४०/-

कृष्ण लौज



शिष्य धर्म

त्वं खिचित्तं भवतां वदेत देवाभवातोतु भवतं सदैत ।

ज्ञानार्थं गूलं मपरं महितां चिह्नसि शिष्यत्वं एव भवतां गनवद् नमामि ॥

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का अप्रत्यक्ष गति शिष्य होता है । सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यहि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शब्द शिष्य है । शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह नक्ष से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो माँ के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देखु करके अनुरूप बनता है ।

* गुरु चरणों के अतिरिक्त शिष्य के लिए कोई तीर्थ नहीं होता, उसीं भाव से वह गुरु चरणोदक को भी अभूत समझ कर पान करता है ।

* गुरु और गुरु कार्य को लगाते गाते को कहीं भाव नहीं छिनती । इसीलिए अपनी भाग्य अनुग्रह गुरु कार्य से भी बदलाव नहीं होते हैं ।

* शिष्यता वश मतलब और एक भाव अर्थ होता है तबतार तंत्र धार राह चलता ।

* व्यधा और व्यर्द्ध की आपौर्णिमा जै ज चढ़कर बुरुदैव चल द्वे ध्याय उत्तर चलते । बुरुदैव की आपौर्णिमा उत्तर चिंद्र चरणे द्वे हिंदू व्यर्द्ध भूम्य आपौर्णिमा चलते । व्यधा और व्यर्द्ध द्वी चलते हैं, उत्तर चिंद्र द्वी चलता है, उत्तर चिंद्र उत्तर की वर्द्ध रस्तालौरी पर भी पड़ता है ।

* शिष्य को नित्य एक नियमित समय पर नियमित संख्या में गुरु मंत्र का साथना रूप में जप अवश्य करना चाहिए, यदि वह ऐसा करता है, तो उसके जठर, जठरातरीय दोषों और पापों का क्षय होता है तथा चित्र लिपि हो जाता है, जिससे ज्ञान और खिंडि की ओर प्राप्ति हो पाती है । शिष्य को यथासंभव अधिक से अधिक जब भी समय मिले, गुरु मंत्र का जप करते ही यहना चाहिए ।

* शिष्य के जीवन में चरित्र ही सफलता और असफलता का होतक है । चरित्र सफल है तो जीवन सफलता की ओर बढ़ेगा, किंतु चरित्र अग्र असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य घतन की ओर उत्तमुप्र होगा ।

* शिष्य का महत्व इसमें बहों कि वह किताने वर्ष जीवित रहता है । अपेक्षु महत्व तो इसका है कि तुम फिस रक्कां में रोगित हो ।

* यदि तुम्हारी साधना करने की तीव्र उत्कान्ता है तो भगवान उसके पास सद्गुरु मेज देते हैं । सद्गुरु के लिए साधकों को चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

* सम्भागीय वीर शिष्य तो फल लंसाम का बोझा उठाकर भी लद्गुरु की ओर प्रवास भाव से लिहारता है ।

* जैसे दर्पण को स्वच्छ करने पर उसमें मुँह दिखलाई देते लगता है, उसी प्रकार हृदय के स्वच्छ होते ही उसमें सद्गुरु का रूप दिखलाई देते लगता है ।

गुरुवारी

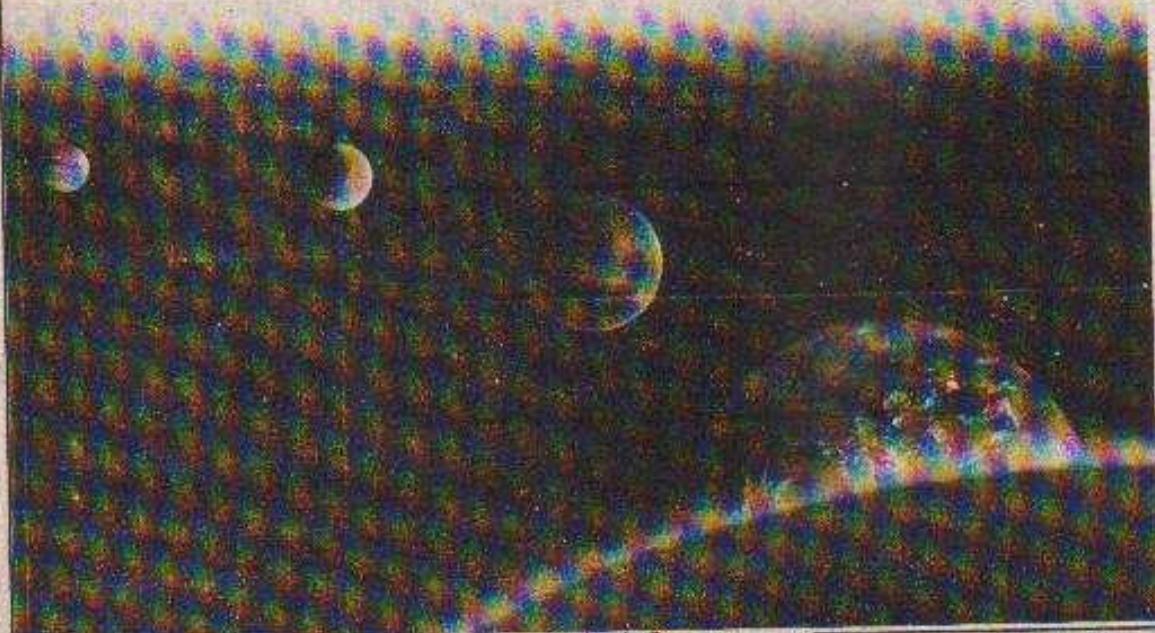


* शिष्य ऐसा हो, जो कक्षन बांध कर निकले, जो समाज की परवाह नहीं करे, जो त्रुतीयों को हेतु सके, जिसकी आंखों में तेष्टर हों... अग्नि रुपुलिंग हो, जिसके हाथों में वज्र की तरह प्रहार करने की क्षमता हो, और जो सही अर्थों में गुरु चरणों में समर्पित होने की भाववा रखता हो।

* रामर्पण हाथ जोड़ने से नहीं हो सकता और न ही गुरु की आश्ती उतारने से हो सकता है। रामर्पण का तात्पर्य है, कि नुस्खा जो आज्ञा है, उसका बिला बानुच किए पालन किया जाए।

* जो भी बने अद्वितीय बने, सामान्य जीवन जीना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। सामान्य जीवन जीकर तुम अपना नाम तो दुखोंने दी हो, मेरा नाम भी दुखोंने दी। कोई दबता या भगवान पैदा नहीं होते, बनते हैं। जन्म आपके हाथ में नहीं था, लेकिन अगर जन्म लेकर आपको गुरु मिल जाए, तो फिर आप अद्वितीय बन सकते हैं राम बन सकते हैं, कृष्ण बन सकते हैं।

* छस ढंग से कोई ही लही लुटाता, जिस ढंग से मैं शान आप पर लुटा रहा हूँ, यह आपवत्र सौभान्य है, कि मैं आपको उस जगह तक ले जाऊ चाहता हूँ कि पूरे दिश्व में आप विजयी हों, आप सफलता सुकृत शांति शक्ति और मैं आपने शब्दों पर दृढ़ हूँ। और मैं आपको अद्वितीय बना रहा हूँ।



४४ 'नवाम्बर' 2002 संस्कृत-यत्न-विज्ञान '44'

४४

*
द्वी. तु
रिअं
कर्त
*
कि व
कह द
बंगा
अनह

*
का व
को
अप

*
वाक्य
की।
जन्म
वयो

*
के।
साव
और
की।

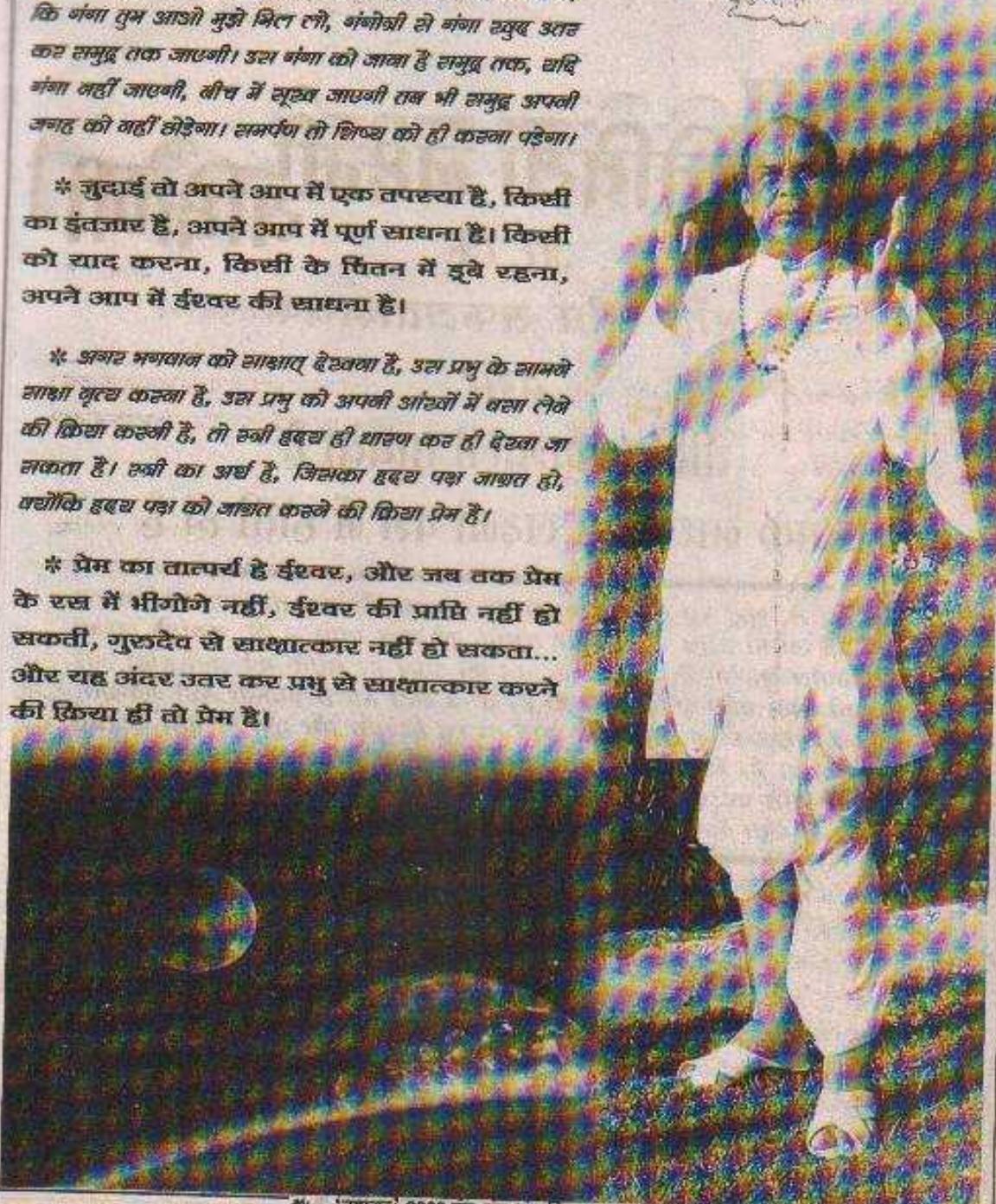
* शिष्य जितजा गुरु से एकलाल दीरों हैं उत्तम
ही गुरु उसकी उपरी धैर्यता रखता है। शिष्य पर
उत्तम है कि वह अपने अपने की पूर्ण जनरिंग
करता है या उत्तम जनरिंग करता है।

* नमुद्र व्यवह आणे चाहत बंगोबी के पाल नहीं जाएगा,
कि जंगा तुम आओ मुझे बिला लो, जंगोबी ले जंगा व्यवह आठ
कर नमुद्र तक जाएगी। उस बंगा की जाता है नमुद्र तक, यदि
जंगा नहीं जाएगी, वीच में लूँगा जाएगी तब भी नमुद्र अपनी
जगह की गही लोडेगा। जनरिंग तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।

* जुदाई तो अपने आप में एक तपहचा है, किंतु
का इतजाए है, अपने आप में पूर्ण साधना है। किंतु
की याद करना, किंतु के सितन में छुके रहना,
अपने आप में ईश्वर की साधना है।

* अचर भगवान की साक्षात् हैरना है, उस प्रभु के लाभसे
साक्षा वृत्त्य करना है, उस प्रभु को अपनी आंखों में बता लेने
की क्रिया करनी है, तो उनी हृदय ही धारण कर ही देखा जा
जाकरा है। उनी का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जागृत हो,
पर्योक्त हृदय पक्ष की जागृत करने की क्रिया प्रेम है।

* प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम
के दस में भीगोने नहीं, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो
सकती, गुरुदेव से साधात्मक नहीं हो सकता...
और यह अंदर उत्तर कर प्रभु से साधात्मकार करने
की क्रिया ही तो प्रेम है।



दार्शनिक संहनी पाप लक्षणी विज्ञा
लक्षणी का श्रेष्ठतम् लक्षणी विज्ञा
वांशोक सम्मान



धृष्णु रतिप्रिया लक्षणी ग्रन्थिणी जो कि अति शीघ्र सफलतादायक तथा तीव्र प्रगतिशाली साधना है जिसके माध्यम से लक्षणी वश में होती ही है

लक्षणी तप से, शुद्ध तप से यदि लक्षणी की साधना की जाए तो ऐसा कोई कारण नहीं कि लक्षणी प्रसन्न न हो, और साधक को फल पासि न हो, क्योंकि लक्षणी की भिन्नता घटावों के बहाँ ही है, तंत्र का ज्ञान हर व्यक्ति को नहीं होता और उनको खोड़ा बहुत ज्ञान होता भी है, तो वे सही तप से प्रक्रिया नहीं प्रयत्नाते, तांत्रिक साधनाओं में तबतो बढ़ा कार्य तो इदं भिन्नवर मीर एवं पिरेवास के साप कार्य करना है, कि 'मैं यह प्राप्त करके ही रहूँगा'. जब यह माव नन में रहे, साधना विधि का पूरा ज्ञान हो, वृठ का निर्देश हो, उनका आशीर्वाद हो, तो अनुच्छेद तो उस देवताओं को भी ऐसे साधक के वश में होना पड़ता है।

दायरिनिक लोग कहते हैं कि इस भूमार की गति और जान भी है, क्योंकि धन बिना न सो तो तो बुखि का मोल है न साचा 'वाहिनी' और उसका लक्ष्य जान के लिए जान का गहन भूमार न बन का उपयोग।

बूने पर चलती है, डमोनिया लक्ष्मी उपभोग पर सद्वि विशेष तंत्र और लक्ष्मी महत्व दिया गया है, इस विशेष विधि में क्या ऐसी कोई लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु सब धर्मों में और यहाँ तक कि हमारे प्रक्रिया अस्तीत तत्र समावृत्ति 'जगत्का द्वारा व्यक्ति लक्ष्मी अपने अपने अपने हिन्दू धर्म में भी कहा गया है कि जीवन का अर्थ बना में कर सभार के गति वक्त्र में नोंते नहीं ख्वा', अपितु भगवान का जप करना है, वर छोड़ कर संन्यासी बन जाओ, सभार क इस गति के साथ स्वयं गतिमान ढोकर चल, और यह सब संसार मात्या जाल है, किन्तु हिन्दू धर्म में ही लक्ष्मी यदि लक्ष्मी आपके साथ है और व्याप्ति विरन्तर वृद्धि होती के सम्बन्ध में लितने शून्य लिखे गये हैं, उत्से किसी अन्य रहे, तो निश्चित सम्भिद्ये कि आपने बन मी है, बढ़ि ही है, विषय पर नहीं लिखे गये, यहाँ तक कि हमारे यहाँ भारत में



तो पत्नी को लक्ष्मी कहा जाता है, और जब घर में कल्या
होती है तो कहा जाता है कि लक्ष्मी का आगमन हुआ है, फिर जान नहीं होगा, उसके जीवन विशेष प्रकार के बन्धनों से

आप विचार कीजिए कि यह विरोधाभास कैसा है?

वास्तव में मन्य यह है कि विरोध गलत स्वर्प में उन्पन्न किया जाया है, और इन विशेष के पीछे कोई ठास आधार नहीं है, क्योंकि ऐसे यहाँ तो विष्णु की पूजा लक्ष्मी के नाथ की जाती है, शंकर की पूजा पार्वती के साथ, राम की पूजा सीता के साथ, कृष्ण की पूजा राधा के साथ, और लक्ष्मी, चाहती है, तो दरिद्रविनाशक कल्प की सुनो, इन कल्प की गाथा, पार्वती, सीता ये सब लक्ष्मी के ही स्वन्दप हैं, वह रचना में की थी, मैंने कहने पर इसे कुबेर को बताया गया

मन्त्र श्रापनम् नस्व है, क्या लक्ष्मी के इन स्वस्फों के बिना

और कुबेर धन के अधिपति नथा देवताओं के कोषाध्यक्ष बन भगवान की कल्पना की जा सकती है? क्या कोई पार्वती, गणे, यह विद्या दरिद्रव संहक्षण यक्षिणी पाप खंडिनी विद्या

लक्ष्मी नीता और राधा का निरस्कार कर भगवान की कृपा है?

प्राम दर्श भक्ता है? भन, वास्तविक अर्थों में तो नहीं है

साधना करना भगवान की
साधना करने के समान ही
फलप्रद है।

एक्ष्य गुस्त्रेव के नाम जो पत्र
आते हैं, उनमें अधिकांश पत्रों
में आर्थिक समस्याओं का
विवरण मिलता है, किसी का
व्यापार नहीं चल रहा है, तो
किसी के उमर कर्जी है, किसी
के धर चोरी हो मई है, तो कोई
जन्म से ही निर्धन है, कोई
सामान्य नीकरी बाला है और
धन की कमी के कारण
लड़कियों का विवाह नहीं कर
पा रही है, किसी ने अपना रुपया
उधार पे दिया है और वह वापस
नहीं मिल रहा है, तो कोई नदा
कार्य शुरू करना चाहता है,
लेकिन पैसा नहीं है, तात्पर्य यह
है कि मूल समस्या धन की
अर्थात् लक्ष्मी कृपा की ही है।

आज से हजारों-हजारों वर्ष
पहले यही प्रश्न पार्वती ने
भगवान शिव से पूछा था कि,

हे भगवान! कलियुग में जब

मनुष्य को आचार-विचार का

जवाड़ा होगा, धन केवल कुछ लोगों के पास एकत्र होगा,
अधिकतर लोग धन की कमी से परेशान होंगे, तो क्या आपके
तंत्र में ऐसा कोई विद्यान नहीं है, जिससे दरिद्रता का सम्पूर्ण
स्वरूप से नाश हो जाए? नब भगवान यिव ने इस्तो हुए कल्प
कि 'हे देवी! तुम जानती हो, फिर भी मेरे ही मुख से मुनना
चाहती हो, तो दरिद्रविनाशक कल्प की सुनो, इन कल्प की
गाथा, पार्वती, सीता ये सब लक्ष्मी के ही स्वन्दप हैं, वह रचना में की थी, मैंने कहने पर इसे कुबेर को बताया गया

धनदा यज्ञ
 फल जो है
 सिद्ध लम्हा
 है, तथा इस
 मात्र साधनाव
तांत्रोच्च
 साधन
 मंत्र का
 उत्तर
 वाम
 स्वप्न
 किया
 तत्पर
 स्वप्न उत्तर
 प्राप्त
 और ला
 चले ना
 कर लै,
 पहले उ
 पर बैठे
 से गुरु
 आज्ञा
 स्थल
 अब
 सामने
 एक मा
कुबे
 ॥
 धन
 तत्प
 कमला
 रखें, त
 कर य
 विनिय
 विनि
 पढ़ क

विद्याचरत्वमाप्नोति कि पुनर्वहुभाषिते ॥
 यदि लक्ष्मीश्वरत्वं च तद्भवो देवि सर्वदा ॥
 वर्षं यापि स्मरन्मन्त्रं भवेद् वहुधनो नरः ।
 नो संस्पृशति दारिद्र्यं तद्वयं भोगकुलं यथा ॥

अर्थात्, शिव ने कहा कि यह विद्या ऐसी है, जिसे जानकार रक अर्थात् दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी राजा जैसा धनपति बन जाता है इसमें कोई संदेह नहीं, और जो एक वर्ष तक इस विद्या के मंत्र का जप करता रहता है, तो पूर्ण रूप से सम्पन्न हो जाता है, जिस प्रकार सांप गुरु से भागते हैं, उसका स्पर्श भी नहीं करते, उसी प्रकार इस तंत्र विद्या के जानकार का दरिद्रता स्पर्श ही नहीं करती।

द्वन्द्वा रतिप्रिया यक्षिणी तांत्र साधना

दारिद्र्य संहती यक्षिणी पाप खड़ी विद्या के अन्तर्गत धनदा रतिप्रिया यक्षिणी साधना साधक को सम्पन्न करनी चाहिए, यह देवी लक्ष्मी का सर्वोन्म और एकमात्र स्वरूप है जिसमें तान्त्रिक विधान द्वारा सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

इस साधना में सबसे विशेष बात यह है कि लक्ष्मी के नितने स्वरूप होते हैं, उन सभी स्वरूपों का आहान तथा विशेष पूजा की जाती है, प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है, साधना के पहले दशों दिशाओं का कीलन किया जाता है जिससे किसी प्रकार की बाहरी बाधा से विघ्न न पड़े और जो संकल्प साधक करे, उसका फल तत्काल अवश्य ही प्राप्त हो।

इस महान तांत्रोक्त साधना में प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक है, यह विशेष अत्यन्त गुण्डातम रहा है, प्राण प्रतिष्ठा से ही शक्तियाँ चैतन्य होती हैं।

स्त्रियामल तंत्र में स्पष्ट लिखा है कि यदि इस प्रकार पूर्ण विधान से यह तंत्र साधना सम्पन्न की जाए, तो कोई कारण

नहीं कि देवी तत्काल आकर साधक के मनोरयों को पूर्ण न करें।

इस साधना में मूल विधान तो एक है, परंतु आगे प्रत्येक आर्थिक समस्या के सम्बन्ध में अलग-अलग मंत्र जप हैं।

विशेष आवश्यक

तंत्र साधना में कुछ साधनानियों रखनी आवश्यक होती है और जिस प्रकार गुरु का विदेश हो उसी प्रकार साधना महत्वपूर्ण हो, उसके निवारण का संकल्प लेकर साधना करनी चाहिए।

जो समस्या आपके लिए वर्तमान में सबसे अधिक स्पर्श भी नहीं करते, उसी प्रकार इस तंत्र विद्या के जानकार का दरिद्रता स्पर्श ही नहीं करती।

मूल साधना प्रारंभ करने से पहले कुबेर पूजन अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

साधक लाल रंग के वस्त्र धारण करें, और साधक का मुँह उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए।

लक्ष्मी साधनाओं के लिए शुभ मुहूर्त देख कर कार्य करना चाहिए, मुहूर्त के अभाव में किसी भी बुधवार को साधना प्रारंभ की जा सकती है।

वस्त्र कपास के बने हों, अर्थात् सूती वस्त्र ही धारण करें।

साधना में चन्दन का विशेष उपयोग है, अतः पहले से ही काफी मात्रा में विस्कर चन्दन अपने पास रख लेना चाहिए।

धनदा रतिप्रिया यक्षिणी को केवल खींच का मोग लगाया जाता है।

यक्षिणी के सभी स्वरूपों में ३६ लक्ष्मी स्वरूप भी हैं, उन सब की पूजा एवं ध्यान अवश्य करना चाहिए।

साधना सामग्री

इस विशेष तांत्रोक्त साधना में तांत्रोक्त मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित



धनदा रतिप्रिया यक्षिणी दंत की स्थापना, ३६ तांत्रोक्त लक्ष्मी फल जो कि दारिद्रय सहमती पाप खंडिनी विद्या के बीज मंत्रों से सिद्ध लम्ही तांत्रोक्त फल है, निनके बिना वह साधना अपूर्ण है, तथा मंत्र जप के लिए तांत्रोक्त यक्षिणी माला आवश्यक है, इस माला का प्रयोग ऐसल लक्ष्मी से सम्बंधित तांत्रोक्त साधनाओं में ही किया जाना चाहिए।

तांत्रोक्त विधान

साधना प्रारंभ करने की पूर्व रात्रि को १०८ बार निम्न शिव मंत्र का जप करें-

ॐ नमो जाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिष्ठितये नमः ॥
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्व कार्येभ्वशेषतः ।
क्रियासिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादावान्महेश्वर ॥

तत्पश्चात् भूमि पर श्रीया बिछाकर शयन करें, इससे शुभ स्वप्न आते हैं और साधना की आज्ञा स्वप्न में प्राप्त होती है।

प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर शुद्ध गर्भ जल से स्नान करें और लाल सूती वस्त्र धारण कर सीधे अपने पूजा स्थान पर चले जाएं, साधना की सभी सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, जिससे कि कोई व्यवधान उपस्थित न हो, सबसे पहले अपने जलाट पर चन्दन का लिलक लगाएं, लाल आसन पर बैठें, और सामने गुरु यंत्र, चित्र (यंत्र न हो तो गुरु चित्र) से गुरु पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् मानसिक रूप से गुरु आज्ञा एवं आशीर्वाद से आगे की साधना में रह हों, साधना रथल में पूर्ण शुद्धता होनी आवश्यक है।

अब साधक भवसे पहले कुबेर पूजन सम्पन्न करें, अपने सामने कुबेर यंत्र स्थापित कर उसका चन्दन से पूजन कर एक माला निम्न कुबेर मंत्र का जप करें-

कुबेर मंत्र

॥ ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिष्ठितये
धनधान्यसमृद्धिये देहि दायय स्वाहा ॥
तत्पश्चात् सर्वप्रथम एक याली में 'ॐ ह्मि सर्वशक्ति
कमलासनाय नमः' लिखें और उस पर पुष्प की पंखुडिया
रखें, तत्पश्चात् इस पर धनदा रतिप्रियायक्षिणी यंत्र स्थापित
कर चन्दन लेपन करें और सुगन्धित पुष्प अपैत कर सकल्प
विनियोग सम्पन्न करें।

विनियोग में अपने हाथ में जल ले कर निम्न विनियोग मंत्र
पढ़ कर जल मूर्मि पर छोड़ दें-

विठ्ठियोग

ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमन्त्रस्य कुबेर
ऋषिः पंकितश्छन्दः श्रीधनदेश्वरी देवता धं बीजं स्वाहा
शक्तिः श्री कीलकं श्रीधनदेश्वरी प्रसादसिद्धये
समस्तदारिद्रवनाशाय श्रीधनदेश्वरीमन्त्रजपे विनियोगः ॥

प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग

प्राण प्रतिष्ठा के द्वारा जीव स्थापना की जाती है और साक्षात् यक्षिणी का आळान किया जाता है, इसमें अपने चारों ओर जल छिड़के तथा निम्न मंत्रों द्वारा आळान करें-

ॐ आं ह्मि कीं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणा ।

ॐ आं ह्मि कीं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य जीव इह स्थितः ।

ॐ आं ह्मि कीं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य सिवेन्द्रियाणि इह स्थितानि ।

ॐ आं ह्मि कीं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य वांगमनस्त्वकचक्षु
श्रीत्रजिह्वाद्रापाणिपावपायूपस्थानि इहेवागत्य सुखं चिरं
तिष्ठन्तु स्थाहा ।

श्रीधनदेश्वरी ब्रह्मगच्छतिष्ठा ।

यह प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग साधना का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, यह अपनी साधना में प्राण तत्त्व भरने की प्रक्रिया है।

अब धनदा रतिप्रिया यक्षिणी लक्ष्मी के ३६ स्वरूपों की पूजा कर उनका आळान किया जाता है, प्रत्येक स्वरूप का आळान कर 'एक तांत्रोक्त लक्ष्मी फल' स्थापित करें, धनदा यक्षिणी के ३६ स्वरूपों पर चन्दन चढाएं, प्रत्येक तांत्रोक्त लक्ष्मी फल के आगे एक-एक दीपक जलाएं तथा पुष्प की एक-एक पंखुड़ी रखें, आळान क्रम निम्न प्रकार ये हैं-

ॐ धनदाये नमः ॐ मंगलाये नमः

ॐ दुर्गाय नमः ॐ त्रिनेत्राये नमः

ॐ चंचलाये नमः ॐ त्वरिताये नमः

ॐ मंजुघोषाये नमः ॐ सुगन्धाये नमः

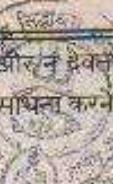
ॐ पद्माये नमः ॐ वाराण्यी नमः

ॐ महायाये नमः ॐ कराल मैरव्ये नमः

ॐ सुन्दर्ये नमः ॐ सरस्वत्ये नमः

ॐ रुद्राये नमः ॐ चामर्ये नमः

ॐ वज्राये नमः ॐ दरिप्रियाये नमः



ॐ कमलायै नमः ॐ सुपट्टिकायै नमः

ॐ उमायै नमः ॐ महालक्ष्मयै नमः

ॐ कामलायै नमः ॐ सुधायै नमः

ॐ महालक्ष्मयै नमः ॐ धनुर्धरायै नमः

ॐ कामप्रियायै नमः ॐ गृह्णेश्वर्यै नमः

ॐ चपलायै नमः ॐ तीलायै नमः

ॐ चर्वशक्तयै नमः ॐ धार्यै नमः

ॐ सर्वश्वर्यै नमः ॐ मांहश्वर्यै नमः

इस प्रकार पूजन कर साधक यक्षिणी का ध्यान करे, तथा गक्षिणी यंत्र व चित्र के सामने र्हार का भोग लगाए, इसके अतिरिक्त धी, मधु तथा शर्करा का भोग लगाए।

कुछ शब्दों में लिखा है कि धनदा रतिप्रिया यंत्र के नीचे साधक अपना विवर रखे, अथवा उष्टुप्ति से काषत पर अपना नाम लिखु कर अवश्यक रखें।

उस साधक धनदा रतिप्रिया यक्षिणी का बार मुद्रा में बेठ कर मंत्र नप तांत्रिक यक्षिणी माला ये ग्रहण करे और मंत्र जप पूरा हो जाने के पश्चात ही अपने स्थान से उठें।

मंत्र

॥ॐ र श्री हीं ध धनदे रतिप्रिये स्वाहा॥

यह धनदा साधना का मूल मंत्र है, तथा प्रतिदिन १००८ मंत्रों का नप करना अवश्यक है, मध्यर्ण प्रदोष न्यारह दिन का है, और जब साधक की साधना चलती है तो उसे बहुत ही सुन्दर अनुभव प्राप्त होते हैं।

प्रतिदिन साधक मंत्र जप कर सामग्री को उसी स्थान पर रखे तथा दूसरे दिन अपने पूजन मंत्र कार्त्र नम्पत्र करे, न्यारह दिन तक सामग्री को अपने स्थान से उधर-उधर नहीं करना है, प्रतिदिन पूजन के पश्चात लक्ष्मी आरती अवश्य राम्पत्र करे। इस महात्मि के सम्बन्ध में लिखा है कि -

पूजान्ते च समायाति रात्री देवी धनेश्वरी।

सर्वालकारमूलसूज्य दत्त्वा यदि निजालये॥

धनं चविमूलं दत्या साधकस्य मनोरथान्॥

अर्थात् पूजा के समाप्ति के समय धनेश्वरी देवी अवश्य आती है, और अपने विशेष स्वरूप द्वारा साधक को विपुल धन दे कर उसके मनोरथों को पूर्ण करती है, जो नित्य प्रति धनदा रतिप्रिया यक्षिणी का पूजन एवं मंत्र जप करता है, उसका दरिद्रता तो उसी प्रकार नष्ट हो जाती है, जैसी कम्प अन्न में जल कर घस्स हो जाती है। भगवान् शिव का कथन है मेरी प्रिय धनदा रतिप्रिया यक्षिणी साधना का न तो अंगन्यास,

है न करन्यास, न छन्द है, न कृषि और न देवता, यदि कुपर का मन न भी हो तो भी इसकी पूजा साधन करने से पूर्ण फल अवश्यक प्राप्त होता है।

कुछ अन्य प्रत्योगी

धनदा रतिप्रिया यक्षिणी साधनों में अलग-अलग कार्यों वेन अलग-अलग मूल मंत्र का जप किया जाता है, कुछ विशेष मन प्रसन्न है-

१. आकर्षिक धन प्राप्ति हेतु

॥ॐ हीं श्री मां देवि धनदे रतिप्रिये स्वाहा॥

२. कण मोचन हेतु

॥ॐ हीं ऊं कणस्य मोचय मोचय स्वाहा॥

३. व्यापार एवं कार्य वृद्धि हेतु

॥ॐ ध श्री हीं रतिप्रिय स्वाहा।

तिथिप

सद्गुरुमल नंत्र में लिखा है कि धनदा रतिप्रिया यक्षिणी के साथ कामदेव का पूजा करने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती है, और साधक के सांसारिक जीवन के सभी मनोरथों को पूरा करती है, ऐष पति की प्राप्ति हेतु कामदेव की विधि-विधान पूजा समिति धनदा रतिप्रिय देवी की साधना सम्पत्ति करना चाहिए। शारीरिक दोषों दुर्बलताओं के नाश हेतु भी वोनों की समिलित पूजा साधना का विधान है, संयुक्त पूजा से साधक अवश्य कामदेव के सामने हो जाता है।

लक्ष्मी नंत्र की यह साधन सर्वोत्तम साधना है और आज जब हम शब्दों में प्राचीन भारत की सुसम्पत्ति, वेभव आर श्रेष्ठता के बारे में पढ़ते हैं तो आश्चर्य लगता है लेकिन यह पूर्ण सत्य है और इसका कारण उस समय के लोगों द्वारा किया जाने वाला आचार विचर साधनाओं के प्रति आस्था, तात्त्विक ज्ञान ही प्रमुख मूल कारण रहा है, जैसे-जैसे धर्म का अर्थात् इन प्राचीन विद्याओं के बारे में लोग मूलते गये थे-वे वे विद्वान् का अपमन होता रहा, अतः अवश्यकता है कि इस विद्वेष जान को समझे और स्वयं प्रत्यक्ष कियाएं, सम्पत्ति कर अपने जीवन को स्वर्णिम आभा से मंडित करें।

आप अपने हो मित्रों को पवित्रा साहस्र बनाएं तथा कार्ड के दूर अपने बोनों मिन का पता लिखकर थेंजे कार्ड मिलने पर रु. ४९०/- की बी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठानुक सामग्री भेज देंगे तथा बोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्रा थेजी जाएगी।

काल चक्र

समय का यक्ष निरुत्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक दण का अपना अलग विशिष्ट महत्व है। इस काल यक्ष की गति के फलस्वरूप कुछ ऐसे विशिष्ट धण जीवित के जीवन में आते हैं, जिनमें राष्ट्रों विशेष को सम्पन्न करने पर रास्ताता वज्र प्रतिशत समिक्षा होती है। ऐसे यह साक्ष के इन विशेष धणों को अपने जीवन में उतार लेते हैं, इस स्तर के अन्तर्गत ऐसे ही विशिष्ट साधना तुर्हृत छो प्रस्तुत किया जा रहा है, आप इस साक्षनामां का सम्पन्न कर निश्चित ही साक्षता प्राप्त करें—

* दिनांक 4-12-2002 बृद्धवार, उमावस्त्र को सर्वार्थ विद्ध योग बन रहा है इस दिन मनोकामना पूर्ति के लिए अत्यंत शुभ और लाभ प्रद लिये हैं। अपने नामने चावल की देरी बनाकर उसमें मनोकामना पूर्ति शुटिका स्थापित करके प्रातः ६ बजे से निम्न मंत्र का १५ मिनट जप करें।

॥३० ही मनोकांडितं सिद्धये ३०॥

जप के बाद शुटिका को लाल कपड़े में बोधकर अपने घर में कही भी बांध दें।

(नीलावर = 100/-)

सिद्धि योग भी हे जबु बाधा निवारण के लिए बगलामुखी शुटिका को किसी लाल कपड़े में स्थापित करके १०८ बार निम्न मंत्र को पढ़ने द्वा कुक्षम ये ये दुष्कावल को एक एक मंत्र के साथ चढ़ावें—

॥३१ कलीं शमुनाशाय फट् ॥

इस प्रथेग की शत्रि १, बजे के बाद प्रारम्भ करें, दूसरे दिन सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

(नीलावर = 80/-)

* दिनांक 18-12-2002 बृद्धवार को चतुर्दशी लिये विशिष्ट योग बन रहा है। इस दिन अपने नामने पीले चावल में उंगे

दूष पांच ढेरी बनाकर उनमें ५ जोगती चक्र स्थापित करें। और प्रातः ६.४५ पर निम्न मंत्र का जप करें। इस मंत्र की जप ३ बजे तक करें। बाद में सभी सामग्रियों को डॉलर प्लेट पर रखकर उसे पीले रंग के चाबल से ढक दें। सामने प्रवाहित करें। इस प्रयोग से शीघ्र लक्ष्मी लाभ की स्थिति बनती है।

॥ ३५ श्रीये नमः ॥

(न्यौछावर = 105/-)

* दिनांक 21-12-2002 शनिवार को, छिपुष्कर योग बन रहा है। इस दिन छितीय तिथि है। अपने सामने किसी प्लेट पर सिद्धार्थ गुटिका को व्यापार वृद्धि के लिए स्थापित करें। और पंचोपावर पूजन के के बाद निम्न मंत्र का ५.४५ से ७.३० तक जप करें। जप के बाद सामग्री को अपनी दुकान या मकान में कहीं पर लाल कपड़े में बोध दें।

॥ ३५ श्रीश्री हीं हीं ३५ ॥

(न्यौछावर = 100/-)

* दिनांक 1-12-2002 रविवार को छिपुष्कर योग बन रहा है। उस दिन द्वादशी तिथि है। अपने सामने तेल का दीपक जलाकर किसी प्लेट पर कल्प सिद्धि गुटिका को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु स्थापित करें। और किसी भी समय स्नान के बाद निम्न मंत्र का ३० मिनट तक जप करें।

॥ ३५ श्री श्री हीं ३५ ॥

जप समाप्ति के बाद गुटिका को अपने गल्ले में या पैसे वाले रुप्यान् पर रख दें।

(न्यौछावर = 150/-)

* दिनांक 11-12-2002 बुधवार, समसी तिथि को सिद्धियोग बन रहा है। उस दिन अपने सामने किसी प्लेट पर सिद्धार्थ गुटिका को स्थापित करके गुरु दर्शन हेतु निम्न मंत्र का किसी भी माला से एक माला मंत्र जाप करें।

॥ ३५ ऐं गुरु आत्म तत्वं हीं ३५ ॥

बाद में उस गुटिका को गले में पहन लें।

(न्यौछावर = 120/-)

* दिनांक 17-12-2002 मंगलवार, त्रयोदशी को सिद्धि योग बन रहा है। उस दिन विपुरा गुटिका को अपने सामने किसी प्लेट पर रखकर उसे पीले रंग के चाबल से ढक दें। सामने वी का दीपक जलाकर एक माला प्रातः ६.२० से ६.५० मिनट तक मंत्र जाप करें।

॥ ३५ हीं हसकल हीं ३५ नमः ॥

इस गुटिका को अन्न के भंडार में दबा कर रख दें।

(न्यौछावर = 101/-)

* दिनांक 19-12-2002 गुरुवार है पूर्ण मासी है, उस दिन पूर्ण सिद्धियोग बन रहा है। अपने सामने पीले रंग के चाबल की ढेरी बनाकर उप पर मनसचैतन्य गुटिका को स्थापित करें।

मन की चंचलता, अशान्ति नाश के लिए तथा मन में प्रसन्नता तथा उमंग के लिए निम्न मंत्र का दो माला स्फटिक माला से मंत्र जाप करें। इसका समय प्रातः ५ बजे से ७ बजे के बीच कभी भी कर सकते हैं। उसके बाद गुटिका को अपने गले में पहन लें।

॥ ३५ श्री मनस चैतन्यं ऐं ३५ नमः ॥

(न्यौछावर = 90/-)

* दिनांक 28-12-2002 शनिवार, नवमी तिथि है। अपने जीवन के समस्त दुर्घात्य को समाप्त करने के लिए सौभाग्य यंत्र को अपने सामने पीले कपड़े पर स्थापित करके ५ तेल का दीपक जलाकर निम्न मंत्र का किसी भी माला से निम्न मंत्र का प्रातः शुभ समय पर जप करें, जबकि बाद यंत्र को एक महीने तक अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें। उसके बाद उसे जल में प्रवाहित कर दें।

॥ ३५ ऐं सौभाग्य सिद्धिं हीं ३५ नमः ॥

(न्यौछावर = 150/-)

कृष्णार्थी ही जीवन समझा

खंडपात्री

जीवन समाई को ही त्यागना मनुष्यस नहीं है, किंतु जीवन में सधर्ष की भावना देता है उद्दिष्ट स्वर्ग। जीवन में श्रेष्ठ कार्य कर सके, मनुष्यम् का परम्परा अधिकारी जीवन में श्रेष्ठो ने विवेचन किया है लेकिन जीवन में हल धर्म को किस प्रकार से अपनाएँ?

मनुष्य को यह जन्म प्राप्त हुआ है तो उस कुछ न कुछ से जलग किया जाया है। इसी शास्त्र में आगे लिखा है कि लक्ष्य अवश्य ही है। प्रकृति ने यह मानव शरीर आध्यात्मिक विकास के लिए प्रदान किया है और मनुष्य इस जीवन में आकर भौतिक एवं वासनात्मक प्रवाह में बहने लग जाता है। वेद वाक्य है कि 'आहार निद्राभय मैथुनं च समानमेतद् पशुभिर्नरणाम्' अर्थात् आहार निद्रा भय और मैथुन मनुष्य तथा पशु में समान रूप से होता है। पशु भी इन्हीं चार बातों में चलता हुआ अपना जीवन बिताता है तथा सामान्य मनुष्य भी जीवन में इन चार बातों के सहारे ही अपना संसार संचित करता है। उसमें हच्छाएं, कामना इत्यादि जागती है। फिर मनुष्य में ऐसी क्या विशेषता है जिसके कारण से उसे पशु जीवन में सबसे बड़ी बाधा यह है कि वह कर्म के परिणाम से

०० 'नवम्बर' 2002 मध्य-तत्र-यत्र विज्ञान '55' ५५

इस जीवन में आकांक्षा, हच्छा के खिना कोई कर्म नहीं होता और किसी भी कर्म का परिणाम निश्चित रूप से प्राप्त होता है। कर्म करने से ही फल की प्राप्ति होती है तथा कर्म से पूर्व मन में फल के प्रति आस्तकित भाव भी रहता है। मनुष्य



रिष्टु पकार भूमि रहे। संसार में रहकर संसार के विषमताओं है। गृहस्थ व्यक्ति स्वयं द्वागा निर्मित कर्म के जाल में निरंतर बने हुए रहने की क्रिया जीवन मुक्ति क्रिया कहलाती है। उलझता रहना है। यह जाल छोटा हो अथवा बड़ा। इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता, लेकिन यदि व्यक्ति अपने जीवन में संन्यस्त भाव से कर्म करता है तो कर्म के बंधन उस व्यक्ति को नहीं ब्रांथ सकते हैं। वह गृहस्थ में रहकर भी चिन्तामुक जीवन मुक्ति की अवस्था है, पुर्णत्व की अवस्था है। इस हो सकता है और यदि कोई संन्यासी भी हर समय चिन्ता से अवस्था का ज्ञान निरंतर कर्म करने से साधना करते हैं, युक्त रहता है तो उसे संन्यासी नहीं कहा जा सकता।

उसके ऊपर जल की एक बिन्दु भी नहीं उहरती है। यह गृहस्थ में रहकर भी चिन्तामुक जीवन मुक्ति की अवस्था है, पुर्णत्व की अवस्था है। इस तपस्या करने से ही आता है।

गृहस्थ और संन्यास

हमारे यहाँ शास्त्रों में गृहस्थ और संन्यास जो भेद बनाए गए हैं वे कर्म के भेद नहीं हैं, दोनों में कर्म की पद्धति का भेद है। ऐसा नहीं हो सकता है कि जो व्यक्ति केवल गृहस्थ है वह गृहस्थ में रहकर संन्यासी नहीं बन सकता है और जो व्यक्ति संन्यासी है वह गृहस्थ में रहकर गृहस्थ का पालन नहीं कर सकता। दोनों में केवल कर्म करने के तरीके में भेद

अनाश्रित: कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।

स संन्यासी च योगी च न निरचिनचाप्रियः॥

अर्थात् जो व्यक्ति कर्म फल पर आश्रित न रहकर कर्म करता है वही संन्यासी है, वही योगी है। जीवन में पढ़ाई, लिखाई, नीकरी, विवाह इत्यादि जितने भी कर्म हैं वे सब फल के अधीन हैं। फल के आशा को त्याग कर कोई भी

व्यक्ति कर्म करना चाहता है, जो किया जाता है उस कर्म नहीं है यह जन सकाम, जो है जो उस लपेटनी के फल लिया है उसे कर्म फल, संस्कृता होता है जो फल की क्रिया जान कहते हैं। श्रम में जो फल अवश बीज को तो उसमें ही सकती अपने आप में उसका मरण रूप और अपनी इसी कर्म किसी प्रक उत्पत्ति भी किया तो

व्यक्ति कम तकी लगता है और यह प्रबन्ध के दुखों का मूल कारण है। जीवन में कम निरंतर करना अप्रृष्ट लोकों हर समय फल की आकांक्षा को सामने नहीं रखना चाहिए। कर्म और कर्तव्य में बहुत अधिक अन्तर है, जो कर्म कर्तव्य भाव से किया जाता है, उसमें व्यक्ति उस कर्म के पहल से चिपकता नहीं है जबकि बिना कर्तव्य के सकाम, किया ऐसा कर्म बनता है जो उसे निरंतर बंधनों में लगेता रहता है। जिस कर्म के फल में मनुष्य की बुद्धि लिस है और जो कर्म इच्छा से प्रेरित होकर किया जाता है उसे कर्म कहते हैं और उनमें फल, संस्कार तथा जन्म मन्य होता है जो कर्म कामना राहित फल की आड़ा से मुक्त होकर किया जाता है तो उसे कर्मयोग कहते हैं। व्यक्ति संसार रूपी भूमि में जो बीज बोता है उसका फल अवश्य प्राप्त होता है। यदि बीज को भून करके बोया जाए तो उससे वृक्ष की उपत्ति नहीं हो सकती है। संसार में आकर मनुष्य कामना के आवरण में है वह सन्यास की स्थिति में पहुंच जाता है। वही सन्या अपने आपको इस प्रकार लिप्त हो जाता है कि उसे जीवन सन्यासी है।

में उसका फल सुख-दुख रूप में, हानि लाप स्पर्श में जन्म-
मरण रूप में सम्पत्ति विपत्ति के रूप में, रोग, जरा, मृत्यु गृहस्थ का त्याग करते हैं और सोचते हैं कि गृहस्थ में और अपमान के रूप में अपना फल पाता है। लेकिन यदि रहकर यह सब नहीं किया जा सकता वे बहुत बड़ी गलती इसी कर्म को कर्तव्य की अभिन में तपा दिया जाए तो उस पर करते हैं। कर्म तो गृहस्थ में भी करना और सन्यास की किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता और उससे दुःख की स्थिति में भी करना है। सन्यास में रहकर भी जीवन की उत्पत्ति भी नहीं होती। कर्म किया अर्थात् अपना कर्तव्य मूलभूत, आवश्यकताओं से मुक्त नहीं मिल सकती। उसी किया तो मनुष्य ऐसी स्थिति को प्राप्त करता प्रकार गृहस्थ में रहकर भी अपने भीतर एक संन्यसन भाव

गुरु के गाथ आंतरिक सच्चय को विकसित करने के लिए इमरेज में यही जागवान दर्शकों के प्रति धैर्य वाले होना चाहिए। शहीर, यह और जागवान तो राष्ट्रपतिक होती है। नाम आरना भीस है, इमरेज गुरु के गाथ तो संबंध है उसका आवार जालना ही है। जायजालक सार पर संबंध जोड़ कर ही लिखा जाना चाहिए कि अकता है। तो किन दीर्घ-दीर्घ जागवानों ने उठकर मन को शांत और जिम्मा ग्रहों द्वारा गुरु के कार्य को अपने कार्य को आगे बढ़ा अकता है। गुहचंद्र और गहन्यान घोनों ही उक ही जाव हैं और दोनों का आवार एवं ही छोटे हैं।

जागृत किया जा सकता है।

शरीर, मन इत्यादि वृद्धि पा केवल भावना से ही व्यक्ति को बनह से जीवन में संघर्ष आता है। वरेभास समाय में कर्म करे और कर्म आपको रहित हो, कर्म को आत्मशुद्धि के सामान्य व्यक्ति का बोलने का, सोचने का, रहने का व्यवहार उद्देश्य से किया जाए तो वह बंधन का कारण नहीं बन करने का खुले का, सुख दुःख भोगने का, इष्ट मित्रों से प्रेम निष्पत्ति के संबंध में गोभा में लिखा है कि-

ब्रह्मापूर्णं ब्रह्माहृषिः ब्रह्माज्ञी ब्रह्माणाहृतम् ।

बहुत तेज अन्वर्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥

अर्थात् इस बहारपी अग्नि में बढ़ा ही हवन सामग्री है, रहने लगा। बहु के ग्रास ही आहुति दी जाती है। बहारपी कर्म के द्वारा व्यक्ति वे समाधिय होकर भ्रष्ट को दी प्राप्त किया जाता है अर्थात् यह शक्तिशाली भय्युर्ज ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्माण्ड की समस्त क्रियाएं ब्रह्ममय के लिए इन है। आवश्यक है।

गुरुत्वा उत्तम में वारस्त्रक में संघर्ष नहीं है जो थोड़ा बहुत नहीं होता है तब यह भवनाप सद्यप के स्वप्न में गम्भीर लड़ा

मंदिर है वह देवघी उत्तमा ही है जितना एक कर्मठ संनायी के जीवन में है। लोग कहते हैं कि राजस में ब्रह्मा आश्रम है 'मन चाहे समय पर जाना' मन चाहे समय पर सोए और मन हमारा भी जन पूजा कर दी वासनव में संनायी को यह व्याख्या नहीं है यह तो जीवन से मगाने वाले काथर पुरुष की व्याख्या है। संनायी भी आश्रम में रहते हुए अथवा कहीं अन्य स्थान में रहते हुए भी गुरु के आदेशानुसार निरंतर कर्म में लगा रहता है। वह कभी भी अपने जीवन का एक धण व्यर्थ में नहीं गंवाता है। हाँ उसके कर्म का तरीका ठीक नहीं है।

ब्राह्मण में भगुष्य को ब्रवपन से ही कर्म के सिद्धान्त के समय में उचित रूप से नहीं बताया गया है। मा-बाप अपने बच्चों को पढ़ने के लिए कहने हैं और यह समझाते हैं कि पढ़कर करके तुम्हें यह बनना है, वह बनना है। बड़े होकर तुम्हें विवाह करना है। जबकि उन्हें स्वयं यह जानकारी नहीं है कि इन सभी कर्म का क्या उद्देश्य है, इसलिए माता-पिता को स्वयं ज्ञानवान

द्योकर उचित मार्जिदशन प्रदान करना चाहिए। इसी अवधान की बनह से जीवन में संघर्ष आता है। वर्तमान समय में सामाज्य व्यक्ति का बोलने का, सोचने का, रहने का व्यवहार करने का खाने का, सुख दुख मोगने का, इष्ट मित्रों से प्रेम करने का तरीका किसी से घृणा, बदला लेने का तरीका ठीक ही नहीं है। एक पशु की माति व्यवहार करता है। रोष आ गया तो अपट पड़ता है और जीवन की चार आवश्यकताएँ आठार, निद्रा, भ्रग और मेशुन पुरी हो गईं तो वह मंत्रोष से

व्यक्ति के जीवन में भावनाएँ अत्यंत प्रबल तथा शक्तिशाली होती हैं और जीवन संघर्ष में पृथग् प्राप्त करने के लिए इन भावनाओं को ठीक स्थान पर रखापिन करना आवश्यक है जब तक इन भावनाओं को उचित स्थान प्राप्त

विना अत्यक्त नागर्य का चिन्तन करते हैं। व्यक्ति विचार शक्ति क्रिया करती है। कर्म के साथ-साथ उच्चकी चेतना भी कह कि उसने पिछले २०-२५ लाल में अपने जीवन में कार्य करती है। सन्यास भाव में शारीरिक श्रम और सोने-बठके पहले, दूसरे पार करने जो चिन्तन किया उस चिन्तन आध्यात्मिक प्रयास दोनों ही समान रूप से किया जाता है, कार्या परिणाम निकला है और पहिं वह उस प्रकार से इसलिए शेष व्यक्ति को राज योगी कहा जा सकता है। चिन्तन नहीं करता तो क्या जीवन में नुलभूत परिवर्तन आ जब तक जीवन है, व्यक्ति का मन उसे कर्म करने के लिए जाता। इस व्यर्थ की चिन्ता में ही जीवन का अधिकांश विवरण करता रहता है। समय व्यर्तीत कर देते हैं और इस व्यर्थ के चिन्तन को भी इच्छा करना, कामना करना, महत्वाकांक्षा यह सब मनुष्य को कर्म के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए कर्मयोग, भक्तियोग

मनुष्य का जीवन एक निश्चित गति से जा रहा है और और ज्ञान योग का अभ्यास निरंतर करना चाहिए। और जो प्रत्येक व्यक्ति का जीवन उसका कर्म उसका जन्म-मरण, व्यक्ति अपने मन के तीन विकारों अशुद्धता, अज्ञान और उसका सुख दुःख, उसका गृहस्थ जीवन एक ही नियम पर मोह पर विजय प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील आधारित है और यह नियम प्रकृति के नियमों से आकृत है। इसी ये यह जीवन चल रहा है। जब इस सत्य को जान है, वही तो वास्तव में सन्यासी है, वही जीवन में पूर्ण सत्य जाने हैं तो जीवन में शोटी-मोटी बाँहों से घबराते नहीं हैं। की प्राप्ति कर सकता है। हर समय जीवन में सन्यस्त भाव जीवन में जो असुरक्षा की भावना है वह स्वास हो जाती है बना रहे और सन्यास के रूप में जीवन को देखा जाए तो और जब जीवन में असुरक्षा की भावना समाप्त हो जाती है जीवन के दुःख अवश्य ही दूर हो जाते हैं। सन्यस्त भाव ही तो मनुष्य में एक सन्यास, भाव, जाग्रत हो जाता है। जीवन का श्रेष्ठतम् भाव है। यही जीवन के पूर्ण आनन्द का नब सन्यास का भाव जाग्रत होता है तो वह अपने भाव है।

प्रथेक कर्म को अपने तंत्र को अलग रूप से देखने लगता है तब उसमें और सन्यासी में अंतर पिट जाता है। वह आवश्यकता होती है और यह आधार प्राप्त होता है सहज जीवन को अच्छी तरह से जीता है और उसे अपना लक्ष्य और सरल जीव बिताने से जिन ऋषि मुनियों ने सन्यास द्वारा समय ध्यान रहता है। वह जान जाता है कि वह कर्ता जीवन के नियम बनाए वे मानव के व्यक्तित्व से सुपरिचित का ईश्वर का एक अंश है, वह एक नियमित रूप में इस है। इसलिए जब कोई व्यक्ति सन्यास लेता है तो उसमें ये संसार में आकर कर्ता का कार्य कर रहा है। तब उसे विशेष कर्तव्य भावनाएं आ जाती हैं।

किसी भी प्रकार का दुःख सताता नहीं है। गृहस्थ व्यक्ति प्रथम कर्तव्य है आत्म उन्नति और दूसरा कर्तव्य है समाज को देह की चिन्ता ज्यादा सताती है और देह की चिन्ता में आध्यात्मिक विचार और ज्ञान का प्रचार करना वह वो वह मन की चिन्ता बना लेता है और एक चिन्ता केवल स्वयं की उच्चति के लिए ही नहीं अपितु सारे मानव दृसरी चिन्ता को उत्पन्न करती है। जबकि संसार का समाज की उच्चति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। कार्य सन्यस्त भाव में किया जाए तो चिन्ता की उत्पत्ति उसके भीतर चंचलता समाप्त होकर चित्त में मानसिक शांति ही नहीं होती है। सन्यास कर्म से भागना नहीं सिखाता आ जाती है। सदैव आनन्दग्राम रहने की स्थिति आज जाती है, कर्म को सही ढंग में करने का तरीका सिखाता है है। यह सन्यासी गृहस्थ जीवन में ही अपने सारे बंधनों के और जब इस प्रकार से मानसिक रूप से वह सन्यासी क्रम को एक-एक करके तोड़ कर सदैव अपने अपनको उन्मुक्त बन जाता है तो उसे सत्य प्राप्त होता है, उसे जान प्राप्त भाव से अनुभव करता है और उसके लिए उसे अपने मन होता है वह अपनी शक्ति का विकास कर्म के द्वारा करता का स्वामी बनना आवश्यक है जो अपने कु संस्कारों का है, क्योंकि कर्म केवल शारीरिक संचालन की प्रक्रिया नहीं नाश कर अपने मन को आत्म बल से नियंत्रित कर देता है। कर्म मानसिक और मानसात्मक शक्ति को प्रखर करने वही सच्चा सन्यासी है।

का माध्यम है। जहाँ जहाँ भी व्यक्ति क्रिया करता है वही यह

वक्षना की वापी

मेष (चूं, चे, चो, ली, लू, लो, आ)

इस माह अक्षरिक धन लाभ होने का योग है। धनागम से मन प्रसन्न होगा तथा आप उत्साहित रहेंगे। नीकरी पेशा व्यक्तियों को संभल कर रहा होगा क्योंकि सहकर्मी इच्छावश हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर सकते हैं। कोई परिवर्तन स्थिति उत्पन्न होने पर आज धैर्य से काम ले। इस माह परिवार के सदस्यों विशेषत संतान के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। मास के अंत में किसी धार्मिक या परिवारिक आयोजन में भाग लेने से मन प्रसन्न होगा। पूर्ण सुख एवं शांति हेतु इस माह विश्वामित्र लक्ष्मी साधना संपत्तकरे। विशेष तिथियां २, ३, ७, १०, १३, १६, २२, २५ हैं।

वृष (है, उ, ए, वा, वी, वू, वे, वो)

आप अपनी कार्य कमता ने कहीं अधिक श्रम करने का प्रयास करते हैं। कलांडिना एक गुण है परंतु शरीर और मन को दूरना भी न थका दे कि बीमार पठने की नीबूत आ जाए। इस माह आपने स्वयं के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान दे नहीं तो अस्वास्थ्य ही सकते हैं। संवधियों से मधुर संबंध रहेंगे तथा अगर किसी से पहले कभी मतभेद हो जाया हो तो इस मास सब गम्भीर समाज हो जाएगा। कोई नया काम आरंभ करने के लिए समय उत्तम है। इस मास आप कामाल्या तंत्र साधना संपन्न करें। कल्पकूल तिथियां २, ३, ७, १०, १३, १८, २३, २६ हैं।

मिथुन (का, की, कू, घ, घ, को, डा)

आपके असानुलिप्त व्यवहार से परिवार के अन्य सदस्यों एवं आपके स्वजनों को परेशानी हो सकती है। दूसरों की भावना का भी ध्यान रखें विशेषतः कुछ बोलने से पठने। इस माह आप की प्रतिकूल व्यक्ति से भेट कर पाएंगे जिससे कि आपका बहुत अधिक नाम होगा। अगर आप पूर्ण सक्षमता से अग्रसर होते हैं तो आपको, अवश्य ही सफलता प्राप्ति होनी। कला कर्म से जुड़े लोगों के लिए विशेष रूप से उत्तम समय है तथा उनके प्रयास आश्वासन सफलता लाएंगे। इस मास पूर्ण सफलता हेतु गणयोग साधना संपन्न करें। विशेष तिथियां २, ३, १५, १६, १७, २२, २५, २९, ३० हैं।

४० 'नवम्बर' 2002 मंत्र-नंत्र-नंत्र विज्ञान '८०' ५५

क्रक्ष (ही, हू, हो, डा, डी, डे, डा)

कोई भी नया रोजगार या व्यापार आरंभ करने के लिए समय उत्तम है। हो सकता है प्रारंभ में सापको कुछ संघर्ष का सामना। करना पढ़े परंतु आप अपने लक्ष्य के प्रति डटे रहेंगे तो शीघ्र सफलता आपके कदम चूनेगी। बस आवश्यकता है कि आप आलस्य न्याग कर, परिश्रम करने में जुट जाएं। कम्पन्यूल, संचार एवं प्रेस से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय विशेष अनुकूल है। जीवन साथी से व्यवहार को लेकर कुछ अनुबन्ध हो सकती है। इस माह आप कमला साधना अवश्य संपन्न करें। विशेष तिथियां १, ३, ७, १०, १४, १६, २१, २९, ३० हैं।

मिथुन (मा, मी, मू, मे, मा, टा, टी, ट्र)

अपने पिछले कुछ महीनों में बहुत अवश्यकनक उत्तमता की है। प्रतिश्वेषियों की चालों के बावजूद आप सफल रहें। यह माह आपके लिए और भी शुभ समाचार लेकर आने वाला है। जहां कार्यस्थल पर सब आपकी प्रशंसा करते नहीं वकेंगे वहीं परिवार में भी प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। बहुत लंबे समय तक उलझा कोई सामना इस माह सुलझ जाएगा। बाहर का खाना न ही खाएं तो अच्छा है। संतान की ओर से आप निश्चित रहेंगे। इस मास आप काल धैर्य साधना संपन्न करें। शुभ तिथियां १, ४, १०, १३, १५, १७, २२, २५, २७ हैं।

क्रक्ष (टी, पा, पी, पू, घ, घ, टा)

यह महीना आपके लिए संघर्षपूर्ण रहेगा। अगर आप किसी अदानती मामले में उलझे हैं तो आप पाएंगे कि स्थिति आपके प्रतिकूल ठोकी जा रही है। परंतु घबराएं नहीं हर विपरीत स्थिति का सामना डट कर करें, सफलता आपको ही प्राप्त होगी। बाहन का प्रयोग करते समय भी साक्षात् रहें, दुर्घटना होने का खतरा है। उठार आप किसी जायदाद या जमीन का कर्य विक्रय करने के विषय में सोच रहे हैं तो यह समय ठीक नहीं, घाटा उठाना पढ़ सकता है परिवार की ओर से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता तथा मास के अंत में किसी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। इस मास विरीत स्थितियों पर काढ़ पाने के लिए अवश्य साधना करें। विशेष तिथियां

स
साधन
स्थिति
स्थिति
२, ३,
द्वा
आप
है परंतु
आदर
सकता
किसी व
से प्रेम
स्थिति
लापरव
स्थिति।
में आप
रहेगा न
आप घ

८, ११
द्वारा
इस
स्थिति
को पूर्ण
आप उ
जाने प
मन में
विवरों
इसके स
सफलता
तिथिया
व्याप
जो तथा म
है तो उ
हानि उ
स्वास्थ्य
के लिए
नवार्ण
११, १२
कर्म
आ
है कि
अवश्य
कार्य न

सर्वार्थ, अमृत, रवि पुष्टि, दिपुष्कर, शिद्धि योग

सर्वार्थ सिद्धि योग २६ नवम्बर, ५, ७, १८ दिसम्बर
सिद्धि योग १३, १७, १९, २८, २९ नवम्बर
दिपुष्कर योग २५ दिसम्बर

२, ५, ९, १३, १६, २३, २४, २५ हैं।

दुला (रा, री, रु, ता, ती, तु, ते)

आप समझते हैं कि केवल आपकी भावनाओं का मूल्य है परन्तु वेष्या नहीं है। अगर आप दूसरे की भावनाओं का आदर नहीं करेंगे तो आपको वह सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता जिसकी आप आशा करते हैं। विश्वावे और पैसे से किसी का दिल नहीं जीता जाता। उसके लिए आपको इव्य से प्रेम प्रकट करना होगा। इस मास आप कुछ ऐसी ही स्थितियों से गुजरेंगे। स्वास्थ्य के संबंध में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। नहीं तो चिकित्सा में भारी व्यय हो जाकता। इस माह आपके कुछ नए संपर्क बनेंगे जो कि भाविष्य में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। दामन्त्र जीवन सुखी रहेगा तथा भूतान पक्ष भी आपके अनुकूल रहेगा। इस माह आप घनवत्तरी साधना संपन्न करेंगे। विशेष तिथियाँ ३, ७, ८, १३, २३, २६ हैं।

दुश्शिक (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)

इस माह व्यापार या कार्य में व्यस्तता बढ़ेगी तथा आधिक स्थिति में सुधार होगा। इस माह आपको भित्ति तथा संबंधियों को पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा इसके सहयोग के कारण आप आश्चर्यजनक प्रगति कर पाएंगे। कुछ भित्ति से दूर हो जाने पर मन में खिलना होगी परन्तु नए भित्ति भी बनेंगे इसलिए मन में प्रगति होगी। कुछ बहुत समय से चले आ रहे। विवादों का डल प्राप्त होगा। घरेन्तु कार्यों में भी रुचि नहीं, इसले परिवार में सहयोग का बातावरण बनेगा। इस माह पूर्ण सफलता हेतु आप ज्ञाला मालिनी साधना संपन्न करें। शुभ तिथियाँ ५, ९, १४, २६, २०, २१, २३, २६ हैं।

धन्न (ये, यो, भा, भी, धा, फा, वा, भे)

जो भी कार्य करना चाहते हैं उसे संयम सूझबूझ के साथ तथा मैलिक निर्णय लेने हुए करें। अगर व्यापार में साझेदारी है तो सतर्क रहें। धोखा हो जाने का मर्य है जिससे कि भारी हानि उठानी पड़ सकती है। परिवार के किसी एक सदस्य के स्वास्थ्य को लेकर चिंता हो सकती है। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है पूर्ण अनुकूलता हेतु इस मास नवार्णयंत्र साधना संपन्न करें। विशेष तिथियाँ - २, ४, ९, ११, १६, २३, २७, ३० हैं।

जग्नक (ओ, जा, जी, खु, खे, खो, जा, जी)

अधिकारियों से विवाद होने से आप चिन्ता रहेंगे। ही स्कूल है कि स्वास्थ या कार्य परिवर्तन का योग बन जाए। ऐसे अवसर को चुकें नहीं। परन्तु यदि रखें कि जल्दबाजी से बनते कार्य बिगड़ भी सकते हैं, अतः संयम य धैर्य से निर्णय ले-

यह मास ज्योतिष के दृष्टि में

प्रहों की गणना बढ़ाती है कि राजा भूमि में नये राजकुमार के दूरदूर तो बहुत ही दूर है। परिवारी प्रति के रूप में उन्मान सम्पूर्ण जीवन है। तीक्ष्ण व्यापार पर आधिक अवसर पड़ता। नियति की स्थिति ही अनुकूल नहीं रहता। खाजों वेष्यों पर भी अत्यधिक अशुद्धि रहेगी जिस कारण व्यापकी वेष्यों के संघर्ष जिससे होता।

बेरोजगार व्यक्ति नए कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। साधनात्मक दृष्टि से यह मास आपके लिए अनुकूल है। इस मास आप और आधिक सफलता हेतु लक्ष्मी विनायक साधना संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, २, ५, ८, १०, १८, २१, २३, २५ हैं।

कुंभ (गु, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

आप इस माह नए उत्साह के साथ जीवन में आज बढ़ेगे आपके सोचे हुए सभा कार्य पूर्ण होने तथा आप शीघ्रता में अपने लक्ष्य की ओर बढ़ पाएं। व्यवहार के तत्त्व से बचने हुए अपने कार्य में तल्लीन रहें। किसी के बहकावे में आकर काढ़ मीं कदम नहीं उठाएं। सभी नियंत्रण स्वयं ले नहीं तो हासि उठानी पड़ सकती है। धार्मिक प्रसंगों को कर याचा का योज बनेगा तथा याचा सुन्दर होगी। इस माह आप कमक ग्रभा साधना संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ३, ६, १२, १३, २०, २४, २७, ३० हैं।

कीदू (दी, दू, थ, थ, दे, दो, छा, ची)

समस्याओं एवं चिंताओं का निवारण स्वयं ही हो जाएगा तथा आप अपने कार्य बीच में मन लगावर आग बढ़ पाएंगे। जो व्यक्ति प्रधार प्रसार के क्षेत्र में कार्य बरते हैं उन्हें उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। मित्र एवं बंधुओं किसी विवाद के सुलझाने के लिए आपका सहयोग प्राप्त करेंगे ज्ञानार में विशेष लाभ होने की संभवता है। इस माह आप अक्षय पात्र साधना संपन्न करें। विशेष तिथियाँ - १, ३, ७, १२, १५, २१, २५, २९ हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

२५ नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-०७	०७ दुधयार काल वैशाखी
३० नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१३	३० शनिवार उत्तम पक्षवर्षी
१५ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-३१	१५ रविवार मोक्षय एकादशी
१३ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१३	१३ रविवार धीनी एकादशी
१४ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१३	१४ देवगलवार प्रदीप व्रत
१५ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१५	१५ गुरुवार दत्तात्रेय जयती
१६ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१५	१६ गुरुवार पूर्णिमा व्रत

समाया

आधिक, पाठक द्वया संवेदन सामाल्य के लिए समय का बहु रूप यह प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उच्चति का कारण होता है तथा जोहे जान कर आप स्वयं अपने लिए उच्चति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीते दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आद्यक किसी भी कार्य के लिये, यहेवह व्यापार से साम्बन्धित हो, गोकरी से सम्बन्धित हो, धर में शुम उत्सव से सम्बन्धित हो इथां किसी भी कार्य से गम्भीर सम्बन्धित हो, आप इर श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ११-१० आपके शास्त्र में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म कुरुते का लम्य प्रज्ञ: ४.२४ ऐ ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (नवम्बर 24) (दिसम्बर 1-8-15)	दिन ०७.३६ से १२.२४ २.४८ से ५.२४ से ४.३० तक रात्रि ०७.३६ से ०९.१२ ११.३६ से २.०० तक
सोमवार (नवम्बर 25) (दिसम्बर 2-9-16)	दिन ०६.०० से ०९.१२ तक ०९.१२ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ से ६.०० तक रात्रि ०८.२४ से ११.३६ तक ०२ से ०३.३६ तक
मंगलवार (नवम्बर 26) (दिसम्बर 3-10-17)	दिन ०६.०० से ०७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से ०२.४८ तक रात्रि ०८.२४ से ११.३६ तक ०२.००-०३.३६ तक
बुधवार (नवम्बर 27) (दिसम्बर 4-11-18)	दिन ०६.४८ से ०८.२४ तक ०८.२४ से ११.३६ तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०४.२४ तक
गुरुवार (नवम्बर 28) (दिसम्बर 5-12-19)	दिन ०६.०० से ०६.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ०३.०० से ०५.१२ तक ०५.१२ से ०६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार (नवम्बर 22-29) (दिसम्बर 6-13)	दिन ०९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक ०२.०० से ०४.२४ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०२.०० तक
शनिवार (नवम्बर 23-30) (दिसम्बर 7-14)	दिन १०.४८ से २.०० तक ०५.१२ से ०६.०० तक ०८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से ०२.४८ तक ४.२४ से ०६.०० तक



‘नवम्बर’ 2002 यंत्र-नंत्र-यंत्र विज्ञान ‘६२’-४६

यह हमारे जीवन में हित कहा है

किसी भी कार्य को प्राप्त करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में राश्य-अंतराश्य की भावना रहती है कि यह काम सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बदले तो उपचित नहीं हो जायेगी, परन्तु दिन का प्राप्त किस प्रकार से होगा, जिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तानाशहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाता रहता है जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल प्रकाशित-अवकाशित ग्रंथों से सक्रिय हो, जिन्हें वह प्रत्येक दिवस के अनुकूल प्रभुता किया गया है तथा दिल्ली सम्पर्क करने पर अपेक्षा पूरा दिन भूमि सकलतादायक रह जाता।

चिसम्बर

१. 'जोमती चक्र' (न्यौछावर-२५/-) को घर के बाहर उत्तर दिशा में पेंक दें, बाधाएं खत्म होंगी।
२. 'ॐ हु हाँ ही हू नमः' का २५ बार मन ही मन में उच्चारण करें।
३. कली पिंड के सात दाने लेकर झींकी का उच्चारण करने हुए अपने चारों ओर फेंकें।
४. 'तांत्रीकृत फल' (न्यौछावर-५०/-) को कुंकुम से रंग कर किसी निमन स्थान में भूमि में गाढ़ दें।
५. इलायची को दाएं हाथ में लेकर ५ बार 'श्री गं श्री' बोलें, उसे खा लें, फिर बाहर जाएं।
६. प्रातः काल स्नान करने वाले जल में पांच बार तर्जनी उंगली से 'ॐ' लिखकर फिर स्नान करें।
७. 'श्रीफल' (न्यौछावर-५१/-) को अपने पास रखें, दिन भर के कार्यों में अनुकूलता प्राप्त होंगी।
८. प्रातः काल अपने सामने दीपक जलाकर उच्चार २ से ५ मिनट तक त्राटक करें, तत्पश्चात आंख बंद कर राखासन करें आपके मनोबल में वृद्धि होंगी।
९. आज केले के वृक्ष अथवा तुलसी के पीधे में तांबे के पत्र से जल अर्पित करें। भाग्योदय होगा।
१०. प्रातः एक कागज पर 'कली' लेज २५ बार लिख कर उस कागज को जला दें, विषवा टल जाएगी।
११. आज प्रातः एक नदा यजोपवीत लेकर उसे गुरु चित्र के सम्मने रखें तथा 'ॐ परम तत्त्वाव नमः' का ५ मिनट तक जप करें, फिर यजोपवीत धारण करें, इनसे आगमी असंगल का नाश होगा।
१२. दैनिक साधना विधि से निखिल पंचक का पाठ करें।
१३. दिन में किसी भी समय 'ऐ हीं कली चामुण्डायि विच्छे स्वाहा' मंत्र से ५१ बार धी की आहुति के, फिर आवश्यक कार्य हेतु जाएं।
१४. चटकी भर हींग को अपने ऊपर से चुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें।
१५. प्रातः काल सर्वोदय होने पर सूर्य को एक कलश जल का अर्च अर्पित करें, तथा आशीर्वाद की प्रार्थना करें। दिन शुभ रहेगा।
१६. आज गुरु पूजन करने के बाद एक तांत्रिक नारियल
१७. पारद शिवलिंग अथवा गुरु यंत्र पर तुलसी के सात पले अर्पित कर अपने स्त्रास्त्र की प्रार्थना करें।
१८. घर के द्वार पर कुंकुम से स्वस्त्रिक बनाएं, तथा चावल की एक ढेरी पर एक सुपारी में गोलि बाध कर रख दें। यह लक्षणी आकर्षण का एक प्रयोग है।
१९. प्रातः काल गुरु चित्र के समझ खड़े होकर निम्न ऊपोक का पांच बार उच्चारण करें, प्रसन्नता अनुमत होगी। गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु गुरु वेदो महेश्वरः।
२०. गुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्ये श्री गुरवे नमः॥
२१. गुरु जन्म दिवस के रूप में प्रातः 'निखिलेश्वरानन्द स्नानवन' का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु चित्रन करें तथा गुरु कार्य करने का संकल्प करें।
२२. गुरु पूजन करने से पूर्व भाज प्राणायाम करते हुए 'सोडह' नव का पांच मिनट जप करें।
२३. आज प्रातः गुरु पूजन के बाद शिवफल (न्यौछावर-५०/-) का एक बार नीलि में लपेट कर गाठ लगा दें, दिवस शुभ होगा।
२४. आज दिन भर गुरु चित्र को अपने पास रखें।
२५. आज अपने पास एक पाने रंग का कोई वस्त्र, खाली आवश्यक रखें, शनु हाली नहीं होंगे।
२६. प्रातः आज दायें हाथ की मुड़ी में रक्ता गुटिका (न्यौछावर-५०/-) केक दें, काढ़ में सकलना प्राप्त होंगी।
२७. प्रातः काल अपनी दोनों हथेलियां का देखकर निम्न गंत्र का उच्चारण करें।
२८. करत्ति वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।
२९. गायत्री मंत्र बोलते हुए प्रातः शूर्योदय होने पर सूर्य को एक कलश जल अर्पित करें। तेजस्विता में वृद्धि होगी।
३०. आज रात्रि में बन्द्रमा का वर्णन करने के बाद खोल, स्वयं में कोई गुप्त संकेत प्राप्त होगा।
३१. नियमित रूप से जितनी माला गुरु मंत्र की जपते हैं, उससे चार माला अधिक जप करें, फिर कहीं जाएं।



गुरु गुरुदेव की कृपा से दुर्घटना टली

पूज्य गुरुदेव जी, बन्दनीय माना जी और गुरु श्रीमृति के चरणों में सादर प्रणाम, आपकी कृपा से असभव सभव हो गया और मेरे साथ मेरे तीन गुरु भाईयों की जान बच गई। घटना १८ अगस्त २००२ की है। मेरे तीन गुरु भाई राकेश मेहरा, नरेश शर्मा तथा रमेश टाक उकलाना से मेरे गांव कुन्दनपुर आये। उन्होंने कहा कि गानु बाला बाबा-जी श्री राम जी के पास चलते हैं। कुछ देर गुरु चर्चा करने का स्त्रीशास्य प्राप्त होगा। बाबा श्रीराम जी भी आपके शिष्य हैं। उनसे दो घंटे करीब बातों लाभ होने के बाद हमारे गांव कुन्दनपुर यापत्ति आ रहे थे तो हम गुरु चर्चा में तब भी इतने ही लीन थे गये थे कि रेल पटरी क्रास करते समय यह देखना भी भूल गये कि कहीं कोई गाड़ी तो नहीं आ रही है। और देखा कि हिसार से लुधियाना के तरफ आने वाली गाड़ी आ रही है और उसने उचानक सिटी भी मार दी। रेल गाड़ी हम से करीब १०० मीटर दूर थी। घबराहट से राकेश एक ठम डिझिक गया और स्कूटर बन्द हो गया। मैं सबसे पीछे बैठा था इसलिए मैं स्कूटर से छलांग लगाने जा तो स्कूटर झटके से एकदम आगे की तरफ लुढ़क गया और हम सब एक तरफ हटे।

हम पटरी से पार हुए ही थे कि गाड़ी हमारे पास से गुरार गई। और हम बारों की जान बच गई। आपकी कृपा महान है।

सुरेश कुमार निश्चिन
ग्राम - कुन्दनपुर, जिला विलार,
हरियाणा

गुरु कृपा से परिवार में शान्ति

आपकी असीम कृपा से मैं रत्ना पाएँदे, मेरे पति प्रमोद कुमार पाएँदे एवं मेरी बेटों बेटी एक ठम खुश हैं। मेरे पति मैं शराब पीने की बुरी लत थी और किसी के कहने पर हमने जोधपुर में अगस्त २००० में गुरु दीक्षा ली। गुरु देव ने पूरे परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया और मेरे पति को कहा कि परिवार में पूर्ण शान्ति रहनी चाहिए। साथ ही नियमित गुरु मंत्र जप का भी निर्देश दिया। उस दिन से मेरे पति ने यह आदत बिलकुल छोड़ दी है और घर में प्रेम और शान्ति का बातावरण हो गया है जिस कारण मैं आपकी कृपा शब्दों में बयान नहीं कर सकती। सब परिवारों में ऐसी ही गुरुशी रहे।

रत्ना पाएँदे डारा श्री प्रमोद कुमार पाएँदे
१५ काम्प, सिगनल रेजिस्ट्रेशन में '१६ ए.पी.ओ.

गुरुदेव की असीम कृपा से जान लची

हमारा परिवार में प्रत्येक व्यक्ति ने गुरु दीक्षा ले रखी है। मैंने और मेरी पत्नी ने रायगढ़ी बड़ी लड़की ने पुरी में तथा छोटी लड़की ने बिलासपुर में गुरु दीक्षा ग्रहण की थी और हम सब नित्य गुरु पुजन करते हैं।

१५ अगस्त २००२ को हम लोग जोए थे कि रात्रि करीब ११ बजकर ३० मिनट पर मेरे निवास पर किसी ने दरवाजा खटखटाया। तीन-चार लोग थे। पछले पर एक ने कहा कि श्रीया दरवाजा खोलो। मैं रुचेशन से आया हूं। मैंने और पत्नी ने थोड़ा सा दरवाजा खोल कर देखा तो चार लोग तलबार जैसे हवियार लिये खड़े हैं तैसे ही मैं और मेरी पत्नी दरवाजा बंद करने के लिए जोड़ लगा रहे थे और उन चारों ने बाहर से दरवाजा खोलने के लिए ताकत लगा रहे थे। मैं और मेरी पत्नी गुरुदेव का नाम लिए और याद किये तो दरवाजा कब और कैसे बन्द हो गया यह स्थान्य गुरुदेव ही जाने और हम लोगों की जान बची। नहीं तो क्या हावसा हो जाता।

सदगुरुदेव एवं गुरु त्रिमूर्ति का चित्र दरवाजे में ऊपर ही स्थापित है। परमपूर्ण की असीम कृपा से मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य सही सलामत बच गये। ऐसी ही गुरु कृपा होती रहे हम लोग तो केवल चरणों की सेवा ही कर सकते हैं।

आपका प्रिय शिष्य

फूलचन्द विश्वकर्मा

पोस्ट: युहला तहसील कट्टनी,
निला कट्टनी मध्य प्रदेश

गुरु कृपा से संतान प्राप्ति

पूर्ण गुरुदेव के पावन चरणों में गया प्रसाद विश्वकर्मा तथा निखिल धाम द्विडारी के सभी साधक परिवार का प्रणाम स्वीकार हो।

आगे आपको बताते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि आपकी अनुकंपा से इस शिष्य के यहाँ करीब दस वर्ष बाद ६-८-२००२ को शाम ७.४० पर बालक पुत्र का जन्म हुआ है। बालक और उसकी माता पूर्णतः श्वर्य हैं। बालक के

जन्म से पहले मेरी पत्नी को चार-पांच बार गर्भपात हो गया था। तब कट्टनी वाले वरिष्ठ गुरु भाई ने गुरु साधना और शिव साधना संपत्ति करने हेतु कहा। पत्रिका में दिये गये नियम अनुसार मैंने और मेरी पत्नी ने साधना की। जिससे मेरे घर में वस वर्षों बाद पुनः खुशहाली आई है। गर्भवत्स्था में नियमित रूप से पत्नी मैं गर्भस्थ शिशु को चेतना केता हूं कैमेट भी सुनती रही। सभी शिष्यों पर आपकी ऐसी ही कृपा बनी रहे, मेरी पत्नी का प्रणाम स्वीकार करें।

गया प्रसाद विश्वकर्मा

निखिल धाम द्विडारी,

निला कट्टनी

मध्य प्रदेश

गुरुदेव कृपा से परीक्षा में राज्ञत

मैं अपने गांव १२ किमी, दूर शहर में किरणे पर कमरा लेकर रहता हूं। पिछले साल मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहा था और बीच मैं मुझे कमरा बदलना पड़ा। कमरा बदलने में काफी परेशानी उठानी पड़ी थी। मैंने परीक्षा में करीब ४-५ महीने पहले निश्चय कर लिया कि मैं इस साल परीक्षा नहीं दूँगा। क्योंकि मेरी प्रथम श्रेणी नहीं बन पाती। जिससे पढ़ाई छत्ती हाली ढो गई कि हव मेरे ज्याद यह सब हमने अपने घर पर बिना बताए ही किया था। जब परीक्षा के १० दिन रह गये तब यह सब हमने अपने घर पर बनाया तो हमारे बड़े बाले भाई हम पर बहुत अधिक नाशन द्युए और उन्होंने हमे परीक्षा देने के लिए मजबूर कर दिया। और उन्होंने कहा कि परीक्षा के समय कम से कम दो माल: गुरु मंत्र की करते रहना। और यह सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। जिससे मुझे परीक्षा में पूर्ण सफलता मिली।

मुझे ऐसे ही गुरुदेव जी आशीर्वाद देने रहे और हमारा ध्यान उनके चरणों में ही रहे यहाँ हमारी कामना है।

आपका शिष्य

राजेश कुमार शर्मा

ग्राम: रोशन नगर पोस्ट बद्रसुआ,

निला बड़ाबू, उत्तर प्रदेश

जीवन राखा



यो तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परंतु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है कि शभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। गर पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

१. क्या आप पैदों में दर्द के चलने में बढ़ी गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।
को अकार्यी भ्रह्मक करते हैं?

उस के साथ-साथ पैदों की ताकत धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है और हड्डियों में कठोरता आने के कारण उनमें दर्द, मांस-पेशियों में अचानक खिंचाव आदि अनेक बीमारियों से व्यक्ति ग्रसित होते जाते हैं, जिनके कारण चलने में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि आप भी पांव के रोगों से ग्रसित हैं, तो वह प्रयोग करके अपने रोग को नियंत्रित कीजिए।

किसी भी बुधवार को लकड़ी के बाज़ोट पर लाल वस्त्र बिछा दें, उस पर मसूर की दाल से आठ वर्ग बनाए। प्रत्येक वर्ग में सुपारी रख दें, तथा उनके बीच में 'कृत्वा गुटिका' को स्थापित कर सुपारी तथा कृत्वा सी बन जाती है। आपको इस प्रकार का मानसिक का पूजन कुकुम, पुष्प, अक्षत से करें। धूप लगा दें, तनाव अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए उसका समाधान फिर जिस प्रकार से सुविधा हो उस प्रकार से बैठ कर ढूँढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए।

निम्न मंत्र का जप २१ बार करें-

मंत्र

॥ अ ही अ ॥

यह प्रयोग तो दिन का है। नी दिन के बाद कृत्वा

३५ 'नवम्बर' 2002 मंत्र-जन-यज्ञ विज्ञान '८८'

साधना सामग्री- १२०/-

२. कहीं आप मात्रिक तनाव के शिकाव ती अहीं हैं?

आपके दिल में कोई बात बैठ गई है या किसी समस्या के कारण आप परेशान हों उस समस्या का समाधान आप सोच विचार कर अपने परिवार में सलाह कर भी कर सकते हैं।

इस प्रकार आपको अपने दिल पर लेने की कोई जरूरत नहीं है, हर समस्या का समाधान है। लेकिन समस्या कुछ समय के लिए ही आती है और व्यक्ति उसी में परेशान रहता है। फिर उसकी ऐसी ही आदत का पूजन कुकुम, पुष्प, अक्षत से करें। धूप लगा दें, तनाव अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए उसका समाधान फिर जिस प्रकार से सुविधा हो उस प्रकार से बैठ कर ढूँढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए।

इसके लिए आप रोज सुबह प्रातः काल उठकर अपने कुल के देवी देवतों का ध्यान कर अपने पूजा स्थान में 'विशुत माला' को स्थापित कर उस माला से मात्र

आपको
मंत्र
आप
खुद ल
है। मात्र

३.
दे बहु

किस
आधार
भास्य
नहीं पि
जो पुर
क्षीण
भी बा
आसन
के ही
निर्मित
को ज
के लि
की म
पर

भुगत
का उ
भा
कार्य
असी
आवे
तो च
को च
इ
पूर्ण

आपको १ माला मंत्र जप करें-

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वकार्यं सिद्धये ह्रीं ह्रीं ॐ ॥

आपको और कुछ नहीं करना है। फिर इन्हिस आपको खुद लशेगा की आपके अन्दर कितना परिवर्तन आया है। माला को आप धारण कर लें।

साधना सामग्री पैकेट- ३००/-

३. क्या आपका भाग्य आपका काथ नहीं दे बछा है?

किसी भी कार्य में सफलता के लिए मूलतः दो ही आधार होते हैं, एक तो कर्म और दूसरा भाग्य। मात्र भाग्य के ही भरोसे बैठने वाले व्यक्ति को भी सफलता नहीं मिलती। दैवी सहायता भी उसी की प्राप्त होती है, जो पुरुषार्थी होते हैं। ठीक इसी प्रकार यदि भाग्य अन्तर्यात् क्षीण हो, तो भी व्यक्ति अथक परिश्रम करने के पश्चात् भी बहुत घोड़ा ही तरक्की कर पाता है। भाग्य कोई आसमान से टपकी चीज नहीं होती अपितु स्वयं व्यक्ति के ही पूर्व में किए गए संचित कर्मों के आधार पर ही निर्भित एवं फलित होता है। भाग्य दोष से ग्रस्त व्यक्ति को जीवन में प्रायः असफलता का मुँह ही ढेखते रहने के लिए विवश होना पड़ता है, अब वह एसे वह ईश्वर की मर्जी भी कह सकता है या कुछ और।

परंतु सत्य तो यही है, कि भाग्य दोष का प्रभाव उसे भुगतना ही पड़ता है। साधना द्वारा भाग्य दोष निवारण का उपाय है।

भाग्य पक्ष का सहयोग मिलने पर जब व्यक्ति किसी कार्य के लिए प्रयास करता है, तो फिर सफलता असन्दिग्ध नहीं रहती। तब वह किसी नीकरी के लिए आवेदन करता है, या किसी व्यापार में पूजी लगाता है, तो सफल रहता है। यह प्रयोग आपके सोये हुए भाग्य को जगा देने के लिए पर्याप्त है।

इसके लिए किसी मंगलवार को स्नानादि कर गुरु पूजन सम्पन्न करें। फिर अपने सामने अक्षत का आसन

ढेकर - 'भाग्य बाधा निवारण यंत्र' को किसी ताय पात्र में स्थापित करें। फिर यंत्र के मध्य में कुकुम से एक बड़ी गोल बिन्दी बनाएं। अब इस बिन्दी पर ब्राटक करते हुए १५ मिनट तक जप करें।

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं पूर्ण भाग्योवयं कुरु ॐ नारायणाय नमः ॥

जब आख्य से पानी आने लगे, तो आंख बंद कर पुनः ब्राटक करते हुए मंत्र जप प्रारंभ करें। ऐसा ब्राटक १ दिन तक करना पर्याप्त है। मंत्र जप २१ बिन तक करना है। उसके बाद यंत्र को जल में डापित कर दें।

साधना सामग्री- ३००/-

४. नीकरी में पदोन्नति के लिए

रुके हुए जल में से सड़ान्ध आने लगती है, उसी प्रकार एक ही पद पर कई वर्षों तक बने रहने के बाद भी जब व्यक्ति की उत्तरति नहीं होती, तो उसका जीवन भी उस रुके हुए जल की ही भाँति हो जाता है। दूसरे अन्य व्यक्तियों की पदोन्नति होती है, और आप योग्यता एवं अनुभव दोनों की पात्रता लिए हुए भी खाली हाथ बेत रह जाते हैं। इसका कारण नीतियों की स्वपरेखा भी हो सकती है, परंतु इसका असर व्यक्ति की आत्म शक्ति पर अवश्य पड़ता है। इस साधना द्वारा आपके पार्श्व में आ रही रुकावट व बाधाएं समाप्त होने लगती हैं और वर्ष भर के अन्दर ही आपकी पदोन्नति होती है।

यह ५ शुक्रवार की साधना है। प्रत्येक शुक्रवार को अपने सामने रखे पाव में 'शीघ्र कार्यं सिद्धिं यंत्रं' पर निम्न मंत्र का 'विघ्नेश्वरी माला' से ५ माला जप करें।

मंत्र

॥ ॐ कलीं दें सी : फद ॥

इसके बाद यंत्र को काले कपड़े में लपेटकर कहाँ सुरक्षित रख दें। अगले शुक्रवार को पुनः यही क्रम दुड़राएं। ५ शुक्रवार के बाद समस्त सामग्री को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट- ३२०/-



नववर्ष का प्रथम दिवस प्रदान की जाने वाली महान दीक्षा

- १ जिसके साम्यान से शुरू शिष्य दो शक्ति दरखत कर संचार करते हैं
- २ जिसके साम्यान से शुरू शिष्य दो वाह्योग प्रदान करते हैं
- ३ जिसके साम्यान से शुरू शिष्य दो दाखिल करते हैं

गुरु की कृपा का फल शिष्य की शिक्षा के माध्यम में ही प्राप्त होता है शिष्य की शिक्षा, में भी भ्रमण से प्रभृत होकर मनुष्य की शिक्षा देने के लिए प्रयत्न होते हैं। गुरु से शक्ति प्राप्त करने का क्या तात्पर्य है भी कब गुरु शिष्य पर कृपा कर देते हैं उस संबंध में एक विचार्याल-

संसार में कई व्यक्ति यह कहते हैं कि हमें भौतिक और अनैतिक दोनों ही क्षियाओं के संबंध में बहुत अधिक रखता है लेकिन उसके कर्म उसके मार्ग में बाधाएं बनकर जानकारी है। कई व्यक्ति कहते हैं कि मैं पूरी जीता का उच्चारण उपस्थित होते हैं। कई व्यक्ति मन्त्रिष्ठ से तो तीव्र होते हैं कर सकता हूं कई व्यक्ति कहते हैं कि मैं जीवन में कई तीर्थ लेकिन मानसिक शक्ति और शारीरिक शक्ति तीव्र मर्दी होती। स्थानों की जाता हूं और मुझे सब प्रकार की लिखिया प्राप्त कई व्यक्तियों में मानसिक एकाग्रता होती है लेकिन ज्ञान का हो गई है। वास्तव में जो सब कुछ जानने का कहते हैं वे अभाव रहता है। कई व्यक्तियों में जान होता है लेकिन अनुभव वास्तव में कुछ भी नहीं जानते और जो वास्तव में जानते हैं वे और अनुभूति की कमी होती है। इन सब जातों को जानने के कभी अपनी भिंडि पर गर्व नहीं करते हैं।

व्यक्ति संसार में कई प्रकार की क्रियाएं करने की इच्छा अनैतिक दोनों ही क्षियाओं के संबंध में बहुत अधिक रखता है लेकिन उसके कर्म उसके मार्ग में बाधाएं बनकर जानकारी है। कई व्यक्ति कहते हैं कि मैं पूरी जीता का उच्चारण उपस्थित होते हैं। कई व्यक्ति मन्त्रिष्ठ से तो तीव्र होते हैं कर सकता हूं कई व्यक्ति कहते हैं कि मैं जीवन में कई तीर्थ लेकिन मानसिक शक्ति और शारीरिक शक्ति तीव्र मर्दी होती। स्थानों की जाता हूं और मुझे सब प्रकार की लिखिया प्राप्त कई व्यक्तियों में मानसिक एकाग्रता होती है लेकिन ज्ञान का हो गई है। वास्तव में जो सब कुछ जानने का कहते हैं वे अभाव रहता है। कई व्यक्तियों में जान होता है लेकिन अनुभव वास्तव में कुछ भी नहीं जानते और जो वास्तव में जानते हैं वे और अनुभूति की कमी होती है। इन सब जातों को जानने के लिए और इन दोषों को दूर करने के लिए तथा शक्ति को पूर्ण

जीवन के पूल में ऊर्जा ही है जो शक्ति प्राण एवं मन्त्रश्चेतना के माध्यम से प्रगट होती है चक्र चलुओं से शक्ति को नहीं देखा जा सकता गुरु द्वारा जब शक्तिपात्र किया जाता है तो यह शक्ति जान और आत्म चेतना के रूप में स्पष्ट होती है और इसे ही कर्मयोग, भक्ति योग, राजयोग, कहा गया है। जिससे मनुष्य अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं सम्पन्न कर सके। और गुरु का व्यक्तित्व सार्वकालिक रहता है वह अपने अध्यात्मभाव से शिष्य के अन्तर्श्चेतना को स्वयं की अन्तर्श्चेतना से जोड़कर एक सूत्र का निर्माण कर देता है जिससे शिष्य को उद्घवर्गति प्राप्त हो।

रूप-से गहण करने के लिए सदगुरु आवश्यक हैं।

यह मनुष्य जन्म कई जन्मों की यात्रा करने के पश्चात प्राप्ति प्राप्त होता है और जब जीवन ग्राम होता है तो उसे सदगुरु अवश्य ही प्राप्त होते हैं। वे उसे शक्ति प्रदान करते हैं उसे श्रेष्ठ ज्ञान और मार्ग दिखलाते हैं लेकिन शिष्य ही मार्ग में भटकने लगे तो गुरु कुछ काल के लिए उसे अकेला छोड़ देते हैं, इसी लिए शिष्य को अपने कर्तव्यों और श्रेष्ठ कार्यों को निरंतर संपन्न करना चाहिए। तथा सदगुरु से मिलन के पश्चात तो गुणवारी, श्रेष्ठ दूसरों के कल्याण हेतु जगत में प्रशंसा कारी अन्तर्कर्म और अधिक संपन्न करनी चाहिए।

एक बार पृथ्वी पर महान समाट 'पुरु' हुए निनके बारे में कहा जाता है कि स्वेत रवर्गलोक की यात्रा की थी, एक बार उनका इंद्र से संवाद हुआ। इन्द्र ने पूछा कि आपने संसार में किस प्रकार के परोपकारी सत्कर्म किये हैं। इस पर राजा पुरु ने कहा कि मैं संसार में यद्य प्रकार के प्रयत्नसनीय गुणकारी, पराहित कारी, कार्यों को कर चुका हूं। इस पर इन्द्र ने पूछा कि किन-किन लोकों की आप यात्रा कर चुके हैं तो राजा पुरु ने

उत्तर दिया कि मैं ब्रह्म लोक, विष्णु लोक, तथा शिवलोक की देख चुका हूं। तब इन्द्र ने कहा कि मैं तुम्हें यह लोक का अधिष्ठित बनाता हूं, इस पर पुरु ने कहा कि मैं उस लोक में रोगी का इलाज करने से पहले कई प्रकार की परीक्षाएं जाना चाहता हूं जड़ों में अपने श्रेष्ठ कार्यों को निरंतर गति दे सकूं तथा मेरे भीतर दिव्यशक्तियों का निरंतरवास होता रहे, अपने कर्मों से और कर्मों की वास्तविकताओं से परिचित हूं। मैं अपने साध-साध दूसरों का भी कल्याण चाहता हूं।

इस्तेलिम् प्रस्त्रीलोक पर डी बार-बार जन्म लेना चाहता है। इसे महान विनार के कारण पुरु महात्मा और परमज्ञान विनार। जब प्रश्नान स्वयं साक्षात उपस्थित होकर उनमें वर्णन भीन्ते के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है जिसमें वह गुरु, ईश्वर तथा इष्ट का साक्षात्कार क

सकता है।

ज्यादातर व्यक्तियों में स्वार्थ की भावना पूर्णतः भरी होती है और जब मुरु कृपा दे वे इन्द्राएं पूर्ण होती हैं तो उनकी 'झो' उड़कार' और अधिक बढ़ जाता है और जब उनकी इच्छाएं पूर्ण नहीं होती तो वे गुरु पर ही दोषारोपण करने लगते हैं। मनुष्यों में अन्यीं प्रतिशत व्यक्ति गुरु कृपा को भन्दा नहीं पाते हैं और वह प्रतिशत व्यक्ति जो सुसंस्कारों से युक्त होते हैं वे गुरु कृपा के महान्य को समझ जाते हैं। शेष दस प्रतिशत व्यक्ति जीवन मार्ग में भटकते रहते हैं ज्यादातर व्यक्तियों को गुरु प्रति, ज्ञान और योग का मार्ग दिखलाते हैं जिससे वे अपने जीवन में शक्ति तत्व को भली मात्रा समझ कर अपने जीवन में उतारते हैं और जीवन के गुणात्मक कार्यों में वृद्धि करते हैं।

गुरु उन व्यक्तियों पर विशेष ध्यान देते हैं जो अपने भीतर भक्ति और शक्ति का तत्त्व लिए होते हैं उन्हें बहुत अधिक प्रियताओं से, परीक्षाओं से गुजारते हैं। उन परीक्षाओं में गुरु के मन में हर बार यही भावना रहती है कि मैं शिष्य को और अधिक दृढ़ तथा योग्य बनाऊ। हम इस कर्म संसार में रहते हैं इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करना, कर्तव्य करना आवश्यक है। केवल ज्ञान प्राप्त करना ही अधिक नहीं है। उन ज्ञान को कर्म भूमि पर लागू भी करना पड़ता है जो व्यक्ति यह कहते हैं कि मैं कोई प्रकार का कर्म नहीं करता वे बाल्तव में आकर्षी व्यक्ति हैं जो जीवन में अवृद्धियों को प्राप्त करने में असफल रहते हैं। वे असफलता छिपाने के लिए कर्महीनता का आश्रय लेने हैं।

जब तक हम ज्ञान का विकास करते रहते हैं तब वाल्तविक ज्ञान प्राप्त होता है जिस प्रकार व्यक्ति किसी रोगी का इलाज करने से पहले कई प्रकार की परीक्षाएं करता है इसी प्रकार गुरु भी ज्ञान और शक्ति देने से पहले उसे कई प्रकार की कड़ी परीक्षाओं से गुजारता है उसे अपने कर्मों से और कर्मों की वास्तविकताओं से परिचित हूं। मैं अपने साध-साध दूसरों का भी कल्याण चाहता हूं। करता है और जब एक भाव पूर्ण तेयर हो जाती है तो

गुरु से, पूर्णत्व से और शक्ति तत्व से भर देने हैं अन्यथा शक्ति की स्थिति 'विशंकु' के समान हो जाती है।

'विशंकु' गुरु विश्वामित्र के पास गया और साधना करने के पश्चात् स्वर्ग जाने की इच्छा प्रणट की इस पर विशंकु ने कहा कि तुम्हें अपने जीवन में कर्म तो करने ही पड़ेंगे जबकि 'विशंकु' जीवन के आवश्यक कर्मों को नहीं करना चाहता था इन पर नाराज होकर वह कहा, विश्वामित्र के पास गया और विश्वामित्र ने कहा कि मैं अपनी साधना के बल पर उसे मद्देह स्वर्ग भेज दुगा लेकिन कर्म गति पूर्ण नहीं करने के कारण वह स्वर्ग लक्ष्य पृथ्वी लोक के बीच अधर में ही लटक गया और गुरु शिष्य को कभी भी विशंकु नहीं बनाना चाहते हूं। पृथ्वी पर ही उसे पूर्ण रूप से योग्य बना देते हैं जिससे वह अपने जीवन पर स्वयं विजय प्राप्त कर सके। अपने जीवन को स्वयं भली भांति नमङ्ग सके और इसी स्थिति को पूर्ण करने के लिए गुरु शिष्य का 'शक्तन तत्वाभिषेक' करते हैं और इसी लिए 'शक्तन तत्वाभिषेक दीक्षा' केवल गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकती है। क्योंकि -

गुरोः कृपा वस्य भवेत् प्रभूता,

श्री देवतायाश्च महान् प्रसादः।

तस्यैव पुंसः दीक्षार्थ नाभः;

तस्यसात्र भक्तिन् खलोपनोद्धा॥

गुरु कृपा से ही साधक निर्द्दिन्द्र होकर अपने लक्ष्य को अपने पूर्णता को प्राप्त करने के लिए अशसर हो जाता है और उसे निरंतर शक्ति प्राप्त होती रहती है।

शिष्य की यात्रा

शिष्य की यात्रा गुरु चरणों तक ही तो होती है और यह यमस्त यात्रा पूर्ण हो जाने के उद्देश्य से ही तो होती है। मनुष्य यदि अपूर्ण न होता तो उसमें एक छटपटाहट क्यों होती, क्यों होता एक प्रवाह जीवन में कुछ कर गुजरने का, कुछ प्राप्त कर लेने का, उने प्राप्त कर लेने का जिसे वह अपना लक्ष्य, अपना प्रिय स्वप्न, और अपना एकमात्र ध्येय मान चुका है। और वह प्राप्त नहीं कर सका है, इसीलिए तो उसके अन्दर प्राप्त करने की इच्छा दोष है, इसीलिए वह अपने को अपूर्ण अनुभव कर रहा है। परंतु शास्त्र तो कुछ और ही कहते हैं, वे तो उद्घोष करते हैं- 'आहं ब्रह्मास्मि'

इसी तथ्य को उजागर करते हुए पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने जनवरी २८ में शिष्यों को आशीर्वदन के रूप में कहा था- 'मुझ पर यह दायित्व है, कि अपने शुभाशीर्वद के माध्यम से

तुम्हारे जीवन का पूर्णत्व में सिक्क कर, जिससे तुम्हारा जीवन प्रत्येक दृष्टि से बर्ण हो। तुम सभी शिष्य मेरे मानस पुत्र हो और महापूर्ण से उद्भव प्राप्त करने के कारण स्वयं भी पूर्ण हो। भूतु कल्पना करता है, कि तुम्हें अपना पूर्णत्व का बोध नहीं हो गया है, जिसका अब जाग्रत होना आवश्यक हो गया है। तुम सभी शिष्य मेरी प्राणश्चेतना के साथ-साथ स्वयं मेरी मनश्चेतना के अविभाज्य अंग भी हो, यदि तुम इस बात का समरण रखो, तो तुम मैं यह बोध स्वतः जाग्रति की मद्देह स्वर्ग भेज दुगा लेकिन कर्म गति पूर्ण नहीं करने के अवस्था में आ जाएगा।... और यही मन्देश लेकर केवल आज नहीं मैं तो सदा-सर्वदा से तुम्हारे मध्य उपस्थित रहा हूं।'

और यही तो इशावास्योपनिषद का यह श्लोक भी कह रहा है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमिवाव शिष्यते॥

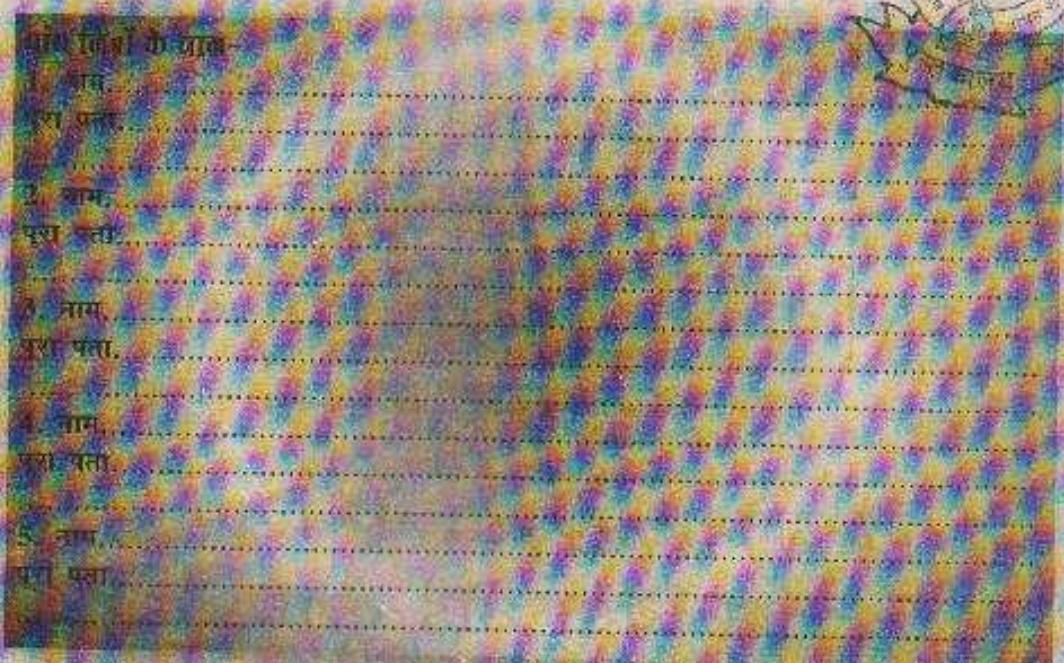
अशीत् संसार में सब कुछ पूर्ण ही है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उपत्ति होती है एवं पूर्ण से पूर्णत्व प्राप्त कर लेने पर भी पूर्ण पूर्ण ही रहता है।

यित्य शक्ति किल्सी एक स्वरूप अथवा विचार और क्रिया में बांधों नहीं जा सकती। वह तो संसार में सभी प्राणियों में विचरण करती है और शक्ति के संबंध में यह कहा जाता है कि शक्ति उसी की ही सकली है जो शक्ति को जानना चाहता है, पहचानना चाहता है उसे अपने भीतर जाग्रत करना चाहता है। और इसीलिए संसार में व्यक्तियों में भेद है लेकिन गुरु अपने किल्सी शिष्य को निर्बल नहीं रखना चाहते हैं वे प्रत्येक शिष्य के शक्ति तत्व से पूर्ण करना चाहते हैं जिससे वह स्वयं शक्तिमान होकर कर्मयोगी का जीवन जी सके। इस नववर्ष का उपहार नवीनता का संचार करना और जीवन में नवीन शक्ति भरना गुरु का कार्य है। शिष्य का कार्य तो विशुद्ध मन से अंहृत रुद्धि होकर गुरु के सर्वोप बैठ जाना है। तब उसे निर्धिल जान और निर्खिल शक्ति प्राप्त होती है। इस नववर्ष के

**आप शक्ति का स्वयंगत हैं गुरु शक्ति यीर्त
आरोग्य धान लई दिल्ली न गहा आप
वयवर्ष के प्रथम दिन गुरुदेव के आप
मन्दिरीय कामा नी के माथ अपने
शिष्यन कल्प दे शक्ति तत्व का बर्तील
मन्दिर कर्में और प्राप्त कर्में निर्मित,
शक्ति तत्वाभिषेक गहा दीला।**

त्रिरस्त्रां शर्मा

तत्त्वाभिषेक महादीक्षा



उस पश्चात्ती साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दोक्षा में आग लेने का पात्रता प्राप्त की है।
नाम
पुरा परा

पुरा परा

विशेष, जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह नियमित शक्ति तत्त्वाभिषेक महादीक्षा' उपहार स्वरूप नि: शुन्क प्रदान की जाएगी। पांच भिन्नों के पूर्ण प्राप्तिग्रीक पत्र, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, उस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये १२००/-२४०,(१३५+४५)-२४० X ५/- का बैंक द्रापट या भर्नी ऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क

मंत्र लंब-यंत्र विज्ञाल, डॉ. श्रीमान्नी गार्ड, हाईकोर्ट कलोनी, जोधपुर

342001, (राजस्थान)

फोन (Phone) -0291-432209, 433623 टेलीफैक्स (Telefax) - 0291-432010
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्डलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोन 011-7182248,

टेली फैक्स: 011-7196700

© 'नवमवर' 2002 मंत्र-लंब-यंत्र विज्ञाल '71'

अगर

भैरुष्टा तंत्र

से भी

सम्पूर्ण जीवन की जगमगाहट
और मनोवांछित सिद्धियां प्राप्त नहीं हुई¹
तो

मैं हमेशा-हमेशा के लिए
तंत्र विद्या छोड़ दुंगा

-गुरु जोरखनाथ

तंत्र विद्या का जिस प्रकार से विकास हुआ उसमें गुरु जो कि अब तक अत्यन्त गुम ही रहा है, वह तंत्र जीवन के शिष्य परंपरा प्रमुख रही, गुरुओं ने अपने शिष्यों को परखा, अमीं स्वरूपों को स्पष्ट करते हुए प्रत्येक स्वरूप व्यक्तित्व, उनकी बार-बार परीक्षा ली, और जो उनकी कमीटी पर शीर्ष, आनन्द, गृहस्थ, सुख, मानसिक सूख, शून्य विजय, स्वरा उत्तरा, उसे अपना ज्ञान-सागर में से कुछ विशेष तंत्र वर्णकरण, कामनापूर्ति, काम-विकास, परिपूर्णता आदि विद्याएं प्रदान की, और इनी प्रकार तंत्र विद्या का विकास प्रत्येक के सम्बन्ध में विकास किस प्रकार से सम्भव है, हुआ, प्राचीन काल से ही गुरु आजने शिष्यों को अपने अपूर्ण प्रयोग किसी भी प्रकार वे पूर्ण पुरुष हैं, उनकी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति इतनी से गलत कार्यों हेतु न किया जाए, और न ही इसे पुस्तक अधिक प्रबल रहती है कि वे अपनी इच्छानुसार जीवन रूप में लिपिबद्ध करके, सर्वसाधारणजन के लिए उपलब्ध जीते हैं, इस विशेष तंत्र का दुरुप्रयोग अत्यन्त कम लोगों कराया जाए, इसी कारण कुछ विशेष श्रेष्ठ तांत्रिकों के की जानकारी में रहने के कारण नहीं हुआ है।

पास ही यह ज्ञान रह गया, और उन श्रेष्ठ तांत्रिकों ने योग्य भैरुष्टा तंत्र-चमत्कारिक तंत्र

शिष्यों के अभाव में अपना विशेष ज्ञान आगे दिया ही नहीं।

'भैरुष्टातंत्र' इस महाविज्ञान का एक ऐसा स्त्ररूप है, प्रकार की शक्तियों को अपने भौतर समेटे हुए है, इस तंत्र

की साथ
इसकी न
कर देती
सकता,
श्रेष्ठ एवं
को हर
करने के
तंत्र-

मेने
समझ
कर रख
शिष्य,
में थेष्टन
प्राप्त क
चिना
प्रकार
संघर्ष
भैरु

है, जो
करने
विशेष
करता
देती है
अलग
तंत्र की
कामे
विजिव
नीतिप
विचित्र
इस
जाती
मंत्र,
साधन
साधव
मैर
कि स
किसी

की साधना व्यक्ति की विशेष सौन्दर्य दिलाने में समर्थ है, के लिए इसके साधना नहीं करें, और न ही इसका प्रचार इसकी साधना व्यक्ति में वशीकरण की वह शक्ति उत्पन्न व्यंग के रूप में करें, शक्ति उसे ही प्राप्त होती है, जो कि कर देती है, कि कोई भी उसके प्रभाव से अद्वृता नहीं रह पूर्ण श्रद्धा से शक्ति को अपने भीतर समाहित करना चाहता सकता, इसके प्रभाव से व्यक्ति का काम-जीवन अलगना है।

थ्रेषु एवं सुखकारक बन जाता है, इसके ज्ञान से साधक को हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होने के लिए उसे असीमित शक्ति प्राप्त हो जाती है।

तंत्र-रहस्य

मैंने इस मंत्र के रहस्य को अपने शिष्यों, साधकों के समझ प्रकट करने से काफी समय से अपने आपको रोक कर रखा, लेकिन अब वह समय आ गया है, कि प्रत्येक शिष्य, तंत्र ज्ञान की उपयोगिता समझने हुए अपने जीवन में श्रेष्ठता लाए, और जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द प्राप्त करे, मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई शिष्य रात्रि को चिन्ता में लोए और प्रातः उठाने पर पुनः उसे विभिन्न प्रकार की चिन्ताएँ सताने लगे, और उसका पूरा जीवन मध्यम में ही बीत जाए।

भैरुष्टा-तंत्र व्यञ्य

भैरुष्टा-तंत्र ऐसी विशेष शक्तियों के स्वरूप की साधना है, जो कि पूर्ण विधि-विधान सहित, साधक द्वारा साधना करने पर खुद होती है, और साधक जिस समय अपने विशेष कार्य के लिए निस भैरुष्टा शक्ति की विशेष साधना नहीं होती है, वह उसमें समाहित होकर उसका कार्य पूर्ण कर देती है, अलग-अलग प्रकार के कार्यों के लिए अलग-

अलग शक्तियों का उपयोग आवश्यक है, और यही भैरुष्टा

तंत्र की विशेषता भी है, भैरुष्टा की विशेष शक्तियां-

कामेश्वरी, महाविद्येश्वरी, भग्मालिनी, नित्य-किलनना, वत्रिवासिनी, शिववृत्ती, त्वारिता, कुलसुन्दरी, नित्या, नीलपताकीनी, विजया, सर्वमंगला ज्वालामालिनी विचित्रा हैं।

इस प्रकार ये चौदह शक्तियां, भैरुष्टा शक्तियां कही जाती हैं, इनमें से प्रत्येक शक्ति का कार्य, साधना, प्रभाव मंत्र, अलग-अलग है, ये प्रचाण शक्तियां नियमित पूर्ण साधना करने से ही साधक के वश में हो जाती है, फिर साधक रूप शक्तिपूर्ज बन जाता है।

भैरुष्टा शक्तियों की साधना के लिए यह आवश्यक है, कि साधक इनकी साधना बिना किसी को बताये करें, किसी भी रूप में मजाक में लेते हुए अथवा केवल आजमाने

शक्ति स्वीकृतरूपा होती है, और निरन्तर साधना से इसे वश में रखा जा सकता है, यह बात विशेष रूप से द्यान रखने योग्य है, जब भी कोई साधक, साधना में निश्चिन्त हो जाता है, और यह मान लेता है कि एक बार सिद्ध हो जाने के पश्चात वह इस शक्ति का कभी भी उपयोग कर लेता तो वह भूल करता है।

यहाँ भैरुष्टा तंत्र की दो विशेष शक्तियों-कामेश्वरी एवं महाविद्येश्वरी, की साधनाओं के स्वरूप को ही लगाए किसा जाएगा, दोनों का पूजा विधान अलग-अलग है।

साधना विधान

जब व्यक्ति मानसिक रूप से निराश हो जाए, उसकी इच्छाएँ पूरी नहीं हो रही हों, उसके मन में निराशा की भावना निरंतर बढ़ती जाए, और अपने व्यक्तित्व में हीनता की भावना अनुभव करे, तो उसे भैरुष्टा कामेश्वरी साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

किसी विशेष कार्य को चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, उसे पूरा करना हो, अथवा मन में कोई नहीं इच्छा बन रही हो, और उसे पूरा करने का उपाय नहीं सूझ रहा हो, तो इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए।

साधना समय

कामेश्वरी साधना कृष्ण पक्ष में ही सम्पन्न की जा सकती है, और यह पूर्णतः रात्रि साधना है, कृष्ण पक्ष की किसी भी रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, यदि उस दिन रविवार या मंगलवार हो, तो और भी अधिक उत्तम रहता है।

साधना सामग्री

इस साधना में विशेष रूप से तीन सामग्री मंत्रसिद्ध भैरुष्टा चैतन्य कामेश्वरी गुटिका', '११ इच्छापूर्ति कामबीज' एवं 'कामेश्वरी सिद्धिफल' आवश्यक है, इस साधना में किसी भी प्रकार की माला की आवश्यकता नहीं है।

साधना-क्रम

कृष्ण पक्ष रविवार अथवा मंगलवार रात्रि को साधक



१० बजे के पश्चात यह विशेष साधना सम्पन्न करें, अपर लिखी सामग्री के अलावा जल, गाय का दूध, पूष्प, कुकुम से रंगे चावल, के अलावा अवश्यक आवश्यक है, अदरक का इस पूजन में विशेष महत्व है।

इस साधना में साधक को विशेष दिशा की ओर सुन कर, अपने सामने एक साफ पात्र में काजल की कालिख लगा कर बीचीं लाल डोरा रख कर उस पर कामेश्वरी गुटिका स्थापित करें, उसके सामने पात्र के भीतर ही कामेश्वरी सिद्धिकल सफेद ढोरे में बांध कर, अर्थात् सफेद ढागा इस विशेष फल पर लपेट कर स्थापित करें, अपने सामने केवल धूप अथवा झगड़वनी ही जलाएं, दीपक एक अलग कोने में अपने पीछे स्थापित कर जलाएं, दीपक की ओर पूजन के समय बार-बार देखना नहीं है, इस लिए इनना तेल दीपक में अवश्य भर दें कि वह पूरे साधना

ब्लू स: सी:: कली ऐ॥

यह बीज मंत्र अत्यन्त प्रचण्ड शक्तिशुल्क मंत्र है, और इसका जप शुद्ध रूप से, पूर्ण साधानी से करना आवश्यक है, अपने बाएं हाथ में थोड़े से रंगे हुए चावल ले, उस पर एक कामबीज रखें और दाएं हाथ में चम्मच से जल लें तथा मंत्र का उच्चारण करें, मंत्र जप के पश्चात् निस कार्य को पूर्ण करना है चाहे वह कोई विशेष इच्छा हो, शनु निवारण हो अथवा वशीकरण- उस कार्य का नाम लेकर स्वाहा बोलें, और एक अलग पात्र में छोड़ दें, तथा दूसरे पात्र में चावल और कामबीज छोड़ दें।

इस प्रकार यह प्रयोग १०१ बार उसी स्थान पर बैठ कर सम्पन्न करना है, साधना के समय अपना ध्यान पूरी तरह ये केन्द्रित रखें, तथा किसी प्रकार का व्यवधान न होने पाए, पूरे मंत्र जप के पश्चात् कामेश्वरी गुटिका तथा

समय के अन्तर्वाले रहे।

साधक व कल्पना जल, रंग की धोती पहने, इसके अलावा कोई अन्य वस्त्र नहीं, सामने साथमें एक पात्र भवता लोटे में शुद्ध जल रखे और उसमें गाय का कच्चा दूध तथा अदरक डाल दें, एक दूसरा पात्र भी सामने रखें, और ११ कामबीज अलग लाल कपड़े में रखें।

सर्वप्रथम कामेश्वरी का ध्यान करते हुए, शक्ति को अपने अन्दर समाहित करने की इच्छा करने हुए, गुटिका पर लाल रंग के किसी भी प्रकार के पृष्ठ बाएं हाथ से चढ़ाए।

अब कामेश्वरी मंत्र का प्रयोग विशेष विधि से करना आवश्यक है, और यह बीज मंत्र योहा कठिन है, इस कारण साधक अपने सामने काजल पर ढासे बड़े-बड़े जक्करों में लिख कर रखें, जिससे कि कम प्रकाश में भी भली प्राप्ति पड़ सके।

कामेश्वरी बीज मंत्र

॥ ऐं कलीं सौः ऊ नमः कामेश्वरि
इच्छा कामप्रदे सर्वसत्त्ववशोकरि
सर्वजगत्कोभणकरि हुं हुं हुं दीं कलीं

कामेश्वरी
कर सु
सम्पन्न
सकता
हस्तावि
भी इस
पूर्ण
के भीत
परिणि
विद्वात्
अथवा
है-यह
भैरव

जब
है, तो
जिससे
कहने
इतनी
को १
होना
नहीं ह
है।

१०१
विशेष
है, जि
शक्ति
को न
सा
य
की १
धैर
आव
त्वा
१
कर
साम
बन

कामेश्वरी सिंहिफल का एक लाल कपड़े की बैली में बांध कर सुरक्षित स्थान पहुंच रहे हैं, और अभी भी यह प्रयोग सम्पन्न करते समय इसी सामग्री को काम में लिया जा सकता है, इच्छापूर्वि कामबोज संस्कार, तालाबा नदी इत्यादि में आपेक्षित है। यहाँ ही जलपात्र में रखी अदरक भी इसके साथ अपित कर दें।

पूर्ण विधि से की गई इस साधना का प्रभाव पन्द्रह दिन के भीतर-भीतर दिखाई देता है, और विशेष संकट की परिस्थितियों में तो यह साधना अपना तत्कार चमत्कार दिखाती है, इस साधना के सम्बन्ध में (करने के पहले अथवा करने के बाद) किसी प्रकार का प्रचार नहीं करना है-यह गुप्त साधना है।

भैरुण्डा गहाविद्येश्वरी साधना

जब बुद्धि, ज्ञान और परिश्रम का संयोग नहीं बन पाता है, तो कार्य सफल नहीं होते हैं, वाणी ऐसी होनी चाहिए, जिससे कोई बात कहे, वह पूर्ण रूप से प्रभावित हो जाए, कहने पर कार्य होना ही चाहिए, साथ ही बुद्धि में इतनी तीव्रता होनी चाहिए, कि दूसरे के विचारों को, भावों को भांप से, और किस क्षण क्या करना है, ऐसा होना चाहिए, जीवन में उत्तम शरीर-बल के माध्यम से नहीं अपितु बुद्धि-बल के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है।

साधना सामग्री- २१०/-

“गुप्त भैरुण्डा तंत्र” में “महाविद्येश्वरी साधना” का विशेष स्थान है, इसके बीजमंत्र में कुछ ऐसा अक्षर-विन्यास है, कि साधक वैतन्य हो जाता है, उसमें मानसिक-शक्तियों का विकास तीव्र होने लगता है, किसी भी बात को समझने में उसे समय नहीं लगता।

साधना ऋग

यह विशेष साधना कृष्ण पश्च में गुरुबार को ही संपन्न है, उसे अपने आप पर विशेष आन्तिविज्वास आ जाता है, की जा सकती है, इस साधना में विशेष रूप से “भैरुण्डा उसके सोचने-समझने का ढंग ही बदल जाता है, प्रत्येक वैतन्य महाविद्येश्वरी शंख” तथा “दो भौरुण्डा चक्र” कार्य में हर वृष्टिकोण से सोचने-समझने की क्षमता प्राप्त आवश्यक है, यह साधना विशेष सात्त्विक साधना है।

तिथि-विधान

गुरुबार के विन प्रातः, सूर्योदय से पहले ही साधक स्नान कर, श्वेत वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में बीचोबीच जीवन में असफलता का मुंह नहीं देखना पड़ा है।

उसके बीनों और एक-एक चक्र स्थापित करें, इस साधना में विशेष बात यह है, कि साधक अपने और पूजन सामग्री के बाजोट के चारों ओर श्वेत वस्त्र अथवा धोती इस प्रकार बांध दें, जिससे कि एक कष्ट समान बन जाए, सर्वप्रथम सुगन्धित अगरबत्ती और घी का दीपक जला दें, अब एक जलपात्र में धोड़ी के सर तथा बन्दन डाल कर, दाहिने हाथ की ऊंगलियों से भूमि पर तथा सब दिशाओं में छोटा मारे, फिर स्थान ग्रहण करें।

स्थान पर बैठने के पश्चात भैरुण्डा चक्र के बीच में कुंकुम से टीकी लगाए तथा महाशंख के भीतर शृण्गनश चावल तथा लौंग अपित करें, अब शंख के दोनों ओर केसर से ‘ही’ लिखें, और पूजन का संकल्प करते हुए दाएँ हाथ में जल लेकर भूमि पर छोड़ दें।

महाविद्येश्वरी मंत्र

॥ॐ ही के सः नित्यविलवे मवद्रवे स्वाहा ॥

अब अपने हाथ में चालव के दाने लेकर, एक मंत्र का जप कर, एक दिशा में चालव के के दें, इस प्रकार इस मंत्र का जप १०८ बार करना है।

मंत्र जप के पश्चात शंख में अपित किया हुआ आषगंध अपने कठ में, दोनों बीनों पर, मस्तक पर, हृवय स्थान पर, तथा दोनों बाहों पर लगाएं, और दर्दी का ध्यान एवं आशीर्वाद की कामना करते हुए स्थान छोड़।

दूसरे दिन प्रातः शंख को ढटा कर अपने पूजा-स्थान में रख दें, तथा दोनों भैरुण्डा चक्रों को पूजा-स्थान में हो आसन के नीचे जहां मूर्ति, चित्र, कुल-देवता इत्यादि स्थापित किये हुए हों, वहाँ स्थापित कर दें, प्रतिदिन प्रातः पूजन में एक बार मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए।

यह मंत्र साधना एक प्रकार से बुद्धि, ज्ञान का कपाट खोल देती है, और साधक की स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती रहती है, और साधक की स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती रहती है, उसे अपने आप पर विशेष आन्तिविज्वास आ जाता है, उसके सोचने-समझने का ढंग ही बदल जाता है, प्रत्येक कार्य में हर वृष्टिकोण से सोचने-समझने की क्षमता प्राप्त होती है।

ये दोनों भैरुण्डा तंत्र के विशेष प्रयोग हैं, और अब तक जिन साधकों ने यह प्रयोग सम्पन्न किए हैं, उन्हें अपने सामने बाजोट पर श्वेत वस्त्र विठाकर, चावलों की ठेठी बना कर, उस पर भैरुण्डा महा शंख स्थापित करें, और

साधना सामग्री- २३०/-

स्तोत्र शक्ति



अन्नपूर्णा कवचम्

॥ श्री देव्युवाच ॥

कथिताश्चात्र—पूर्णांया, या या विद्या: सुन्दुर्लभाः।
कृपया कथिताः सर्वाः, श्रुताश्चाधि—गता मया॥१
साम्पतं श्रोनुमिच्छामि, कवचं यत पुरोदितम्।
त्रैलोक्य—मङ्गलं नाम, कवचं मन्त्र—विग्रहम्॥२

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु पार्वति ! वक्ष्यामि, सावधानवधारय।
त्रैलोक्य मङ्गलं नाम, कवचं ब्रह्म नाथकम्॥
ब्रह्म विद्या स्वरूपं च, महेश्वर्य—दायकम्।
पठनाद धारणान्मत्यर्त्यैलोकयैश्वर्य भाग् भवेत्॥३
विनियोग : ॐ अस्य त्रैलोक्य रहणरयास्य कवचस्य
ऋषि: शिवः। छन्दो विराट्, अन्न पूर्णा देवता ! सर्व—
सिद्धिदा । धर्मार्थ—काम—मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तिनः।

ऋष्यादि ठ्यास —

श्री शिव — ऋषये नमः शिरसि । विराट् छन्दसे नमः मुखे।
सर्व—सिद्धिदा—अन्न—पूर्णा देवताये नमः हृषि ।
धर्मार्थ—काम—मोक्षेषु विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।
हीं नमो भगवत्यन्ते, माहेश्वरि — पदं ततः।
अन्न—पूर्णे ततः स्वाहा, चैषा सम दशाक्षरी ।



पातु मामन्न-पूर्णा सा, या ख्याता भुवन-त्रये ॥१
 विमाया प्रणवादीषा, तथा सम दशाक्षरी ।
 पात्वन्नपूर्णा सवाङ्गि, रत्न कुम्भाश्र पातवा ॥२
 श्री बीजाद्या तथैवेषा, दि-रन्धाणा तथा सुखम् ।
 प्रणवाद्या भ्रवी पातु, कण्ठं वाग्-बीज पूर्विका ॥३
 काम बीजादिका चैषा, हवयं तु महेश्वरी ।
 तारं श्रीं हीं च नमोऽन्ते, भगवती-पदं ततः ॥४
 माहेश्वरी पदं चात्र-पूर्णे स्वाहेति पातु मे ।
 नाभिमेकोन- विशर्णा, पायान् माहेश्वरी सदा ॥५
 तारं माया रमा कामः, षोडशाणास्ततः परम् ।
 शिरः स्था सर्वदा पातु, विशत्यर्णात्मिका परा ॥६
 करी पादी सदा पातु, रमा कामो धुवस्तथा ।
 ध्वजं च सर्वदा पातु, विशत्यर्णात्मिका च या ॥७
 अन्न पूर्णा महा-विद्या, हीं पातु भुवनेश्वरी ।
 शिवः श्रीं हीं तथा कलीं च, त्रिपुटा पातु मे गुदं ॥८
 षट्-दीर्घ भाजा बीजेन, षडङ्गानि पुनन्तु माम् ।
 करी पादी सदा पातु, रमा कामो धुवस्तथा ॥९
 इन्द्रो मां पातु पूर्वं च, ब्रह्म कोणोऽनलोऽवतु ।
 यमो मां दक्षिणे पातु, नैऋत्यां लिर्क्षितिस्तथा ॥१०
 पर्विचमे वरणः पातु, वायव्यां पवनोऽवतुस्तथा ।
 कुबेरश्चोत्तरे पातु, मामैशान्यां शिशोऽवतु ॥११
 ऊर्ध्वाधिः सततं पातु, ब्रह्माऽनन्तो यथा क्रमात् ।
 वज्ञाद्यायुधानि पान्तु, दश-दिक्षु यथा-क्रमात् ॥१२

॥ फलशूति ॥

इति ते कथितं पुण्यं, त्रैलोक्य-रक्षणं परम् ।
 यद् धत्वा पठनाद् देवा:, सर्वेष्वर्थमवाप्नुयुः ॥१
 ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, धारणात् पठनात् धृतः ।
 सृजतयवतिहन्त्येव, कल्पे पृथक् पृथक् ॥२
 पृष्ठांजलयष्टकं देवये, मूलेनेव समर्पयेत् ।
 युगायुत-कृतायास्तु, पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३
 कवचस्यास्य पठनात्, पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
 वाणी वक्त्रे वसेत् तस्य, सत्यं सत्यं न संशयः ॥४
 अष्टोत्तर-शतं चारुय, पुरश्चर्चर्या-विधिः समृतः ।
 भूजे विलिख्य गुटिकां, स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ॥५
 कण्ठे वा दक्षिणे बाही, सोऽपि पुण्य-वतां वरः ।
 ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि, तद्-गात्रं प्राप्य पार्वति ।
 मालयानि कुसुमान्येव, सुखदानि भवन्ति हि ॥६

आर्थ

श्रीदेवी ने कहा— आपने अन्नपूर्णा देवी को 'अनि-कुलम' जिन जिन विद्याओं (मन्त्रों) को कृपा कर बदला है, उन सबको मैंने सुना और समझ लिया॥५ अब मैं पूर्वी कथित मन्त्र मय 'त्रिलोकयमङ्गल' नामक 'कवच' को सुननी चाहती हूँ॥२

इत्यवर बोले— हे पार्वति ! 'त्रिलोकय मङ्गल' नामक ब्रह्म-विद्या-रूप 'कवच' को कहूँगा, जो महान् ऐश्वर्य को बनेबाला है। सायदान हीकर सुनो। इस कवच को पढ़ने और धारण करने से मनुष्य तीनों लोकों में वैधत का अधिकारी होता है॥३

विनियोग— इस त्रिलोकय ग्रन्थ कवच के क्रिया 'शिव' है, उन्नद 'विश्वट' देवता, 'सर्व-सिद्धिदा' अन्नपूर्णा है, और इसका विनियोग 'धर्मार्थ-काम-मोक्ष' के उद्देश्य से किया जाता है।

ऋग्यादि न्याय— शिर में श्रीशिव-ऋषि की नमस्कार, मुख में विराट उन्नद की नमस्कार, हृदय में सर्व-सिद्धिदा अन्नपूर्णा देवता की नमस्कार, समस्त शरीर में धर्मार्थ-काम-मोक्ष में विनियोग की नमस्कार।

'ही नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' यह १५ अक्षरों वाली अन्नपूर्णा है जो तीनों भूवनों में विघ्न्यात है। वे मेरी रक्षा करें॥४

उस मन्त्र में मात्या बोन (ही) को हटाकर प्रणव (ॐ) को जोड़ने से भी २७ अक्षरों की अन्नपूर्णा होती है— 'ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा'। रत्न कुम एवं अन्नपात्र का बान करने वाली ये अन्नपूर्णा मेरे सभी अङ्गों की रक्षा करें॥२

'श्री ही नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा'— यह १८ अक्षरों वाली देवी मेरे मुख की ओर 'ॐ ही नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' ये १८ अक्षरोंवाली देवी मेरे दोनों भौंहों की, 'ऐ ही नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' ये १८ अक्षरोंवाली देवी मेरे कण्ठ की॥३

'ॐ श्री ही नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' ये १९ अक्षरोंवाली माहेश्वरी मेरी नाभि की रक्षा करें॥४

'ॐ ही श्री कल्पी नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' ये २० अक्षरोंवाली माहेश्वरी अन्नपूर्णा मेरे शिर में स्थित रहकर सदा रक्षा करें॥५

'श्री कल्पी ऊं ऐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' ये २० अक्षरोंवाली देवी मेरे दोनों हाथों और

दोनों पैरों की सदा रक्षा करें॥६

'ही भूवनेश्वरी' महा-विद्या अन्नपूर्णा मेरी रक्षा करें। 'ही ही ही कल्पी' ये ४ वर्ण मयी विपुटा मेरे गुद्धा की रक्षा करें॥७

अन्नपूर्णा के 'बीज' (ही) में दीर्घ छः स्वरों का योग करने से बननेवाले छः अङ्ग मन्त्र (ही ही हूँ ही ही हः) मुझे पवित्र बनाए। 'श्री कल्पी ऊं' सदा मेरे दोनों हाथों, दानों पैरों की रक्षा करें॥८

पूर्व में इन्द्र मेरी रक्षा करें। अग्नि कोण में अग्नि देव रक्षा करें। दक्षिण विश्वा में वायु रक्षा करें, और नेत्रस्त्र कोण में निश्चिति॥९

पश्चिम में वरुण देव रक्षा करें। वायव्य में पवन देव रक्षा करें और उत्तर में कुबेर रक्षा करें। ईशान कोण में शिव मेरी रक्षा करें॥१०

ऊर्ध्व और अधः देश में ब्रह्मा और अनन्त क्रमशः सदा रक्षा करें। दसों विश्वाओं में बज आदि आयुष रक्षा करें॥११

॥फलभूति ॥

हे देवि ! तुमसे त्रिलोकय रक्षा कारक यह श्रेष्ठ कवच मैंने कहा। इस कवच को धारण और पाठ करके देवताओं ने समर्पण प्राप्त किया है॥१२

ब्रह्मा, विष्णु और सूर्य इसी कवच को धारण कर इसके प्रभाव से प्रत्येक कल्प में विश्व की सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं॥१३

हे देवि ! मूल मन्त्र से आठ बार पुष्पांजलि देकर इस कवच का पाठ करे, तो वस सहस्र युगों की पूजा का फल मिलता है॥१४

चंचलता छोड़कर लक्ष्मी पुत्र-पौत्रादि के समय तक उसके घर में स्थिर रहती है। सरस्वती उसके मुख में सदा विराजती है, यह सर्वथा सत्य है, इसमें कोई सन्देह नहीं॥१५

इस कवच का पुरश्चरण १०८ बार पाठ करने से सम्पन्न होता है। इस प्रकार पुरश्चरण करने के बाद कवच को धारण करना चाहिए। भौज पत्र पर कवच को लिखकर गुलिका बनाए और उसे स्वर्ण जटित कराकर कण्ठ या बाईं भूजा में धारण करे तो उसे सब प्रकार की तपस्या का फल मिलता है॥१६

हे पार्वति ! उसके शरीर पर ब्रह्मास्त्र आदि शस्त्र लगते ही पृष्ठमाला के समान हो जाते हैं, वसमें सन्देह नहीं है॥१७



निः शुल्क उपहार

सौभाग्य सिद्धि यंत्र

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मनुष्य जब से अपना होश सम्भालता है तब से जीवन के आण्डिरी दम तक प्रयत्नसरत रहता है, किन्तु इसके बावजूद भी सभी मनुष्य इसमें सफल नहीं हो पाते हैं। इसमें कोई न कोई दुर्भाग्य की रेखा गत जन्मों की होती है, या इस जन्म के कुछ ऐसे कर्म दोष होते हैं जिनके कारण वह मनुष्य सफल नहीं हो पाता। उन कर्म दोषों को काटने के लिए व्यक्ति जाने अनजाने प्रयास करता है, फिर भी उनके मूल रहस्य को न जान पाने के कारण इस कार्य में भी वह पूर्णतः सफल नहीं हो पाता। इसके लिए कुछ ऐसी विधि है जिसके माध्यम से दुर्भाग्य की रेखा को मिटा कर सौभाग्य में बदलकर जीवन को श्रेष्ठतम बनाया जा सकता है। उन विधियों में सौभाग्य सिद्धि यंत्र का धर में स्थापन भी श्रेयस्कर माना गया है। इस यंत्र के स्थापन के कुछ दिनों के बाद ही जीवन में नया परिवर्तन देखा जाता है। इसी उद्देश्य को लेकर यूज गुरुदेव के द्वारा इस यंत्र का विधिवत निर्माण किया गया है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'झानदान'

जान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंडिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ जान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक जान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संतान पोस्ट कार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि 'मैं अपने एक परिचित को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाना चाहता हूँ एवं २० पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप नि. शुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित सौभाग्य सिद्धि यंत्र' ३३०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय १०/-) की बी. पी. पी. से मिजदा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुटा लूंगा। बी. पी. पी. छठने के बाद मुझे १० पत्रिकाएं रनिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें एवं मेरे मित्र को एक वर्ष तक पत्रिका भेजते रहें। आपका पत्र आपे पर हम ३००/- + डाक व्यय १०/- = ३१०/- की बी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित सौभाग्य सिद्धि यंत्र' मिजदा दें, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप ले प्राप्त हो सके। आपको बीम पत्रिका भेजकर आपके मित्र को सदस्य बना दिया जायेगा।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

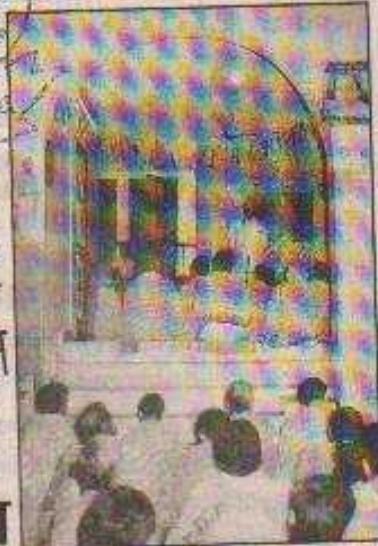
फोन - 0291 - 432209, 433623 टेलीफ़ोन - 0291 - 432010

* 'नवम्बर' 2002 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '79' 49



गुरुद्वारा दिल्ली

जिस भूमि पर ऐक बैंगन प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध कैवल्य दिव्य भूमि



पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं डिजिटों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवरों पर फिल्मी 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्णविधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती है, जो कि उस दिन शाम ६ से ८ बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शनिवार 28-12-2002

लक्ष्मी को उसकी पृता या आसधना कर प्राप्त नहीं किया जा सकता लक्ष्मी तो पुस्तकार्थ के लिए ही सामूहिक के पास आ सकती है। यदि लक्ष्मी का वशीकरण कर लिया जाए, तो वह साधक को निहृ छोड़कर उसके भौतिक जीवन को संवारने को बाध्य हो जानी है। यह ऐसा ही सफल प्रयोग है जिसके द्वारा शीघ्र अनिश्चित धन प्राप्त कर संपन्न हुआ जा सकता है। जिस भी साधक ने इस प्रयोग को संपन्न किया उसे सफलता आवश्यक प्राप्त हुई।

शनिवार 29-12-2002 तंत्र वादा शांति ज्ञानामालिनी प्रयोग

इनमें प्रयोगों के बाद भी आज तंत्र के नाम से लोग भव खाते हैं, तो उसके पीछे करण यही है कि लोगों ने इसके उपयोग किए की बजाय निजी स्वयं और लालच के लिए अधिक किया है। आज कल मात्र और शहरों में ऐसे अनेक कुह एवं स्वार्थी तात्त्विक अपने गालों से कुछ लक्ष्य नेकर किसी के अपर घटिया स्तर के टेने टेंटके कर देने हैं, जिससे ऐसे साधे सांत्रांकित वर छस्ता-खेलता जीवन विनाश के क्षार पर आ जाता है। व्यक्ति समझ नहीं पाना कि क्यों अचानक उसके परिवर्त में लोग बीभार घड़ रहे हैं, क्यों उसके बचे कक्षा में खिड़क रहे हैं, क्यों हर जगह उसफलता ही मिल रही है? इन सबके पीछे प्रायः उससे ईर्झा करने वाले किसी शुद्ध द्वारा कलाये गये मृठ आदि तंत्र प्रयोग होते हैं। ज्ञानामालिनी प्रयोग ऐसे सभी प्रयोगों को समाप्त कर साधक के जीवन में आ रही सभी ब्राह्मणों का नाश कर सीधार्थ पथ खोल देता है।

सोमवार 30-12-2002 गणपति कार्य सिद्धि प्रयोग
ब्रह्मलकारी की समस्या आजकल हानी अधिक बढ़ गई है, कि इससे पूरा युवावर्ग ही ग्रस्त है। वर्षों के सधन अध्ययन के बावजूद जब प्रधास के बाद प्रधास करने पर भी प्रतियोगी परीक्षाओं में ऐसे साक्षात्कार परीक्षाओं में सफलता नहीं मिलती तो जीवन में कुपटा आ जाती है।

भगवान् गणपति विष्णु विनाशक है, किसी भी कार्य की असफलता कई कारण होते हैं, ऐसे रात्री विष्णों का नाश भगवान् गणपति की द्वारा साधना द्वारा सम्भव होता है, और गुरु आशीर्वाद से उसे शीघ्र ही मनोरोधित व्यवसाय, नीकरी आदि व्यापार की प्राप्ति होती है गणपति रासाधना जीवन में मंगलकारी एवं अत्यंत अनुकूल सिद्ध होती है। देवताओं में प्रथम आराध्य भगवान् श्री गणेश की इस साधना द्वारा जीवन में पूर्णि की प्राप्ति हो सकती है। साधक सफल एवं समग्र हो जीवन व्यतीत कर सकता है।

इन तीनों विवरों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मिस्री विद्या रचनाओं को (जो पश्चिमा के सदस्य नहीं हैं), मंत्र-तंत्र यत् विज्ञान-पश्चिमा का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधर्म में सम्पन्न होने वाले किसी एक विद्याय में भाग ले सकते हैं। पश्चिमा की सांस्कृतिक वा एक विद्या शुल्क समय 240/- है, परन्तु आपको मात्र समय 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष शब्द फिल्ड, जागी प्रतिष्ठित समझी, विज गुडिका, आदि) आपको निशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पश्चिम सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक शिव के लिए पश्चिमा वार्षिक सदस्यता मात्र कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पश्चिमा सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को जैषि पश्चिमा की इस प्रवन्धन-साधन-शब्दक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनोत्तम पुण्यवादी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रगति ये एक परिवार में साधना कुछ प्राणियों में इश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिन्तन आ प्राप्त है, तो यह आपके जीवन की गफलतों का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो मिशुल्क है और गुण कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की नीतिवार राशि को अर्थ के तराश में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में वीक्षा व साधना का भूत्य

शब्दों में वर्णन आता है, कि मनिर में मन नज़र किया जाए तो भूति उत्तम होता है, उत्तरे भी अधिक गुणवादी होता है यदि नदी के विश्वार वर्ते, उससे भी अधिक स्थूल तट, और उससे भी अधिक पवत में करे, तो और पवत में भी यात्र विश्वालय है किया जाए, तो और भी कई गुण शेष होते हैं, इन व्यवसे भी येह होता है कि साधक शुल्क चाहों में बेकाम साधना सम्पादन करे और यात्रे गुरुदेव अपने आश्रम अवश्य गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बढ़ा सीधा शुल्क कुछ होता ही नहीं।

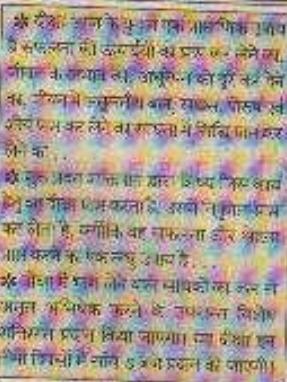
काह ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ विव शक्तियों का वस्त स्वरूप रहता है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूख्य रूप से अश्रु व्यापीर त्रिनिपल उपने धाम में अवस्थित होते हुए प्रत्येक गतिविधि का सदगम लक्ष में विश्वालय करने ही रहते हैं। इन्हिन यदि विश्वालय में पद्मब वर शुल्क से साधना, मन एवं दीक्षा ग्राह करता है और गुण चरणों का स्वार्थी कर उनकी आज्ञा से साधना प्राप्तम करता है, तो उनके लीभाल से देवगण भी इश्वर जाते हैं।

तीर्थ स्थल प्रयोगत है पर विष्यु उद्घाटन-साधक के लिए भी नांदों ने भी यात्र तार्थ शूलधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे निवास स्थान पर गुण चरणों में उपस्थित होकर शुल्क सुख से मन साप्त करने की छद्या ही साधक में तब उपत्ति होती है, जब उसके स्थल में जाग्रत होते हैं। इसी तरह को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम तीन विवरों में नान विवरों

गोजना केवल इन ३ विवरों के लिये - 28-29-30 विवरम्

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x3=Rs.1200/- नमाकर के या उपरोक्त राशि का नैक टाप्ट मंत्र-तंत्र-यत् विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के लाक परे लिखकर उपहार स्वरूप ये वीक्षा आप निशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि वीक्षा जाते द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित विधियों के पूर्व ही अपना कोटों एवं पाच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का द्वापर मंत्र-तंत्र-यत् विज्ञान के नाम से बनाकर विज्ञी कायविलय के चले यह भैंजे आपका फोटो पांच व्यक्तियों के नाम परे एवं द्वाषट द्वारा उपरोक्त विधि से पूर्व ही प्राप्त से जानी वाचिक पत्र विलम्ब से विलम्बे पर वीक्षा स्थापन न हो सकेंगे। यदि राशि मनीजाऊर से भेजना चाहें तो कोटों एवं मनीजाऊर बांधुपुर कार्यालय भेजें।



शक्तिपात्र युक्त वीक्षाएं

कमला

महाविद्या दीक्षा

यह अश्चर्य ही है कि कमला महाविद्या के नाम से तो सभी साधक परिचित होते हैं, परंतु कमला महाविद्या की शक्ति से साधक

प्रायः अनभिज्ञ ही हैं, और इसीलिए वे अन्य महाविद्या साधनाएं तो सम्पन्न करते हैं, परंतु उनकी साधना की ओर ध्यान नहीं देते।

सही अर्थों में कहा जाए तो कमला आवि शक्ति का वह स्वरूप है जो जीवन में आश की अधिकारी देवी है। दरिद्रता को जड़ से समाप्त कर धन का अश्रय सोन प्रदान करने में कमला दीक्षा अचूक है। इसके प्रयोग से व्यापार में चतुर्दिक् वृद्धि होती है, बेरोजगार को रोजगार प्राप्त होता है, पदोन्नति होती है।

महालक्ष्मी की साधना तो प्रत्येक व्यक्ति कर ही लेता है, परंतु जो वास्तव में तेज के जानकार होते हैं, वे तो कमला दीक्षा ही लेते हैं, क्योंकि यह अपने आप में महाविद्या है, शक्ति स्वरूप है, जिसके सामने दुष्प्रिय, दरिद्रता टिक ही नहीं सकते।

Any Friday

Tara Mahavidya Sadhana

WEALTH AND RICHES

Just as the Goddess Mother Mahakali is worshipped in Bengal, similarly in the outer parts of Bihar and Bengal the Goddess Mahavidya Tara is worshipped with great devotion and faith.

According to one description that appears in scriptures Tara is but another form of Kali.

Goddess Bhagwati Tara assimilates within her form the resplendence of the sun. It is said nothing is impossible for a true devotee of Tara and if pleased the kind Goddess makes the Sadhak very rich by providing him opportunities by virtue of which he can amass wealth.

Many great Sadhaks have experienced the grace of the Goddess. I myself have met a Sadhak who no sooner expresses his desire receives the desired amount of money from some source or another. But a true Sadhak never misuses his power and puts the acquired wealth to the best possible use.

The text *Brahm-yamal Tantra* highly praises Tara Sadhana. According to it the Sadhak becomes free from all types of fears and the Goddess Lakshmi herself graces his house. The Sadhak becomes powerful like Lord Bheirav and no task in the world remains impossible for him.

Among the great Sadhaks of Tara is Rishi Vashishth. He once tried the Tara Sadhana through the Vedic system but failed. Hence he cursed the Mantra and the Sadhana became ineffective.

The original Mantra of Tara is *Hreem Hreem Hoom*. But later Lord Brahma in order to neutralize

the effect of the curse changed it to *Ayeim Om Hreem Streen Hoom Phat*.

The following Sadhana of Tara is a very special ritual through which the Sadhak is able to assimilate the powers of the Goddess in his own form. For this a special verse is first chanted which energises the body and also supplicates to the divine Goddess to present herself in subtle or physical form to bless the Sadhak.

For the Sadhana take a bath and wear fresh clothes. On a wooden seat before yourself place *Tara Yantra*. Next to the Yantra also place an energised picture of *Mahavidya Tara*. Next chant thus with the palms joined together and the eyes fixed on the picture of Goddess Tara.

Pratyaa-leedd-padaappitaanghi-shav-vahrid-ghor-aatahaasaa-para, Kharvaa Neel-vishaal-pingal-jataajuteik-naageir-yutaa. Khadagendi-varakartari-kharpar-bhujaa Hoomkaar-beejod-bhavaa, Jaadyannyasya Kapaalarktu Jagataam Hantyugra-taaraa Swayam

Next offer vermillion, rice grains and flowers on the Yantra and light a ghee lamp. Thereafter chant 21 rounds of the following Mantra with coral rosary.

Ayeim Om Hreem Streen Hoom Phat.

After Sadhana place the Yantra and rosary in your safe where you keep your valuables.

Sadhana Articles - 300/-

NO MORE DISEASES!

With so many problems there in the society and with the environment getting more and more polluted each day it is nothing surprising that man is today afflicted by so many ailments both mental and physical. What more a majority of these ailments do not have any permanent cure. Modern medicine sure can suppress the problem for some time but later the symptoms return. Also continuous use of medicines leads to new physical problems and adverse reactions.

If we look into the past we would find that the people then were more healthy. They lived to a ripe old age full of vigor and vim. But today hardly has one crossed the age of 45 then one starts to feel tired and energyless. By the age of 60 a person is drained of all energy and enthusiasm. After that life just becomes a long wait for death.

Youth today means just the period from 20 to 30. On the other hand our ancestors used to live to an age of 100 and that too with enthusiasm and verve. What then has gone wrong today? Were there no ailments then?

This is not so. Ailments sure were there but they had a different method of curing them. They did not just depend on medicine rather they used the power of Mantras to get rid of even the seemingly incurable diseases. Two sons of Lord Krishna were afflicted by leprosy and the Lord cured them through Mantras.

This wonderful system of cure is as potent as it was then. All one needs is the faith and determination to try the same. Science may not have faith in Mantras but it is a fact that Yogis have metaphorised

old age into resplendent youth through the power of Mantras. One such rare and secret Sadhana is the *Dhanvantri Siddhi Prayog*.

Through this amazing ritual one can get rid of any disease or ailment. Dhanvantri was a great Yogi and Ayurved expert in the ancient times. He was able to cure even so called irremediable ailments through it. One who tries this Sadhana ever remains full of energy and diseases cannot invade his physique.

This three day Sadhana should be started on *Ekadashi* (eleventh day of bright fortnight of lunar calendar). Have food only once daily in these 3 days. Early morning have a bath and wear fresh clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth. On it place a *Dhanvantri Yantra*. Light a ghee lamp and offer flowers and vermilion on the Yantra. Pray to the Guru for success in the Sadhana. On left of the Yantra place *Ashminaa* on a mound of rice grain dyed red with vermilion. Then join both palms and chant thus.

*Satyam Cha Yen Niratam Rogam Vidhootam,
Anveshitam Cha Savidhim Aarogya-masya.
Gooddam Nigoddam Oushadhy-a-roopam,
Dhanvantreem Cha Satatam Prannamaami
Nityam.*

Then with a *Dhanvantri rosary* chant 31 rounds of following Mantra.

*Om Ram Rudraay Rog-naashaay
Dhanvantaryei Phat*

After 3 days put the Yantra, Ashminaa and rosary in a clay pot with some rice grains and then drop the pot in a pond or river.



WORRIED BY FOES?

Enemy does not only mean a foe in human form. Even problems, obstacles, worries, fears and one's evil traits and habits could assume the form of troublesome enemies which could hinder one's progress in life.

Then you could well be harried by real enemies in flesh and blood too who out of hatred and jealousy could be making life hell for you leaving you full of fear, frustration and humility. To live in such conditions is not actual living. One needs to get up and face the challenge. But this does not mean you have to go and throw a gauntlet at your foe or fight him or her. This could end you up in trouble with law.

Sadhanas is a very effective, peaceful way of shielding yourself against the wrong actions of your enemies and renders their attempts to harm you fruitless. Or power of Mantras could just change the attitude of the foe towards you.

But as mentioned earlier problems too are enemies. Whether the aim of your efforts is material gains or spiritual ones sure enough obstacles are bound to pop up. In the spiritual sphere these might be in the form of you past bad Karmas and present evil traits while in the material sphere these could be in form of hindrances on the way to progress.

Whatever the type of enemy there is a Sadhana that proves unfailing. This wonderful and powerful ritual is Mahaakaal Sadhana. The ancient Indian spiritual texts in fact state that through this Sadhana one could even control

one's fate and one's stars. And this is but logical, for once all problems are uprooted from one's life one could achieve the desired level of success in any field of one's choice. Even the great Yogi and Rishi Vishwamitra accomplished Mahaakaal Sadhana to overcome his foes.

In the present times when every person, man or woman, has so many adversaries and challenges to face this Sadhana becomes all the more relevant. Through this ritual one could emerge victorious in even the most adverse situations— even in law suits.

This is a eleven day Sadhana. It should be started on a Monday early morning. Have a bath and wear fresh white clothes. Cover a wooden seat with white cloth. On it place a *Mahaakaal Yantra*. Sit on a white mat facing North. Make a mark of sandalwood paste on Yantra and offer rice grains and flowers. Then light a ghee lamp.

Next write the name of your enemy or enemies or write your problem and pray to Mahaakaal (another form of Lord Shiva) thus—
O Lord Mahaakaal please free me of all enmities and problems.

Then join both palms and meditate on divine form of the Guru. Next with *Mahaakaal rosary* chant eleven rounds of this Mantra.

*Om Kreem Hoom Hreem Hroom
Mahaakaalaay Phat*

Do this for eleven days. After eleven days of Sadhana drop Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana articles – 300/-

STILL UNMARRIED!

No sooner does a girl attain to a marriageable age than parents in India start to look for a good match. Lucky are those who find the right groom without having to run from pillar to post. Most of the times specially in the present times parents and relatives of the girl have to go through a virtual ordeal of sorts in order to get their child married.

Nowadays it is becoming all the more tough due to several reasons. First girls today are better educated and it is but natural for the parents to try and choose a groom who is at least equally qualified. But the high dowry demands of the well educated boys frustrate their wish. Second with so many marriages failing and new brides being tortured after marriage it makes the parents apprehensive.

So it is very important for them to find the right person who would give love and care to their child and not make life hell for her. But in spite of the best of their efforts things do not turn out quite to their satisfaction. Or there could also be hurdles in early marriage due to evil planetary effect in one's natal chart.

Not just girls even boys might find it difficult to find the right life partner. There could be unwanted delays in marriage leading to frustration in life. Whatever be the case, be it delay of marriage due to malefic planets or inability to find the right person there is a Sadhana that remedies all problems related to marriage.

This Sadhana can be tried by a girl or a boy

who wishes to get married. Alternately if he or she is not willing then the parents could accomplish it on their ward's behalf.

This is a wonderful and unfailing ritual which is called *Bhadraa Sheeghra Vivaah Prayog*. Basically it is a Sadhana of Bhagwati Jagdamba, hence when trying the ritual one should supplicate to the Mother Goddess.

This Sadhana should be tried on a **Friday** early in the morning. Have a bath and wear fresh clothes. Cover a wooden seat with fresh flowers preferably rose. Then on the flowers place a **Bhadraa Chakra**, which is energized and consecrated by the Mantras of Bhagwati Jagdamba.

Sit on a worship mat facing North. Light a ghee lamp. Join both palms and pray to the Guru. Next take water in your right palm and speaking out your name (or that of your child) pray to Goddess Jagdamba for early marriage with a good person. Next let the water flow to the ground. Then with a **Bhadras rosary** chant eleven rounds of the following Mantra.

Om Kreem Kleem Vivaah Baadhaa Nivaarnnaay Phat.

After the Sadhana wear the Bhadraa Chakra in a thread on your arm. If your child is not willing to do so then put the Bhadraa Chakra alongwith his or her photograph wrapped in a clean cloth in the worship place. After a month drop the Chakra and rosary in river or pond. Soon you shall have good news.

Sadhana articles - 240/-

19-20 नवांबर 2002

सर्वरिहि सन्यास दिवस, महाराष्ट्र

रायपुर (छत्तीसगढ़)

शिविर स्थल—स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, रायपुर

✿✿✿

1. दिसम्बर-2002

शिविर स्थल : चन्दनपुर्ण होल इमरान
नगर, वारी (ईट) गुजरात

बगलामुखी साधना शिविर

आयोजक : वेन्ड्र पंचान-0260-340249 ○ शशिकान्त
केशाई-0260-423444 ○ श्री पी.जे.पटेल-0260-642403 ○
श्री मोहन भाई पटेल-0260-640439 ○ राजा राम वर्मा-
0731-385908 ○ श्री धोर्म भाई कोन्स्टर्टर-0260-251450 ○ श्री
शक्ति भाई प्रजापति-0260-564044 ○ श्री ईश्वर आर्य-
0260-784848 ○ श्री रमेश पटिल-02631-56980, 53188 ○ श्री
भैश प्रजापति-0632-46738 ○ श्री जयेश भाई पटेल-0260-
254618

✿✿✿

7-8 दिसम्बर-2002

शिविर स्थल : रेलवे इंसिट्युट, साउथ ईस्टन
रेलवे बैंगलुरु, भारत, ग्राहनरिच कोलकाता ४३
(जिकट गूठकाट थाटा), खिदिरपुर

श्री भगवती महाकाळी सिद्धि

साधना शिविर

आयोजक : श्री अमित सिंह-033-3433273, 09830138491
○ श्री विजय शक्ति वीश्वित-033-6584003 ○ श्री एस.के.
सिंह-09830078957 ○ श्री भरत प्रसाद-09830292115 ○
श्री कामश्वर सिंह-033-5857252 ○ श्री सत्यदेव पाण्डे-
09831146998 ○ श्री अखिलेश सिंह-09830220415 ○ श्री
एस.एस. सेन्यावत-034-3536602 ○ श्री रामा कृष्ण-034-
3537037 ○ श्री संजय सिंह-033-6642829 ○ सिद्धाश्रम
साधक परिवार, बोकारो-065-4257362 ○ श्री संजय कुमार
सिंह-0612-262221 ○ श्री प्रदुमन कुमार दास-033-2788931
○ श्री सुब्रत दास-09830262383 ○ श्री सुगत चक्रवर्ती-
09830008483 ○ श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह-033-6270139 ○

राजेन्द्र पाण्डे-033-8775725 ○ श्री वी.वी.वी. अप्पराव-033-
6582833 ○ श्री वाईस मूर्ति-0657-304558 ○ श्री हरदीप
सिंह-0657-439539 ○ श्री पलाश दास-033-3354408 ○
श्री वीष्णवि सार्विका-03752-43493 ○ श्री सच्चिदानन्द सिंह-
033-6780525 ○ श्री राधानन्द रात्म ○ श्री परशुराम राय
○ श्री राजीव कण्ठ पट्टना ○ श्री आनन्द मिश्र ○ श्री
सरोजानन्द झा- ○ श्री वसन्त गोहार्ड आसान ○ श्री
पंचम लाल धाकडे ○ श्री राणा वासु-033-5360380 ○ श्री
गणेश आपा, बंडा नगर-0360-348955 ○ श्री कैलाश प्रसाद
बाहु-036-7439360 ○ श्री एहलीन गोगाई-0374-500491 ○
श्री दीनाराम बर्खासा-0375-230428

✿✿✿

15 दिसम्बर-2002

शिविर स्थल : कोटी टाउन होल-उत्ता, हिंगाचल

श्री लिङ्गमस्ता साधना शिविर

आयोजक : श्री अमरनीत सिंह-01975-25022 ○ श्री सुनील
शर्मा-01975-25377 ○ श्री राजेश डडवाल-01975-27389 ○
श्री प्रदीप राणा-01975-25939 ○ श्री केवरनाथ शर्मा, ○
श्री जीतलाल कालिया ○ श्री दिलबाग ठाकुर ○ श्री
रमेश शर्मा ○ श्री केढी शर्मा-01905-35655 ○ श्री ओम
प्रकाश शर्मा, नंगरोठा, सूरिया-01893-65174 ○ श्री आर.एस.
वधवार, धर्मशाला-01892-46203 ○ श्री शेलेन्ड्र, बिलासपुर-
01978-44500 ○ श्री ज्ञान चन्द्र रत्न, दुमारवी-01975-55283
○ श्री सोहन लाल ○ श्री आर.एस. बिन्द्हास, पालसपुर-
01894-38356

1 जनवरी-2003

निखिल शक्ति तत्त्वाभिषेक मठाटीक्षा

शिविर स्थल : आरोग्यधाम, गुजरात अपार्टमेंट
के पीछे जोन ४/५ पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४
फोन : 7182248, 7029044-45

19 जनवरी-2003

भूतनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : चेतन्य सभाग्रह पवना नगर रस्टन
कॉलोनी रोड दिल्ली गांव, पुणे (महाराष्ट्र)
आयोजक : रिष्णाश्रम साधक परिवार
पिंपरी चिंचवड शहर, पुणे (महाराष्ट्र)

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 23-24 every Month

A.H.W

Postal No. R/WTR/1945/2002
Licence to Post without Pre-Payment
Licence No. RJ/WTR/PN04/2002

माहू : दिल्ली में दीक्षा के लिए विशेष दिनों

पूजा गुरुदेव निम्न लिखित दिनों पर साको मैं मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करें।

इसके साथ निचेरि दिनों पर इहाँ की दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निचेरि दिनों पर यह दीक्षाएँ प्राप्त: 11 बजे से 1 करे के
मध्य तथा सारे 5 बजे से 7:30 बजे के मध्य प्रदान की जाएँगी।

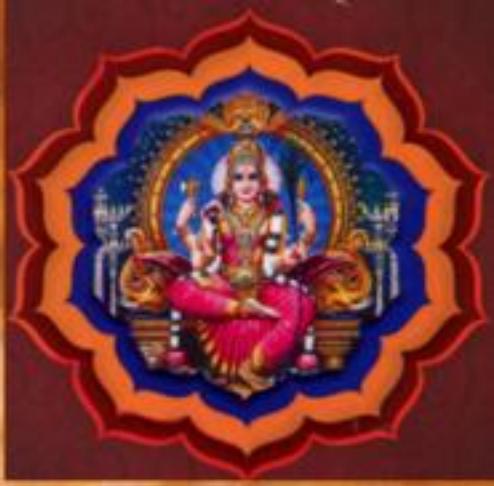
दिनांक
3-4-5 दिसम्बर
स्थान
गुरुदाम (जोधपुर)

दिनांक
28-29-30 दिसम्बर
स्थान
सिल्लाश्रम (दिल्ली)

बंग - 22

अंक - 11

बंग-नाम-योग्य विज्ञाल नं. श्रीगान्तीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जावपुर-342001 श्रीग. फोन: 0291-432203, 433023, टेलीफ़ोन: 0291-432970
विज्ञालगा-306, कोहाट एक्स्प्रेस वीतमार्ग, नई दिल्ली-34, फोन: 011-7162388, टेलीफ़ोन: 011-426700



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

